आधुनिक मैथिली नाटकों
का सौ वर्ष
प्रलेखन एवं विश्लेषण

(संदर्भ: 1905 से 2005 तक प्रकाशित नाटक)

शोधकर्ता : संतोष कुमार

Field – Literature, Sub-field – Maithili

File No. – CCRT/JF-3/53/2015

Email ID -sjha.jha7@gmail.com

Mobile No. – 08506069789

Adress : V.+ P. – Sukki, PS – Khajauli,

District – Madhubani,(Bihar)- 847228

आधुनिक मैथिली नाटकों का सौ वर्ष प्रलेखन एवं विश्लेषण

(संदर्भ: 1905 से 2005 तक प्रकाशित नाटक)

Junior Fellowship- 2013/2014

Name – Santosh Kumar

Field – Literature, Sub-field – Maithili

File No. – CCRT/JF-3/53/2015

Email ID -sjha.jha7@gmail.com

Mobile No. – 08506069789

Adress : V.+ P. – Sukki, PS – Khajauli,

District – Madhubani,(Bihar)- 847228

अनुक्रम

आधुनिक मैथिली नाटकों का आरम्भ

संस्कृत रंगमंच काल जब समाप्ति की ओर था, उसी समय तात्कालिन लोक भाषा मैथिली में नाटक विकसित होने लगा। संस्कृत नाटक सारग्रभित तथा किलिष्टता के कारण लोकरुचि से समाप्त हो रहा था, वहीं सरल सुबोध ढंग से लोगों में वही नाटक अपना रूप बदलकर जन्म ले रहा था। ऐसी स्थिति में नाटक में पहले लोकगीत का समागम हुआ, धीरे-धीरे संवाद भी लोक भाषा में ही मंच पर आने लगे। यह पूर्ण रुपेण नाटक नहीं बल्कि नाट्य रूप बनकर सामने आया। यहीं से लोक नाट्य का प्रारम्भ मिथिला में हुआ है, इसका काल 14वीं शताब्दी है। उसी समय से मिथिला में एक लोक नाट्य परम्परा हुई जो 19वीं तक चलता रहा है। इस नाट्य रूप को कीर्तनिया नाम से पहचान मिली। शोध से पता चलता है कि इस नाट्य रूप में लगभग 20 नाटक प्रकाशित रूप में उपलब्ध है। जिसमें महत्वपूर्ण है :- धूर्तसमागम,पारिजात हरण, गोरक्षा विजय, गौरी स्वयंवर, उषा हरण आदि। कीर्तनिया नाटकों के महत्वपूर्ण नाटककार हुए ज्योतिरेश्वर, उमापति, विद्यापति, गोकुलनन्द, हर्षनाथ झा, शिवनन्दन मिश्र आदि हैं । इन नाटकों में अधिकांश भक्ति परक हैं। अधिकतर नाटकों में कृष्ण के कथा को ही केन्द्रित किया गया है। संस्कृत नाटक के बाद जिस तरह धीरे-धीरे कीर्तनिया नाटक विकसित हुआ वैसे ही कीर्तनिया नाटक के बाद आधुनिक मैथिली नाटक का रूप सामने आया। जिस तरह कीर्तनिया नाटक धार्मिक या किसी पौराणिक पात्रों को लेकर मंचित होता था, वहीं जब समकालीन सामाजिक स्थिति को नाटक में केन्द्रित किया जाने लगा। गायन तथा नृत्य के स्थान पर यथार्थवादी संवाद अपनी पकड़ बढ़ाने लगा तो यहीं से आधुनिक मैथिली नाटकों का जन्म हुआ। मैथिली

नाटक में ऐसे बिषय को लेकर जो पहला नाटक सामने आया वह था 'सुंदर संयोग'। इसके लेखक पं० जीवन झा ने इसे 1905 ई० में सामने लाया। इनके द्वारा चार नाटक लिखे गये, सुंदर संयोग, मैथिली सट्ट्क, नर्मदा सागर सट्ट्क तथा सामवती पुर्नजन्म।

पंडित जीवन झा काशी महाराज प्रभुनारायण सिंह के दरबार में दानाध्यक्ष थे। राज दरबार से संपोषित रहते हुए भी उन्होंने जन-जन में चेतना का दीप प्रज्वलित कर कण-कण में उत्साह फैलाने का दिशा सुदृढ़ किए। इनके समय समाज और साहित्य बौद्धिक उत्तेजना के दौड़ से गुजर रहा था। उसी समय मैथिली समाज में राजनीति, समाजनीति, अर्थनीति, धर्मनीति, संस्कृति, संगीत नाटक एंव चित्रकारी पर वैज्ञानिक प्रभाव के फलस्वरूप सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक चेतना का उदय हुआ, जिसका स्वभाविक प्रभाव इनके नाटक का केंद्र-बिन्दु था।

श्री जीवन झा के नाटक लेखन हेतु जो प्रेरणा-स्त्रोत रहा है वह है : -

1. संस्कृत साहित्य की विशाल नाट्य परंपरा

2.काशी मध्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा हिन्दी नाटक का व्यापक प्रचार

3. पारसी थियेटर कंपनी द्वारा नाटक का प्रचार

4. समकालीन सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति

पं० श्री जीवन झा का प्रार्दुभाव आधुनिक मैथिली नाटक की एक असाधारण घटना है, इन्होंने सर्वप्रथम संस्कृत परंपरा का परित्याग कर विशुद्ध मैथिली भाषा में कथोपकथन का प्रयोग किया। मैथिली नाटक के कथानक एवं शिल्प शैली दोनों

में प्रथम परिवर्तन करनेवाले श्री जीवन झा ही हुए। यही कारण है कि जीवन झा से ही आधुनिक मैथिली नाटक कि शुरुआत माना जाने लगा। आधुनिक मैथिली नाटक के जनक के रूप में श्री जीवन झा को ही स्थापित किया गया है। यह संस्कृत के विद्वान थे, इसीलिए मैथिली नाटक रचना करते समय भी संस्कृत नाट्य संबन्धी लक्षण के परिधि से बाहर नहीं निकल पाए।

आधुनिक मैथिली नाटक पर विचार समयानुसार न करते हुए हम कथानुसार करते हैं। कत्थ के अनुसार आधुनिक मैथिली नाटक को चार भागों में बिभाजित करते हैं : ---

1. पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक

2. एतिहासिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक

3. राजनीतिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक

4. सामाजिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक

भाग-1.

पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक का प्रलेखन एवं विश्लेषण

पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक

पौराणिक कत्थ को लेकर नाटक लिखने की परंपरा मैथिली साहित्य में आदि काल से ही रहा है। उस समय मैथिली मेन जीतने भी नाटक लिखे गए वह उन विद्वानों द्वारा लिखे गए जिनका संस्कृत साहित्य मेँ पूर्णत: निपुण थे। इसीलिए संस्कृत साहित्य मेँ कहे गए बन्धन का मैथिली साहित्य मेँ भी उपयोग किया गया है। प्राचीनकाल के जीतने भी आर्यभाषा हैं, सभी मेँ यह प्रवृति विराजमान है। संस्कृत साहित्य आदर्शोन्मुख विशेष रहा है, इसीलिए इसमें यथार्थवादी चित्रण गौण ही रहा है। मूलत: पौराणिक कत्थ ही केन्द्र-बिन्दु रहा है। इसी कारण नाटक मेँ चरित्र -चित्रण पौराणिक पात्र पर केन्द्रित है। पुराण तथा प्राचीन धर्मग्रंथों मेँ देव, दानव एवं मानव से संबन्धित पौराणिक, ऐतिहासिक, काल्पनिक घटनाओँ को आधार बनाकर रचा गया है। इसतरह के नाटकों का मुख्य उद्देश्य धार्मिक भावना के साथ जन सामान्य मेँ सांस्कृतिक आदर्श की प्रेरणा देना है। मिथिला क्षेत्र मेँ रामकथा या कृष्णकथा को अधिक प्रश्रय मिला है। मैथिली साहित्य भी इस प्रवृति से वंचित नहीं रह सका, इसीलिए पौराणिक क्त्थ को लेकर आधुनिक मैथिली नाटक काल मैं अनेक नाटक लिखा गया।

शोध अधय्यन दौरान जिस लिखित एवं प्रकाशित पौराणिक कत्थ के आधुनिक दस मैथिली नाटकों का प्रलेखन एवं विश्लेषण किया गया है, वह नाटक नीचे वर्णित है : ---

नाटक	लेखक
1. सामवती-पुनर्जन्म	पं० श्री जीवन झा
2. सावित्री-सत्यवान	पं० श्री लालदास
3. सीता-स्वयंवर	पं० श्री आनन्द झा
4. जीमूतवाहन-चरित	पं० श्री त्रिलोकनाथ मिश्र
5. गान्धर्व-विवाह	पं० श्री दामोदर झा
6. दुर्गा-विजय	पं० श्री जीवनाथ झा
7. अवतार	श्री हरिश्चन्द्र झा 'हरीश'
8. आचार्यद्रोण	श्री चन्द्रकान्त झा
9. द्वापरक द्वन्द	श्री श्याम बिहारी दास
10. रुक्मिणी हरण	श्री गोविन्द झा

----

1. “सामवती-पुनर्जन्म” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“सामवती-पुनर्जन्म” नाटक के लेखक पं० श्री जीवन झा हैं। यह नाटक पं० श्री जीवन झा के अमुल्य कृतियों में से एक है। डा० डी० एन० झा के अनुसार “सामवती-पुनर्जन्म” नाटक पं० श्री जीवन झा की सर्वश्रेष्ठ नाटक है। इस नाटक के लेखन काल को लेकर अलग-अलग साहित्य कृति के अधय्यन के दौरान मुझे मतभेद दिखा। इतिहासकार डा० डी० एन० झा (critical history of Maithili literature) में इस नाटक का लेखन काल 1908 ई० लिखा है। इतिहासकार श्री जयकान्त मिश्र एवं श्री बालगोविंद झा (मैथिली साहित्यक इतिहास) में इस नाटक का लेखन काल 1917 ई० लिखा है। पं० गोविंद झा 1900 ई० से लेकर 1950 ई० तक मात्र छ: नाटक चर्चा किये हैं, जिसमें उनहोंने इस नाटक का लेखन काल 1920 ई० लिखा है साथ ही साहित्यकार डा० प्रेम शंकर सिंह (मैथिली नाटकक परिचय, आधुनिक मैथिली नाटक पहिल शताब्दी के आलेख) में भी 1920 ई० लिखा है। डा० डी० एन० झा श्री (मैथिली साहित्यक इतिहास) तथा डा० लेखनाथ मिश्र (मैथिली नाटकक उदभव अओर विकास) में इस नाटक का लेखन काल 1908-1920 ई० लिखा है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1908-1920 तक माना जा सकता है।

“सामवती-पुनर्जन्म” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1920 ई० हुआ है। यह काशीराज सभापंडित झोपाख्य हरिकांत शर्मा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस नाटक को नाटककार नौ अंक में विभाजित किया है। इस नाटक में कुल अठाइस पात्र हैं, जिसमें पुरुष पात्र सोलह एवं स्त्री पात्र बारह हैं।

इस नाटक के कथानक पौराणिक है, जिसका कथा सुमेधा और सामवान को केन्द्र रखकर लिखा गया है। जहाँ अभी तक संस्कृत या प्राकृत भाषा में नाटक लिखा जाता था, वहीं यह नाटक मैथिली भाषा में लिखा गया है। नाटककार ने इस नाटक का लेखन संस्कृत नाट्य लक्षण के अनुसार लिखा है। इस नाटक के कथोपकथन में रस का आभाव नाटकीय नियमानुसार दोषपूर्ण है। नाटक में जगह-जगह हास्य प्रयोग किया गया है, लेकिन इसमें हास्य का प्रयोग कहीं-कहीं निम्नस्तरीय प्रतीत होता है।

"सामवती-पुनर्जन्म" नाटक में नाटककार ने शास्त्रीय परंपरा एवं सामवर्ती युग के विभिन्न नाट्य रूपक का समन्वय किया गया है। इस नाटक में नान्दी, प्रस्तावना, अंक-विधान, भरतवाक्य आदि का समावेश किया गया है, लेकिन विष्कम्भक एवं प्रवेशक की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है, जो लेखकीय त्रुटि को दर्शाता है।

"सामवती-पुनर्जन्म" नाटक के शब्द में विशुद्ध मैथिली भाषा प्रयोग किया गया है, जिससे नाटककार ने नाटक के प्रस्तावना में इस प्रकार स्पष्ट किया है :--

देखि पुतातन कविजन लेख, बूझिय कविता उचित विशेष।
मिथिला भाषा सरल विचाड़ि, पर भाषा सम्मेलन छाड़ि।।
विचरल यज्वा जीवन शर्म, जे जानथि सब कविता मर्म।
बुध सदस्य गुण ग्राही भूप, दृश्य समावत कथाउनुरुप ।।

"सामवती-पुनर्जन्म" नाटक से पहले जो नाटक लिखे गये हैं, उसमें पद्य का प्रयोग किया जाता रहा है। इस नाटक में ऐसा बल्कि लेखक ने उपयोगिता के अनुकूल गद्य एवं पद्य दोनों का प्रयोग किया है। इसमें नये-नये

छन्द, गजल का प्रयोग किया गया है, जिससे स्पष्ट होता है कि सिर्फ संस्कृत नाटक ही नहीं, बल्कि पारसी रंगमंच के नाटक का प्रभाव नाटककार के नाट्य लेखन पर है। इस नाटक में गद्य का प्रयोग स्वभाविक दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। अत: पं० श्री जीवन झा द्वारा नाटक के लेखन में शब्द-संयोजन में पद्य एवं गद्य का उपयोग आधुनिक समयानुसार भी उपयुक्त माना जा सकता है।

पं० श्री जीवन झा लिखित नाटक "सामवती-पुनर्जन्म" में कथानक पौराणिक है, फिर भी इस नाटक में आधुनिक समाजिक चित्रण प्रासंगिकता दर्शाता है। विवाह में फड़क गिनवाने की प्रथा, घटक, पजियार, बिकौआ आदि इन शब्दों का प्रयोग नाटक को आधुनिक समाज से जोड़ता है। इसमें बरबा, सबैया, दोहा, जयकरी, चौपाइ तथा पृथ्वी छंदों का उपयोग नाटककार लेखन में बड़े निपुणता किया है। यह नाटक सारस्वत, वेदमित्र, दुर्वासा, अप्सरा आदि उल्लेख मात्र से ही पौराणिक है, अन्यथा नाटक इन लोगों की चित्रण पौराणिक रूप में नहीं किया गया है। इसमें सारस्वत एवं वेदमुनि पौराणिक मुनि है, लेकिन मुनि के जैसा आचरण नहीं रखकर आधुनिक समाज से जोड़ने का प्रयास किया गया है। जैसे मुनि के समय घटक का आना, पजियार का उल्लेख एवं विवाह में फड़क गिनवाने की प्रथा आदि का प्रयोग कर नाटककार ने नाटक को आधुनिक बनाने का प्रयास किया है। अत: इन तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि यह नाटक लेखन की प्रासंगिकता को दर्शाता है।

"सामवती-पुनर्जन्म" नाटक से संबन्धिततथ्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कथानक पौराणिक रहते हुए भी नाटककार द्वारा नाटक को आधुनिक समाजिक स्थिति से जोड़ने का प्रयास नाटक को आधुनिक नाटक के समकालीनता

को सिद्ध करता है। अत: नाटककार द्वारा नाटक लेखन का उद्देश्य मुख्यत: मैथिली और मिथिला के प्रति स्नेह एवं आधुनिकतावादी विचारधारा दर्शाना माना जा सकता है।

नाटककार ने नाटक "सामवती-पुनर्जन्म" के चरित्र-चित्रण में पौराणिक पात्र के साथ आधुनिक पात्र को कल्पित किया है। जैसे सामवान एवं सुमेधा पौराणिक पात्र है, लेकिन इनका मित्र बन्धुजीव नाटककार द्वारा कल्पित पात्र लक्षण को दर्शाता है। बन्धुजीव के माँ की आचरण आधुनिक समाज के बदमास सास की चित्र उपस्थित करती है। फिर सारस्वत मुनि द्वारा पुछे जाने पर पुनर्विवाह की चर्चा करना आधुनिक सास की सजीव चित्र दृष्टिगोचर होता है जो निम्न श्रेणी के परिवार में बेटा के विवाह हो जाने के फलस्वरूप दहेज ज्यादा न मिलने पर उसको दुसरा विवाह करने के लिए तैयार करना आधुनिक सामाजिक चरित्र-चित्रण को दर्शाता है। इसी तरह अन्य विषय को रखकर आधुनिक समाज का चरित्र-चित्रण किया गया है, जिससे दर्शकों को यथार्थता की अनुभूति चरित्र के समीप लाता है। अत: नाटककार द्वारा नाटक में चरित्र-चित्रण आधुनिक नाटक के अनुकूल तथ्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है।

"सामवती-पुनर्जन्म" नाटक का दृश्य-संयोजन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रन्थ का अनुकरण किया गया है। नाटककार ने नाटक के दृश्य लेखन में संवाद और चरित्र-चित्रण में सम-समायिकता का समावेश बड़े निपुणता से किया है। इस नाटक में एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध स्पष्टत: प्रदर्शित किया गया है, अत: नाटक का दृश्य संयोजन भी आधुनिक नाट्य लेखन के अनुकूल लिखा गया माना जा सकता है।

पं० जीवन झा नें अपनें द्वारा लिखित नाटक "सामवती-पुनर्जन्म" में नाटक का आरंभ एवं समापन संस्कृत नाटक लक्षण ग्रन्थ का सस्वर प्रतिपालन किया। जैसे, संस्कृत लक्षण ग्रन्थ के अनुसार जिस तरह नाटक के आरंभ में प्रस्तावना, नान्दी, सूत्रधार आदि का प्रयोग किया जाता है, बिल्कुल उसी तरह नाटककार ने संस्कृत शब्दों के जगह मैथिली शब्दों को रखकर प्रस्तावना, नान्दी, सूत्रधार आदि का प्रयोग कर नाटक का आरंभ किया है। नाटक के समापन संस्कृत नाटक के अनुसार भरतवाक्य से किया जाता है, जिसका नाटककार ने नाटक में पुर्णरूपेण प्रतिपालन किया है। अत: संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रन्थ के अनुसार नाटक का आरंभ और समापन किया गया है।

अंततः पौराणिक कत्थ के आधुनिक नाटक सामवती-पुनर्जन्म में नाटककार पं० श्री जीवन झा ने अपनें लेखन कौशलता का परिचय देते हुए बड़े सहज ढंग से नाटक में परिपुर्णता देने का प्रयास किया गया है। नाटककार के द्वारा नाटक लेखन में यह प्रयास आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्य के गौरव को और भी गौरवान्वित किया है, अत: श्री जीवन झा का यह रचना पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक में अपनी ऐतिहासिकता को सिद्ध करता है, जो वर्षों तक स्मरणीय रहेगा।

----

2. “सावित्री-सत्यवान” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“सावित्री-सत्यवान” नाटक गौरवपुर्ण अतीत का गौरवशाली पुरुष महाकवि पं० श्री लालदास द्वारा लिखा गया है। इनका जन्म मधुबनी जिला अंतर्गत खड़ौआ गाँव में हुआ था। यह संस्कृत, हिन्दी एवं मैथिली भाषा के बहुत बड़े विद्वान थे। यह मैथिली भाषा के जनक के रुप में विख्यात महाकवि श्री चन्दा झा के समकक्ष एवं समकालीन प्रतीत होते हैं। इस नाटक के रचनाकाल मुलत: उपलब्ध नहीं है, तथापि नाटक का कुछ अंश 1909 ई० में “मिथिला मिहिर” में प्रकाशित किया गया है। अन्य मैथिली साहित्यक ग्रंथ “मैथिली साहित्य का इतिहास” लेखक डॉ० डी० एन० झा , लेखक डॉ० बालगोविन्द झा, “मैथिली नाटक का उदभव और विकास” लेखक डॉ० लेखनाथ मिश्र में 1908-9 ई० मनाते है। वहीं “critical history of Maithili literature” में 1908 ई० मनाते है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1908 से 1909 ई० माना जा सकता है।

नाटक प्रकाशन “सावित्री-सत्यवान” का सम्पूर्ण रुपेण मैथिली अकादमी द्वारा 1979 ई० में किया गया। नाटककार ने इस नाटक को दो भाग पुर्वाध्र और उतरार्ध एवं दस अंगो में विभाजित किया है। इसमे 13 पुरुष और 10 स्त्री हैं। यह पौराणिक कत्थ का आधुनिक मैथिली नाटक है, जिसमें कत्थ पौराणिक है। इस नाटक की कथानक सावित्री और सत्यवान को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। कथानक में दोनों पात्र की प्रधानता इस रुप से जाना जा सकता है कि इस नाटक का नाम ही “सावित्री-सत्यवान” रखा गया है। इस नाटक का आरंभ संस्कृत में लिखे गए मंगलश्लोक से होता है। उसके बाद सूत्रधार द्वारा मंगलगीत गाया

जाता है, उसके बाद प्रस्तावना और प्रस्तावना के बाद सूत्रधार द्वारा नाटक का आरंभ की उद्घोषणा के बाद नाटक आरंभ होता है। प्रस्तावना के मध्य नटी सूत्रधार द्वारा मिथिला मध्य वटसवित्री व्रत का कैसे प्रचार हुआ और उसका महत्व किया है, उस पर भी नाटककार ने चर्चा किया है। इस नाटक में अधिकांश संस्कृतनिष्ठ भाषा होते हुए भी जगह-जगह प्रचलित मैथिली भाषा का प्रयोग किया गया है। नाटककार ने नाटक में इतने बड़े-बड़े कथोपकथन लिखा है, जो रंगमंचीय दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं माना जाता है। नाटक में पात्रों की संख्या अधिक है, जो रंगमंच दृष्टि से उपयुक्त नहीं है। नाटककार ने नाटक लेखन में वर्षा ऋतु एवं शरद ऋतु का वर्णन मन को लुभाने वाली है। अत: नाटककार ने नाटक लेखन में संस्कृत नाटक के लेखन सिद्धियांत को सस्वर प्रतिपालन किया है।

"सावित्री-सत्यवान" नाटक में नाट्य दसरूपक का प्रयोग बड़े निपुणता से किया गाया है। नाटक में नान्दी, अंक-विधान, चरित्र-चित्रण, भरतवाक्य आदि नाट्य दसरुपक के अनुकूल लिखा गया है। अत: नाटककार द्वारा नाट्य दसरुपक नियम सस्वर प्रतिपालन किया गया है।

"सावित्री-सत्यवान" नाटक में शब्द-संयोजन नाटककार ने मैथिली एवं संस्कृत दोनों भाषा का प्रयोग किया है। इस नाटक की विशेषता यह है कि इसमें उच्चस्तरीय गद्य का प्रयोग अत्यधिक मात्रा में किया गया है। नाटककार ने नाटक में चौबीस (24) गीतों का समावेश किया है,जिसमें गीत गोविन्द से लिया गया गीत लिया गया है। जैसे---

निभृत्त निकुंजगृहं गतयानिशि रहसि निलीय वसन्तं।

चकित विलोकित सकल दिशा रतिभसभरेण हसन्तं।

इस नाटक में अधिकतम गीत नायक और नायिका के सौन्दर्य मिलन और विरह को विषय रखकर लिखा गया है। नीचे नायिका के सौन्दर्य वर्णन रचित गीत का कुछ अंश प्रस्तुत किया गया है, जिसको विद्यापति जी के गीत का छायानुवाद कहा जाय तो इसमें किसी तरह का आपत्ति नहीं माना जाना चाहिए। गीत ---

मन पड़ अपरूपे रूपे।

नील वसन धन में तन सुन्दर देखल बिजुलि स्वरूपे।।

अमल कमल दुहु चरण विराजित गजराजक गति धीरे।

कदलि थम्ब पर मृगपति राजित दुइ कंचन गिरि तीरे।।

कंठ कपोत नयन खंजन बिच शुक बिम्बाफल लोभे।

दामिड़ दसन हसन चपला सन भौंह मदन धनु शोभे।।

मुख छवि पूरन चन्द मनोहर मृग मद तिलक सुअंके।

कतय गेलिह कह ताकब तनिकाँ बुझि पड़ विधि भेल बंके।।

अत: नाटक के शब्द-संयोजन में गद्य और पद्य का प्रयोग संस्कृत नाटक का अनुकरण किया गया है।

मिथिलांचल में "सावित्री-सत्यवान" की कथा कन्या की विवाह के बाद प्रथम वर्ष की पहली ज्येष्ठ अमावस्या के दिन वट-वृक्ष पूजन के समय कहने एवं सुनने

की प्राचीन परंपरा है। लोगों का मानना है कि यह व्रत धारण करने से विवाहिता को सदासुहागन एवं सौभाग्यशाली होने की कामना पूर्ण होती है। इस लोक प्रचलित कथा को आधार बनाकर नाटक का लेखन महाकवि श्री लालदास की बहुआयामी अभिव्यक्तिक कौशल एवं सशक्त लेखनी की परिचय देती है। इस नाटक में नाटककार ने आधुनिक समाज परिपेक्ष्य लाने हेतु आधुनिक मैथिली भाषा, काल्पनिक चरित्र आदि का प्रयोग नाटक की प्रासंगिकता दर्शाता है। अत: इस नाटक को नाटककार द्वारा प्रासंगिक बनाने प्रयास अंशत: प्रासंगिकता को दर्शाता है, यह माना जा सकता है।

वस्तुत: नाटक “सावित्री-सत्यवान” का कथानक में नारी की आत्म-विश्वास, दृढ़ संकल्प एवं असीम साहस की कथा को दर्शाता है, जिसका प्रमाण सावित्री के स्वयंवर काल से मिलना आरंभ हो जाता है। राजघरानों में प्रचलित परंपरा अनुरूप कन्या विवाह के लिए स्वयंवर आयोजन राजा द्वारा आमंत्रित महानुभाव एवं नियंत्रित वातावरण में आयोजित किया जाता था, परन्तु सावित्री पिता (राजा) के कहने पर अधिक उन्मुक्त तरीके से वर का खोज करती है। अपने चयन पर निर्द्वन्द रूपेण दृढ़ रहते, अपनी चरित्र मर्यादा एवं विश्वास की रक्षा प्रत्येक विपरीत परिस्थिति में आमने-सामने संघर्ष करते हुए एक महान आदर्श को स्थापित करती है। नाटक में जो अभिव्यक्ति है, वह है मृत्यु पर जीवन का विजय। सामान्य रूप में जीवन पर मृत्यु का विजय पाना है, परन्तु मृत्यु पर जीवन का पताका है “सावित्री-सत्यवान” की अमर कथा। अत: नाटककार द्वारा नाटक में मृत्यु पर जीवन का विजय पाने से यह स्पष्ट होता है कि दृढ़ संकल्प, कठीन परिश्रम एवं आत्मविश्वास से हर मुश्किल पर विजय पाया जा सकता है ।

जो नाटककार के नाट्य लेखन उदेश्य को दर्शता है।

"सावित्री-सत्यवान" नाटक में पात्रों की संख्या अधिक है। पात्रों की संख्या अधिक होने के कारण सभी पात्रों के चरित्र-चित्रण उपुक्त ढंग से नहीं हो पाया है, सिर्फ मुख्य पात्र ही उभरकर सामने आते है। नाटककार ने मुख्य पात्र का चरित्र-चित्रण बड़े ही उत्कृष्ट ढंग से किया है। नाटक में पात्रों का चरित्र-चित्रण में नाटककार ने आधुनिकतावादी सोच को समावेश किया है। अत: नाटककार द्वारा नाटक का चरित्र-चित्रण नाट्य लेखन में कौशलता को दर्शाता है।

"सावित्री-सत्यवान" नाटक में नाटककार द्वारा जीतने भी दृश्य कल्पना किए गए है मंच के दृष्टिकोण से संभव और सुलभ है। नाटक के एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अत: नाटक के दृश्य संयोजन बड़े ही निपुणता से किया है, जिसे देख कर कहा जा सकता है कि नाटककार श्री लाल दास मंचन की सीमा एवं संभावना से पूर्णरूपेण परिचित थे।

"सावित्री-सत्यवान" नाटक के आरंभ में नान्दी एवं भरतवाक्य का प्रयोग संस्कृत नाटक के नियमानुसार किया गया है। अत: नाटक का आरंभ और अंत संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल है।

अंततः पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध अध्ययन के दौरान नाटक "सावित्री-सत्यवान" से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन भाषा एवं शैली हेतु इस नाटक का अध्ययन जरूरी है। इस नाटक के ऐतिहासिक महत्व को भुलाया नहीं जा सकता है। यह नाटक आधुनिक मैथिली नाटक के अमूल्य कृति में से एक है।

3. “सीता-स्वयंवर” प्रलेखन एवं विश्लेषण

सीता-स्वयंवर” नाटक के लेखक पं० श्री आनन्द झा है। मैथिली नाट्य साहित्य में नाटक लेखन की अवधि को लेकर मतभेद नहीं देखा गया है। स्पष्टत: नाटक का लेखन अवधि 1938 ई० माना गया है।

“सीता-स्वयंवर” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन कञ्चीनाथ झा, रानी चंद्रावती श्यामा दातव्य चिकित्सालय, कचौरी गली, बनारस प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। यह नाटक पाँच अंकों में विभाजित किया गया है एवं इसमें कोई भी दृश्य नहीं है। इस नाटक में कुल पात्र बाइस है, जिसमें स्त्री पात्र छ: और पुरुष पात्र सोलह है। नाटककार ने इस नाटक में जनक द्वारा सीता स्वंयवर का आयोजन, धनुष भंग एवं उसके बाद परशुराम को क्रोधित होकर फिर शान्त होना और अन्त में विवाह के बाद सीता का सासुर जाना तक की कथा वर्णित है। यह नाटक पौराणिक कत्थ को लेकर लिखा गया है, इसीलिए धार्मिक भावना से भरा हुआ है। यह नाटक संस्कृत शास्त्रीय प्रणाली से लिखा गया है। इस नाटक में राजा जनक के शासन-व्यवस्था, आचार-विचार, रहन-सहन एवं रीति-रिवाज का वर्णन मिथिला के अनुरूप किया गया है, जिस कारण नाटक नाम “सीता-स्वंयवर” नाटक की पृष्टभुमि को दर्शाता है। नाटक में मुख्यत: वीर रस को प्रधानता दिया गया है एवं कथन में हास्य रस का समावेश भी विलक्षण रूप से किया गया है। इसमें पात्र के अनुकूल भाषा का प्रयोग स्वाभाविकता को दर्शाता है। नाटक में बड़े-बड़े स्वगत भाषण रंगमंचीय दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं है। जनक के समय दीवाल घड़ी की घंटा बजना अस्वभाविक होते हुए भी नाटक को

आधुनिक समाज से जुड़ाव को दर्शाता है। अत: इस नाटक में नाटककार लेखन दृष्टिकोण से संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के नियम का प्रतिपालन करता है, यह माना जा सकता है।

"सीता-स्वंयवर" नाटक को दसरूपक नियमानुसार नाटक के कोटि का नहीं जा सकता है, कियोंकि दसरूपक में वर्णित नियम केई अनुसार कम में कम पाँच अंक का नाटक होना चाहिए। पाँच अंक का नाटक निम्नकोटि का माना जाता है। अत: यह नाटक दसरूपक नियम अनुकूल माना जा सकता है।

"सीता-स्वयंवर" नाटक के कथोपकथन चमत्कृत करनेवाली नहीं है, जिससे ऐसा लगता लगता है कि नाटककार बुद्धिवाद युग से प्रभावित है। इस नाटक में पात्र के अनुकूल भाषा का प्रयोग स्वाभाविता को उदघाटित नहीं करती है। इस नाटक में मैथिली के उपभाषा एवं जगह-जगह संस्कृत भाषा का भी प्रयोग किया गया है। इस नाटक में गद्य एवं पद्य दोनों का समावेश किया गया है। अत:यह माना जा सकता है, शब्द-संयोजन में कहीं-कहीं अभाव के बाद भी नाटक में गद्य एवं पद्य का समावेश नाट्य लेखन में अनुभवशीलता दर्शाता है।

श्री आनन्द झा लिखित नाटक "सीता-स्वंयवर" में जगह-जगह पर आधुनिक वातावरण का उल्लेख किया गया है। इस नाटक में नाटककार ने समाज में प्रचलित अंधविश्वास के साथ ही सामाजिक व्यवस्था की जो दुर्दशा हुई है, उसको भी चित्रित किया गया है। नाटक "सामवती-पुनर्जन्म" के तरह ही इस नाटक में भी पंजीकार तथा सिद्धान्तकार की चर्चा हुई है, लेकिन जनक के समय में इस प्रथा का कोन प्रयोजन है। अत: यह माना जा सकता है कि इन सारी तथ्यों का नाटक

में समावेश नाटक की प्रासंगिकता को दर्शाता है।

नाटककार ने नाटक को रंगमंचीय अनुकूलता से जोड़ने के लिए ऐसे आधुनिक सामाजिक तथ्य का प्रयोग किया है जो दर्शक और नाटक के बीच सेतु का काम कर सके। अत: यह माना जा सकता है कि नाटक को आधुनिक समाज से जोड़ने का प्रयास नाटककार के उद्देश्य को दर्शाता है।

"सीता-स्वयंवर" नाटक के दृश्य-संयोजन के दृष्टि से कहीं असफल दिखाई पड़ते हैं। जैसे राक्षस के दुत द्वारा रंगमंच खाने का दृश्य का आयोजन आदर्श पालन नहीं करता है। नाटक में विवाह का दृश्य सूचक रूप में प्रयोग करना नाटकीय को पालन करना है। नाटक में एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अन्तर सम्बन्ध नाटकीय आदर्श के अनुकूल है, जो नाटककार के लेखन प्रतिभा को चिन्हित करता है। अत: यह माना जा सकता है कि कुछ त्रुटि को छोड़ दिया जाय तो नाटक में दृश्य-संयोजन नाटकीय आदर्श के अनुकूल है।

नाटक "सीता-स्वयंवर" का आरम्भ नान्दी पाठ से होता है, जो संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल है। नाटक के समापन को कुछ लोग दुखान्त मानते है और कुछ लोग सुखान्त मानते है। मेरे अनुभव से यह नाटक दुखान्त नहीं है, कारण सीता ससुराल जाती है, इसीलिए सभी के आँखों में आंसू जरूर है, लेकिन इसके साथ ही इसमें भावी जीवन जी सुखपूर्ण कल्पना निहित है, यह दुख आगामी सुख का सूचक है। अत: यह माना जा सकता है कि नाटक का आरम्भ और समापन संस्कृत नाट्य लक्षण के प्रभाव को प्रमाणित करता है।

अंतत: पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध अध्ययन से स्पष्ट होता है कि श्री आनन्द झा द्वारा लिखित नाटक “सीता-स्वयंवर” में कहीं-कहीं दृश्य रंगमंच पर प्रस्तुति के अनुकूल नहीं होते हुए भी इस नाटक रंगमंच पर प्रदर्शन करने योग्य है। यह नाटक “सीता-स्वयंवर” आधुनिक मैथिली नाटक लेखन में अपनी उपस्थिति को प्रमाणित करती है।

----

4. “जीमूतवाहन-चरित” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“जीमूतवाहन-चरित” नाटक लेखक पं० श्री त्रिलोचन झा हैं। इस नाटक के लेखन काल को लेकर आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्य में किसी प्रकार का मतभेद नहीं दिखता है। अत: यह मान लिया जाय कि नाटक का लेखन काल 1940 ई० है।

“जीमूतवाहन-चरित” नाटक गन्धर्व-विद्याधर युग के आख्यान से लिए गए पौराणिक कत्थ को लेकर लिखा गया है। मिथिलांचल के मध्य अनेको व्रत कथा एवं पर्बत्योहार का प्रचलन है, इसमें जीतिया पर्ब भी प्रचलित है। प्राय: प्रत्येक पुत्रवती माता अपने पुत्र के कल्याणार्थ हेतु जीतिया व्रत करते हैं। इस व्रत को लेकर एक लोक प्रचलित कहावत है, जिसका भावार्थ इस वाक्य से लगाया जा सकता है :--- अगर किसी के बच्चे के साथ कोइ घटना होती है, और वह सुरक्षित बच जाता है , तो लोग बोल पड़ते है कि तुम्हारी माँ ने जरूर जीतिया व्रत किया होगा इसलिए बच गये। अर्थात जीतिया व्रत की चर्चा करने का अभिप्राय यह था कि इस व्रत में जो कथा कही और सुनी जाती है, वही “जीमूतवाहन-चरित” नाटक का कथानक है।

पं० श्री त्रिलोचन झ द्वारा रचित नाटक “जीमूतवाहन-चरित” पौराणिक कत्थ को लेकर लिखा गया है। इस नाटक के कत्थ पौराणिक होते हुए भी नाटककार ने वर्तमान समाजिकता से जोड़े रखने के लिए कथावस्तु के उपस्थान को बड़े ही स्वभाविक तरीके से प्रयोग किया है। शब्द संयोजन में नाटककार ने इस नाटक में मैथिली के केन्द्रित भाषा और प्रांतीय भाषा प्रयोग अत्यधिक किया जो आधुनिक मैथिली नाटक के लेखन का स्वाभाविक स्रोत है। नाटक में अभिनय के दृष्टिकोण

से नाटककार सभी रस का समावेश किया है,जिसमें नायक का चित्र शांतरूप श्रींगार-मूल, चरित अदभूत और विरोचित है। नायिका अनुरागमयी विप्रलम्भ-संयोजन आलम्बन गरुड़ द्वारा रौद्र धारण नाग की दुर्दशा वीभत्स, मता-पिता के द्वारा वात्सल्य और करुणा मर्मस्पर्शी सहचर और सहचरी द्वारा हास्य-विनोद आदि विविध रस को नाटक में समावेश किया गया है। अत:नाटककार द्वारा नाटक के लेखन में नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रतिपालन बड़े कौशलता से किया है। अत: ये कहा जा सकता है की नाटककार ने नाटक लेखन में नाट्य लक्षण ग्रंथ का अनुकरण किया है।

"जीमूतवाहन-चरित" नाटक का नायक पुराण प्रसिद्ध संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथानुसार सबसे उत्तम नायक यानि धीरोदत् कोटी के हैं। इस नाटक को नाटककार ने रूपक के अनुकूल लक्षण का ध्यान रखा है। इसमें नाटक लेखन के लक्षण विधमान है।

नाटककार "जीमूतवाहन नाटक में शब्द संयोजन में परिपकता का परिचय दिया है। नाटककार ने इसमें मूल मैथिली भाषा और उपभाषा दोनो का प्रयोग किया है, मैथिली भाषा को एवं उपभाषा का प्रयोग से कत्थ से पौराणिक होते हुए भी आधुनिक सामाजिक स्वभाविकता से जोड़कर रखा है। नाटककार ने नाटक में गद्य एवं पद्य का प्रयोग स्वभाविकता से किया है। अत: यह माना जा सकता है कि शब्द-संयोजन में गद्य एवं पद्य का प्रयोग आधुनिक सामाजिक स्वभाविकता के अनुकूल किया गया है।

नाटककार पं० श्री त्रिलोचन झा द्वारा लिखित नाटक "जीमूतवाहन-चरित" में लोक प्रचलित मैथिली उपभाषा का प्रयोग, विदुषक द्वारा आधुनिक समाज पर

व्यंग्य करना एवं जीमूत्तकेतुक स्त्री द्वारा जीमूतवाहन के लिए काबुला आधुनिक मैथिली स्त्री को यथार्थवादी चरित्र का प्रदर्शन नाटक को अभी के दौर में भी प्रासांगिक बनाता है। अत: यह माना जा सकता है कि यह नाटक अपने प्रासांगिकता को दर्शाता है।

"जीमूतवाहन-चरित" नाटक में कत्थ पौराणिक रहते हुए भी नाटककार में आधुनिकतावादी विचारधारा समावेश किया गया है। अत: यह माना जा सकता है कि नाटक का उद्देश्य नाटककार द्वारा आधुनिकता विचारधारा को दर्शाता है।

"जीमूतवाहन-चरित" नाटक में नाटककार ने दृश्य-संयोजन रंगमंच पर प्रस्तुति करने के दृष्टिकोण से लिखा गया है, लेकिन नाट्य लक्षण ग्रंथ में मंच पर स्नान का दृश्य निषिद्ध होते हुए भी नाटककार ने स्नान का दृश्य लिखा है। इसी तरह गरुड़ द्वारा जीमूतवाहन के छाती में लोल मारना एवं चांगुर से पकड़कर ले जाना रंगमंचीय प्रस्तुति दृष्टिकोण एवं नाट्य लक्षण ग्रंथानुसार दोषपूर्ण है। नाटककार द्वारा एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अन्तर संबंध स्पष्टत: दिखता है। अत: ये माना जा सकता है कि कुछ दृश्य में रंगमंचीय नियम को नहीं पालन करते हुए भी अन्य दृश्य रंगमंचीय प्रस्तुति के के अनुकूल है।

श्री त्रिलोचन झा द्वारा लिखित नाटक "जीमूतवाहन-चरित" में पात्रो का चरित्र-चित्रण बड़े ही कौशलता से किये हैं। नाटक में जो भी पात्र हैं, उसकी रंगमंच पर उपस्थिती दिग्दर्शित होती है। नाटक में सूत्रधार, नटी, विदुषक आदि पात्र संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रन्थ के अनुकूल है। अत: ये माना जा सकता है कि नाटक में चरित्र-चित्रण उपयुक्त ढंग से किया गया है।

"जीमूतवाहन-चरित" नाटक का आरंभ संस्कृत नाटक के अनुसार नान्दी पाठ से हुआ है, एवं समापन भी नाट्य लक्षण ग्रन्थ की परिधि से बाहर नहीं लिखा गया है। अत: यह माना जा सकता है, कि संस्कृत नाटक के अनुसार नाटक का आरंभ और समापन लिखा गया है।

अंतत: पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पं० श्री त्रिलोचन झा द्वारा लिखित नाटक "जीमूतवाहन-चरित" मैथिली नाटकीय वातावरण को लक्षित कर लिखा गया है एवं आधुनिक मैथिली नाटक में अपनी उपस्थिति एवं योगदान दर्शाता है। यह नाटक आधुनिक मैथिली नाटक में एक अमूल्य कृति है।

----

5. “गान्धर्व-विवाह” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“गान्धर्व-विवाह” नाटक पं० श्री दामोदर झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक का लेखन काल 1943 ई० है, एवं लेखन काल को लेकर किसी भी मैथिली नाट्य साहित्य में मतभेद नहीं है।

“गान्धर्व-विवाह” को नाटककार ने पाँच अंक और बाइस दृश्य में विभाजित किया है। इस नाटक में पात्रों के कुल संख्या एकत्तालिस है, जिसमें पुरुष पात्र तीस और स्त्री पात्र ग्यारह है। इस नाटक का प्रथम प्रकाशन संवत 2010 को हुई है, जो “प्रभुनारायन राजकीय उच्चतर माध्यमिक विध्यालय रामनगर, बनारस” प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। नाटककार ने इस नाटक को लिखते समय भरतमुनि के नाट्य शास्त्र मे लिखे गए नियम का सस्वर प्रतिपालन किया है। यह नाटक काव्य रचना शैली में लिखी गई है। इस नाटक में नाटककार महाभारत ग्रंथ से लिए गए शुभद्रा और अर्जुन के गान्धर्व विवाह को आधार बना कर लिखा है, इस के साथ ही नाटक मे नवीनता को लाने के लिये नाटककार ने हर संभव प्रयास किया है। नाटककार ने नाटक के कथा में वर्णित सोलह वर्ष के वनबास को एक वर्ष में दर्शाया है और भी ऐसे कई सारे नवीन परिवर्तन करके नाटक में आधुनिक युग की स्वाभाविकता को बनाए रखने का हर संभव प्रयास किया है। नाटक मे नाटककार रस आदि का निर्वाह बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया है। नाटककार ने इस नाटक के लेखन मे नाट्य लेखन नियम को कौशलता से अपनाया है, जिसके संबंध मे पं० श्री त्रिलोकनाथ मिश्र ने यह कहा है :--

"विद्वान युवक कविक लेखनीक कृति स्वरूप ई नाटक नवीन रहितो प्राचीनताक ताही रुपे अक्षुण्ण रक्षा कएने अछि, जाहि सं वर्तमान युगक कतोक स्वछन्द मैथिली कविक निरंकुश काव्य हेतु एकरा तीक्ष्ण अंकुश कहि सकैत छी"

अत: यह कहा जा सकता है कि इस नाटक का लेखन संस्कृत नाटक के अनुसार होने के बाबजूद में ऐतिहासिक और देशकाल के तथ्य का अभाव है एवं नाटक का कथानक में थोड़ी शिथिलता दिखाता है। नाटक में गति की कमी दिखाई पड़ता है। यह सारी कमी नाटक को असफलता को दर्शाता है।

नाटक "गान्धर्व-विवाह" में नाटककार दसरूपक के लक्षण के अनुकूल लिखा है, फिर कही-कहीं अभाव दिखता है।

"गान्धर्व-विवाह" नाटक में नाटककार द्वारा शब्द-संयोजन में पद्य और पद्य दोनों का प्रयोग किया है। नाटककार ने नाटक में गद्य के प्रयोग साथ ही पद्य का अत्यधिक प्रयोग किया गया है। नाटक में पद्य का अत्यधिक प्रयोग संस्कृत नाटक के प्रति अधिक झुकाव को दर्शाता है। नाटक में जगह 'र' को 'ल' लिखा गया है, वहीं दूसरे जगह फिर 'र' को 'र' लिखा गया है। वही बच्चा के लिए दूसरा शब्द प्रस्थ को परस्थ लिखा गया है फिर वहीं कृष्ण को करष्ण नहीं लिखा गया है, इससे लेखकीय त्रुटि कह सकते है। अत: यह कहा जा सकता है कि कहीं-कहीं शब्द-संयोजन में अभाव के बाबजूद नाट्य लक्षण के अनुकूल है।

"गान्धर्व-विवाह" नाटक में पौराणिक कथा होते हुए भी आधुनिक विचार को नाटक में समावेश करने का प्रयास किया है। नाटक को भाषा के स्तर पर भी प्रसांगिक बनाने के लिए नाटककार मैथिली शास्त्रीय भाषा के प्रयोग के साथ ही लोक प्रचलित भाषा को समावेश किया है। सुभद्रा एवं अर्जुन के गान्धर्व विवाह

प्रकरण को आधुनिक वैचारी स्तर को दर्शाना नाटक की प्रसांगिकता को दर्शाना है। अत: यह माना जा सकता है कि नाटककार ने नाटक को प्रसांगिक बनाने का प्रयास किया है।

नाटक “गान्धर्व-विवाह” में पौराणिक क्त्थ होने बाबजूद भी नाटक के मध्य आधुनिकतावादी विचार नाटक लेखन के उद्देश्य को दर्शाता है ।अत:यह कहा जा सकता है कि नाटककार द्वारा नाटक का उद्देश्य है, नाटक में आधुनिकतवादी विचार को दर्शाना है।

नाटककार ने “गान्धर्व-विवाह” नाटक में द्दश्य-संयोजन संस्कृत लक्षण ग्रंथ अनुकूल लिखा है। नाटक में अत्यधिक द्दश्य होते हुए भी उसका विन्यास छोटे-छोटे है जो रंगमंच पर प्रस्तुति के अनुकूलता को दर्शाता है। नाटककार ने नाटक में दृश्य लेखन के दौरान एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध नाट्य सिद्धयांत के अनुकूल लिखा है, फिर भी कहीं-कहीं दृश्यों के परिवर्तन के बाद शिथिलता दिखाय पड़ता है। अतः ये माना जा सकता है कि दृश्य संयोजन में नाटककार द्वारा कहीं-कहीं अभाव के बाबजूद नाटक का दृश्य-संयोजन नाटय लक्षण सिद्धयांत के अनुकूल है।

पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक “गान्धर्व-विवाह” में नाटककार ने नाटक का आरंभ संस्कृत नाटय लक्षण ग्रंथानुसार नान्दी से हुआ है। नान्दी के बाद सूत्रधार का प्रवेश, सूत्रधार अपने सहयोगी पात्र के साथ अंत में नाटक के मूल कथा के साथ प्रस्तुति का घोषणा, उसके साथ ही नाटक का मूल कथा एवं अंत में संस्कृत लक्षण ग्रंथानुसार भरतवाक्य से नाटक का समापन हुआ है। अतः यह नाटक का आरंभ एवं समापन नाट्य लक्षण के अनुकूल है।

अंततः पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध अध्ययन के दौरान हमें यह अनुभव हुआ है कि यह नाटक पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक में अपनी उपस्थिति की ऐतिहासिकता कि दर्शाता है।

----

6. “दुर्गा-विजय” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“दुर्गा-विजय” नाटय पं० श्री जीवनाथ झा द्‌वारा लिखा गया है। आधुनिक मैथिली साहित्य पर लिखे गए ग्रंथ में इस नाटक के लेखन काल को लेखन अध्ययन के दौरान एकमत दिखा है। इस नाटक का लेखन काल 1958 ई० है। अतः इस नाटक का लेखन काल 1958 ई० माना जाय।

“दुर्गा-विजय” नाटक की प्रथम संस्मरण का प्रकाशन संवत 2015 है एवं वैदेही समिति, लालबाग, दरभंगा प्रकाशन द्‌वारा प्रकाशित किया गया है। इस नाटक का नाटककार द्‌वारा दो अंक और नौ दृश्य में विभाजित किया गया है। नाटक कुल 18 मुख्य पात्र है, जिसमें पुरुष पात्र पन्द्रह और स्त्री पात्र तीन है। नाटक “दुर्गा-विजय” के कथानक पौराणिक है। नाटककार ने नाटक में यह पौराणिक कथानक मार्कण्ड्य पुराणस्थ दुर्गा सप्तसती के पाँचवे अध्याय से ग्यारहमें अध्याय तक के कथा को लेकर लिखा है। इस नाटक को मुख्यतः नाटककार ने दुर्गा द्‌वारा शुंभ निशुम्ब को वधकर अमानवीय प्रवृति पर मानवीयता को स्थापित करना वर्णित है। इसे पहले लिखे गए पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटकों में प्रायः सभी नाटक संस्कृत लक्षण ग्रंथानुसार लिखा गया है लेकिन इस नाटक में ऐसा नही है। इस नाटक में प्रस्तावना और विष्कंभक का प्रयोग नही किया है। इस तरह यह नाटक संस्कृत लक्षण ग्रंथ के अनुकूल नही है, लेकिन इसे लेखनी के दृष्टिकोण से देखा जाय तो नाटककार द्‌वारा नाटक में क्रांतिकारी परिवर्तन माना जा सकता है। नाटककार ने पाश्चात्य शैली एवं समकालीन फारसी थियेटर कंपनी द्‌वारा नये-नये तरीके से पाश्चात्य शैली में फारसी को मिलाकर नाटक मंचित किया जाना से पुर्णत: अवगत दिखाई पड़ते हैं। इस कारण नाटक को संस्कृत

लक्षण ग्रंथानुसार न लिखते हुए पाश्चात्य नाटक या यह कहा जाय यथार्थवादी नाटक लेखन के अनुसार लिखा है। इस नाटक में वीर, हास्य, करुण, रौद्र, भयानक एवं श्रिंगार रस को मुख्य रस के रूप में प्रयोग किया गया है। अतः यह कहा जा सकता है कि इस नाटक का लेखन संस्कृत ग्रंथ लक्षणानुसार न होते आधुनिक नाटक लेखन को अनुसरण किया है।

पौराणिक कथा को लेकर लिखे गए नाटक होने के बाबजूद यह नाटक संस्कृत नाटय दसरूपक ग्रंथ का अनुकरण यथावत नही दिखाय पड़ता है।

"दुर्गा-विजय" नाटक में नाटककार ने शब्द का संयोजन भी संस्कृत नाटय लक्षण ग्रंथानुसार न करते हुये आधुनिक नाटक के अनुसार किया है। नाटक में गध का अत्यधिक प्रयोग नाटककार द्वारा मैथिली साहित्य में नाटक लेखन में नये शुरुवात माना जा सकता है। उसमें पध की प्रधानता थी। इस नाटक में पध का इस्तेमाल संस्कृत नाटक के अनुसार नही किया गया है। अर्थात पध को प्रधानता नही दिया गया है। अतः नाटक में लेखन को लेकर नाटककार द्वारा पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक में गधत्माक बहुलता यह दर्शाता है कि नाटककार ने नाटक लेखन को लेकर मैथिली में एक नया दृष्टिकोण को जन्म दिया।

पंडित श्री जीवन झा द्वारा लिखा गया नाटक "गान्धर्व-विवाह" में पौराणिक कथानक में आधुनिकतावादी विचार को समावेश कर लिखना नाटककार का आधुनिक युग को दर्शना है। दुर्गा द्वारा शुंभ और निशुंभ का वध करना एवं इंद्र को पुनः अपने राजगद्दी पर बैठाना अन्याय पर न्याय के विजय को दर्शाता है। आधुनिक समय में भी ऐसी स्थिति विध्यमान है। अतः यह कहा जा सकता है कि

नाटककार ने नाटक को प्रसांगिक बनाए रखा है।

"दुर्गा-विजय" नाटक को नाटककार ने इस तरह आधुनिकतावादी विचारधारा के अनुकूल लिखा है, इसे यह स्पष्ट हो जाता है कि नाटक लिखने का उदेश्य वर्तमान समाज और रंगमंच के समछ एक नए रचना को प्रस्तुत करना रहा होगा। अतः यह कहा जा सकता है कि इस नाटक का उधेश्य नाटककार द्वारा पौराणिक कथा के नाटक में आधुनिक विचार को समावेश कर प्रस्तुत करना है।

आधुनिक नाटक से जोड़ने की दृष्टिकोण को नाटककार ने दृश्य संयोजन में भी दर्शाया है। "दुर्गा-विजय" नाटक मे नाटककार ने दृश्य का विन्यास बड़े निपुणता से करने की कोशिश किया है। नाटककार द्वारा नाटक का नव विन्यास तो ठीक है, लेकिन बांधकर गाछ में लटकाने का दृश्य, हिमालय के गुफा का दृश्य, लाख लाख सेना को रणभूमि में मरने का दृशय रंगमंच पर प्रस्तुत करना असंभव जैसा ही माना जा सकता है, वैसे भी नाटक लेखन के नियमानुसार वध, युद्ध, भोजन आदि दृश्य को रंगमंच पर प्रदर्शन के दृष्टिकोण से एवं नाट्य लेखन के नियमानुसार वर्जित माना जाता है, जिसका उपयोग नाटककार ने इस नाटक में किया है। यह लक्षण दर्शाता है कि नाटककार पर व्यवसायिक थियेटर कंपनी के नाटक प्रदर्शन से आधिक प्रभावित हैं। नाटक के दूसरे अंक में प्रहसन का प्रहोग किया गया है, यह प्रहसन भी व्यवसायिक थियेटर कंपनी से ही प्रभावित है, क्योंकि इस प्रहसन दृश्य का कथानक से कोई संबंध नहीं है बल्कि यह दर्शक के लिए सिर्फ हास्य द्वारा मनोरंजन करने के दृष्टिकोण से रखा गाया है अतः यह कहा जा सकता है कि दृश्य संयोजन में परिवर्तन नाटककार द्वारा लिखित नाटक में सिर्फ नाट्य लेखन सिद्धयांत का अनुकरण ना करते हुए व्यवसायिक थियेटर

कंपनी का भी अनुकरण किया गया है।

"दुर्गा-विजय" नाटक के चरित्र -चित्रण में पौराणिक कत्थ का अनुसरण किया गया है फिर भी नाटककार चरित्र निर्माण में आधुनिकता लाने का प्रयास किया है। यह नाटक संस्कृत नाटक के अन्य पौराणिक कत्थ के नाटक के अनुसार छोटा है और इसलिए चरित्र-चित्रण गौण है। अतः यह माना जा सकता है कि इस नाटक का चरित्र-चित्रण संस्कृत नाटक के अनुसार न होते हुए आधुनिकतावादी तरीके से किया गया है।

"दुर्गा-विजय" नाटक का आरंभ संस्कृत नाटक लक्षण ग्रंथ के अनुसार नही किया गया है। संस्कृत नाटक का आरंभ प्रस्तावना से होता ही इसमे ऐसा नही है। नाटककार ने नाटक मे प्रस्तावना का प्रयोग नही किया है। नाटक का समापन संस्कृत नाटक अनुसार भरतवाक्य से होना चाहिए इसमे ऐसा नही है। अतः यह माना जा सकता है कि नाटक का आरंभ और समापन भी नाटककार ने आधुनिक तरीके से किया है।

अंततः पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध अद्द्य्यन के दौरान यह अनुभव हुआ कि नाटककार श्री जीवनाथ झा ने संस्कृत नाट्य शैली अनुकरण ना करते हुए यथार्थवादी नाटक एवं कंपनी थियेटर के नाटक को प्रधानता दिया है। यह नाटक अति सरल एवं रोचक है इस नाटक के लेखन से हम गद्य बाहुल्य पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक लेखन में नया प्रारम्भ माना जा सकता है। यह कृति नाटककार कि सफल कृति है।

----

7 . “अवतार” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“अवतार” नाटक श्री हरिश्चंद्र झा ‘हरीश’ द्वारा लिखा गया है। नाटक लेखन काल को लेकर अध्ययन के दौरान मतांतर दिखा है। डॉ० लेखनाथ मिश्र द्वारा लिखित ग्रंथ “मैथिली नाटकक उद्भव और विकास” में 1958 ई० लिखा गया है, वहीं डॉ० प्रेमशंकर सिंह द्वारा लिखित ग्रंथ “मैथिली नाटक परिचय” में नाटक के प्रथम संस्मरण का प्रकाशन 1956 ई० लिखा गया है। अतः इस नाटक का लेखन काल 1956 ई० माना जा सकता है क्योंकि यह नाटक 1956 ई० में प्रकाशित हो चुका है।

श्री हरिश्चंद्र झा ‘हरीश’ द्वारा लिखित नाटक “अवतार” पौराणिक कृष्णावतार के कथा को केन्द्रित कर लिखा गया है। इस नाटक को हरीनम सत्संग सम्मेलन समिति, मधुबनी (दरभंगा) द्वारा प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1956 ई० में किया गया है। इस नाटक को नाटककार ने तीन अंक और सोलह दृश्य मे विभाजित किया है। इस नाटक में मुख्यतः तीस पात्र हैं, जिसमें पुरुष पात्र बाइस और स्त्री पात्र आठ हैं। इस नाटक कि प्रथम प्रस्तुति मधुबनी नाट्य कला परिषद द्वारा किया गया है। नाट्य कला परिषद द्वारा इस नाटक कि अनेक प्रस्तुति हुई है। पौराणिक कथा को लेकर लिखा गया नाटक “अवतार” में कृष्ण जन्म से लेकर कंस वध तक के कथा को वर्णित किया गया है। इस नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाटक के अनुसार न लिखते हुए पश्चात शैली के नाटक के अनुसार समावेश करने कि कोशिश किया है। चूंकि नाटककार एक अभिनेता भी रहे हैं, इसलिए मंचपयोगी नाटक मैथिली में लिखने कि कोशिश किया है। इस तरह नाटककार द्वारा संस्कृत

नाटक लक्षण ग्रंथ का अनुसरण नही करना नाटकीय दोष माना जा सकता है, कियोंकि संस्कृत नाट्य ग्रंथ अनुसार नाटक में प्रस्तावना, विष्कंभक, भरतवाक्य आदि का प्रयोग नहीं किया गया है। नाटककार ने नाटक लेखन में पश्चात्य नाटक लेखन को अनुकरण किया है। अत: यह माना जा सकता है कि नाटक लेखन के दृष्टिकोण से यह नाटक पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक में नये प्रयोग किया गया है।

"अवतार" नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य ग्रंथ के दसरूपक सिद्धयांत का पालन यथावत नहीं किया है। इस नाटक का कत्थ पौराणिक होते हुए भी दसरूपक के अनुकूल न लिखते हुए नये तरीके को दर्शाना है। अत: यह माना जा सकता है कि नाटककार ने नाटक को दसरूपक के अनुकूल नहीं लिखा है। नाटक "अवतार" पौराणिक कथानक होते हुए भी जगह-जगह आधुनिक युग के प्रचलित शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसमें नाटककार ने पौराणिक कथावस्तु में आधुनिक शब्दों का प्रयोग कर समयानुकूल लेखन किया है। इस नाटक के शब्द-संयोजन पूर्णत: मैथिली भाषा का प्रयोग किया है। 'अक्रूर और प्रजातन्त्र' शब्ध नाटक में प्रयोग कथानक के समयानुकूल न होते हुए आधुनिक समाज से लिया गया है। जैसे :---

"अक्रूर :- श्रीमान कने विचारि कअ देखियौक। समुद्र प्रवाह कें, उमड़ल मेघ कें, प्रजातन्त्रक आगि कें चट दअ दबा देब कोनो साधारण बात नही थिकैक। राज्य शासन आ प्रजा दमन कोनो कनिया पुतराक खेल नही छैक।"

फिर 'अणु अस्त्र और प्रदर्शनीक' इन शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो उस समय असंभव जान पड़ता है। नाटककार ने आधुनिक युगीन नाटक की तरह गद्य

का प्रयोग अत्यधिक किया गया है। इस नाटक में पद्य का प्रयोग इससे पहले लिखे गए पौराणिक नाटक के जैसा न होते हुए आधुनिक दौड़ के सिनेमा के गीत को रंगमंचीय दृष्टिकोण से लिखा गया है। उदाहरण स्वरूप एक गीत जो क्रांति समय के संदेश को दर्शाता है :----

"करह क्रान्ति तों आजुक युग में क्रान्तिक छैक संसार रे ।

आगाँ-आगाँ मोन जाइ छै , पाछाँ छै अधिकार रे ।।"

उपयुक्त वाक्य लेखन से स्पष्ट हो जाता है कि नाटककार ने शब्द के साथ ही गद्य एवं पद्य लेखन में आधुनिकता को बड़े सरलता से नाटक में समावेश किया है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक के लेखन में नाटककार शब्द-संयोजन में गद्य और पद्य को नये दृष्टिकोण से प्रदर्शित किया है।

श्री हरिशचन्द्र 'हरीश' द्वारा लिखित नाटक "अवतार" में कंस द्वारा अत्याचार अदखिक होने पर कृष्ण को आवररित होना और अंततः कृष्ण द्वारा अत्याचारी कंस का वध होना वर्णित है। नाटककार द्वारा नाटक के बीच-बीच में कृष्ण द्वारा कंस का चेतना एवं अंत में कंस का वध किये जाना से यह स्पष्ट होता है कि अन्याय का अंत होना निश्चित है। अतः यह माना जा सकता है कि नाटक में न्याय-अन्याय की बातें प्रासंगिकता को दर्शाता है।

पौराणिक कथा होते हुए भी "अवतार" नाटक लेखन में शिल्पगत नए प्रयोग किया जाना एवं प्रचलित भाषा के माध्यम से आधुनिक समाज को जोड़ना नाटक में नए प्रयोग को दर्शना है। अतः यह माना जा सकता है कि नाटककार द्वारा नाटक लेखन में मैथिली के नाटक के विकास के उदेश्य को सिद्ध करता है।

"अवतार" नाटक में दृश्य संयोजन रंगमंच पर प्रदर्शन के अनुकूल लिखा गया है,फिर भी नाटक में कुछ दृश्य ऐसे लिखे गए हैं जिसका रंगमच पर प्रदर्शन करना कठिन है, जैसे रंगमच पर यमुना नदी के तट का प्रदर्शन, भगवान विष्णु का क्षीर-सागर से प्रकट होना आदि। नाटककार ने नाटक में एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध को बनाए रखा है। हर दृश्य को आधुनिक शिल्पगत लिखा गया है। अतः यह माना जा सकता है कि कहीं-कहीं त्रुटि स्पष्टतः दिखते हुए भी नाटककार ने दृश्य संयोजन के लेखन में भी नए दृस्टिकोण को दर्शया है , इस नाटक पर संस्कृत नाटक का प्रभाव स्पष्टतः नहीं दिखाय पड़ता है।

नाटककार ने "अवतार" नाटक में अभिनेता को ध्यान रखते हुए लिखा है। नाटक में जीतने भी मुख्य चरित्र हैं सभी को यथा संभव चित्रण किया गया है। पात्र अधिक होने से सभी पात्र का चित्रण सही ढंग से नहीं किया जा हुआ है, कुछ-कुछ पात्र गौण नजर आते हैं। नाटककार भी एक अभिनेता रहें हैं इसीलिए संभवतः सभी चरित्र को लेखन के माध्यम से निखारने का प्रयाश किया गया है। अतः यह माना जा सकता है कि नाटककार द्वारा नाटक में चरित्र-चित्रण रंगमंचीय प्रदर्शन के अनुकूल किया गया है।

"अवतार" नाटक का कथानक पौराणिक हैं फिर भी नाटककार ने लेखन संस्कृत लक्षण ग्रंथ के अनुसार नही किया है, इसमें प्रस्तावना का प्रयोग नही किया गया है। वैसे ही नाटक का समापन भरत वाक्य से होना चाहिए लेकिन ऐसा नही किया गया है। अतः यह माना जा सकता है कि नाटक का आरंभ और समापन के लेखन में आधुनिक नाटक लेखन का प्रभाव है।

अंततः सोध अध्ययन के दौरान नाटककार द्‌वारा सम्पूर्ण नाटक लेखन में आधुनिकतावादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्टतः दिखाय पड़ता है। श्री हरिश्चंद्र झा 'हरीश' कि यह कृति आधुनिक मैथिली नाटक लेखन को नए दृष्टिकोण से जोड़ती है, इसीलिए मैथिली साहित्य के लिए यह रचना अविस्मरणीय है ।

----

8. “आचार्य-द्रोण” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“आचार्य-द्रोण” नाटक श्री चन्द्रकान्त झा द्‌वारा लिखा गया है। मैथिली नाट्‌य साहित्य ग्रंथ में इस नाटक लेखन काल 1959 ई० वर्णित है, इसमें कहीं से कोई मतभेद नही है। अतः इस नाटक का लेखन काल 1959 ई० ही माना जा सकता है।

श्री चंद्रकांत झा लिखित नाटक “आचार्य-द्रोण” पौराणिक कथा को लेकर लिखा गया है। इस नाटक प्रथम-संस्करण का प्रकाशन भादव 1367 को हमीदिया वकी प्रेस दरभंगा प्रकाशन द्‌वारा प्रकाशित किया गया है। नाटककार ने इस नाटक को छः अंक और बाईस दृश्य में विभाजित किया है। नाटक में कुल पात्र बीस हैं, जिसमें पुरुष पात्र ग्यारह और स्त्री पात्र नौ है। इस नाटक के कथानक पौराणिक ग्रंथ महाभारत से लिया गया है, जिसमें आचार्य द्रोण के आचार्य पद ग्रहण से लेकर महाभारत के युद्‌ध एवं इनका मृत्यु तक का कथा वर्णित है। इस नाटक में संस्कृति नाट्‌य ग्रंथ के नियमानुसार ना होते हुए यथार्थवादी नाटक के अनुसार गध्यात्मक शैली का अनुकरण किया है। नाटककार ने नाटक लेखन मे विशेषतः यह ध्यान रखा नाटक रंगमच पर प्रस्तुति योग्य हो, अर्थात यह कहा जाय कि नाटककार ने नाटक लेखन में संस्कृत नाटक का अनुकरण न करते हुए पाश्चात्य नाटक के अनुसार गद्‌यात्मक रूप मे सम्पूर्ण नाटक को लिखा है। स्पष्टतः यह कहा जा सकता है कि नाटककार ने पौराणिक तथ्य को लेकर आधुनिकतावादी विचारधारा को समावेश कर लेखन करना है।

“आचार्य-द्रोण” नाटक का लेखन में नाटककार ने संस्कृत नाटक के लक्षण

का अनुकरण नहीं किया है, इसीलिए दसरूपक के अनुकूल होते भी है, बहुत जगह विरोधाभास भी दिखाई पड़ता है। अत: यह कहा जा सकता है कि दसरूपक के अनुकूल नहीं है।

"आचार्य-द्रोण" नाटक के कथानक पौराणिक होने के बाद भी एक भी पद्य का प्रयोग नही किया गया है, बल्कि सम्पूर्ण नाटक में गद्यात्मक रूप में लिखा गया है। अत: श्री चन्द्रकान्त झा द्वारा नाटक के शब्द-संयोजन में सिर्फ गद्य का प्रयोग यथार्थवादी नाटक के अनुकूल माना जा सकता है।

"आचार्य-द्रोण" के कथोपकथन के बीच नाटककार ने सत्य का समावेश किया है, जिससे दर्शक अपने आप को पात्र के करीब अनुभव करता है। आचार्य-द्रोण सत्य वचन इस प्रकार है :------

"द्रोण–(दीर्घ स्वांस लईत) दिनक जीवन कोनो जीवन होईत छैक जाही तरहें जाल में उठी पुनः जलहि में विलीन भए जाईछ, ताहि तरहे एक दरिद्रक मनोरथ ओकरा मोन में उठी , पुनः ओहि में विलीन भए जाइत छै।"

अतः उपयुक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि नाटककार ने नाटक को प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया है। इस तरह और कई प्रयोग नाटक के आधुनिकतावादी विचार को दर्शाता है। अतः यह माना जा सकता है कि आधिनिकतावादी प्रभाव नाटक के प्रासंगिकता को दर्शाता है।

नाटककार श्री चन्द्रकान्त झा ने नाटक आचार्य-द्रोण में दृश्य संयोजन पूर्णरूपेण मंचपयोगी बनाने का प्रयास किया है, लेकिन दृश्य विन्याश मे कही-कही रंगमंचीय सीमा पर ध्यान केन्द्रित नहीं रख पाएँ हैं। जैसे घनघोर जंगल का दृश्य,

असंख्य सेना द्वारा घमासान युद्ध का दृश्य रगमंच पर प्रदर्शित करना कठिन है, बल्कि फिल्म में अच्छे से प्रदर्शित किया जा सकता है। इस नाटक में दृश्य छोटे-छोटे लिखें गए हैं जिसे प्रदर्शन के समय दृश्य शीघ्र-शीघ्र परिवर्तित होते हैं, जिसे अभिनय के दृस्टिकोण से अरुचिकर माना जाता है। अतः इस नाटक का दृश्य संयोजन मे कहीं-कहीं त्रुटि होते हुए भी नाटककार ने प्रयोगात्मक दृष्टिकोण से दृश्यालेखन करने की कोशिश किया है।

"आचार्य-द्रोण" नाटक में नाटककार ने चरित्र का चित्रण पौराणिक कत्थ के अनुकूल रखते हुए उसका आधुनिककरण करने का भी प्रयास किया हैं। सभी पात्र के चरित्र चित्रण में नाटककार द्वारा आधुनिककरण का प्रयास किया गया है। नाटक को सभी पात्र को उभारा गया है, लेकिन नाटक के मुख्य पात्र का नाम भी आचार्य-द्रोण है फिर भी उनके बाल्य अवस्था का चित्रण नही किया गया है। अतः चरित्र चित्रण में नाटककार ने अपने कौशलता से नाटक के चरित्र को आधुनिककरण करने का प्रयास किया है यह माना जा सकता है।

श्री चन्द्रकान्त झा ने नाटक "आचार्य-द्रोण" के लेखन में संस्कृत नाटक अनुसार आरंभ में नांदी एवं समापन में भरत वाक्य का प्रयोग नही किया है, बल्कि इस नाटक लेखन में पाश्चात्य नाटक का अनुकरण किया गया है। अतः इस नाटक का आरंभ और समापन पाश्चात्य नाटक के अनुसार माना जा सकता है।

अंततः पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध अधय्यन के दौरान यह अनुभव हुआ कि यह नाटक संस्कृत नाटक के अनुसार ना होते हुए आधुनिकतावादी दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसे नाटक कि आधुनिक मैथिली नाटक मे अपनी शसक्त उपस्थिति को साबित करता है।

9. "द्वापर द्वंद" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"द्वापर द्वंद" नाटक श्री श्याम बिहारी दास द्वारा लिखा गया है। इस नाटक का लेखक काल 1961 ई० है। लेखनकाल को लेकर कोई मतभेद नहीं है। अतः नाटक का लेखन 1961 ई० माना जाय।

"द्वापर द्वंद" नाटक के प्रथम संस्मरण का प्रकाशन जुलाई 1961 ई० में किया है। यह नाटक 'बिहारी बन्धु' ग्राम+पोस्ट - नावानी, जिला दरभंगा" द्वारा प्रकाशित किया गया है। नाटककार ने नाटक को तीन अंक और बाईस दृश्य में विभाजित किया है। नाटक कुल पात्र तीस है, जिसमें पुरूष पात्र उन्नीस और स्त्री पात्र ग्यारह है । इस नाटक का कथानक महाभारत ग्रंथ के कृष्णावतार से संबन्धित तथ्यों को लेकर लिखा गया है। महाभारत कालीन युग का द्वापर कहा जाता है एवं महाभारत कालीन कई सारे द्वन्दात्मक स्थिति आपसी फुट, पारस्परिक वैनस्यता आदि को विषय बनाकर यह नाटक लिखा गया है। नाटक में किसी दो पात्र का मत एक जैसा नहीं है इसलिए इस नाटक का नाम "द्वापर द्वंद" रखा गया है, जो नाटक के नामकरण को औचित्य दर्शाता है। नाटककार ने नाटक में मानसिक द्वन्द तथा संघर्ष का चित्रण मैथिली के पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली सभी नाटक से अधिक इस नाटक में दर्शाया गया है। नाटक में वीर रस का समावेश मुख्य रूप से किया गया है एवं अन्य रस का अवश्यकता के अनुसार प्रयोग किया गया है। नाटककार द्वारा नाटक के लेखन में संस्कृत नाट्य ग्रंथ के नियम का उल्लंघन करते हुए पारसी एवं पाश्चात्य नाटक का अनुकरण किया है। अतः नाटककार संस्कृत नाटय शैली का प्रयोग न करते हुए पारसी एवं पाश्चात्य शैली मे नाटक का लेखन किया है, यह पूर्ण रूपेण स्वीकार किया जा सकता है।

"द्वापर द्वंद " नाटक चूँकि संस्कृत नाटक लेखन अनुसार नहीं लिखा गया है, इसीलिए यह नाटक लेखन में दसरूपक का भी अनुकरण नही किया गया है। अतः इस नाटक में दस रूपक के सिदयान्त का प्रतिपालन नही किया गया है।

"द्वापर द्वंद" नाटक में नाटककार ने शब्द संयोजन में प्रचलित मैथिली भाषा का प्रयोग किया है। पारसी थियेटर एवं पाश्चात्य नाटक अनुसार इसमें पद्य का प्रयोग कहीं भी नहीं किया गया है, सम्पूर्ण नाटक का गद्यात्मक रूप में संयोजन किया हैं। नाटक में नाटककर ने कहीं-कहीं बहुत तीव्र वंग्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया गया हैं। वर्तमान युग पर व्यंग्य वाण छोड़ते हुए अक्रूर का संवाद--

"अक्रूर—ई अहाँ कोन युगक गप्प अनलहुं भौजी? आजुक संसार पति-पत्नीक एक रंगमंच छी। आइ ककरो दूर सं दूर सुझैत छैक तं अपन स्त्री तक आ पत्नी कें अपन पति तक। आइ एक पति पत्नी में संसारक आदि अन्त अछि। सम्पूर्ण संसारों मे आगि लगा यदि क्यो आइ अपन स्त्री कें प्रसन्न कअ सकैत अछि तं अपना कें ओ कृतकृत्य बुझैत अछि आ ओ निर्लज्जा पत्नी एकरा अपन पतिक पुरूषार्थ बुझैत अछि। "

इस संवाद द्वारा आधुनिक समाज पर किए गए व्यंग्य में प्रचलित आधुनिक मैथिली शब्दों का प्रयोग कर शब्द संयोजन में उत्कृष्टता लाने का प्रयास किया हैं। अतः यह माना जा सकता है कि नाटक के शब्द संयोजन में सिर्फ गद्य का प्रयोग नाटककार द्वारा नये दृष्टिकोण को जन्म देना है।

नाटक "द्वापर द्वंद" के कथानक कृष्णवतार से संम्बन्धित है, फिर भी नाटककार ने द्व्न्दात्मक अनेको प्रश्न का एक स्थल पर एकत्रित कर स्वयं ही तटस्थता की नीति को निस्पक्षता से पालन करने का प्रयास किया है। नाटककार द्वारा अपने मन में उठ रहे अनेक शंकाओं के लिए छोट राजा कंस हेतु सोलह कला से पूर्ण अवतार को उतारने का कौन प्रयोजन, रोहणी को नन्द के यहाँ जाकर

रहबाक की रहस्य, राधा श्री कृष्ण विवाह नहीं किए उसका क्या कारण, श्री कृष्ण मथुरा से गोकुल क्यों नही गए, ब्रजवासी लोग श्री कृष्ण मथुरा और द्वारका आकर क्यों नही किए, श्री कृष्ण युदुबंशी को पूर्णतः भूल कैसे गए आदी का समाधान कल्पना के आधार पर किए हैं। अतः यह माना जा सकता है कि नाटककार द्वारा अनेक द्वंदात्मक स्थिति को तटस्थ्ता से निष्पक्षता को साथ हल करने का प्रयास नाटक को आधुनिक समाज से जोड़ता है, जो नाटक की प्रसांगिकता को दर्शाता है।

"द्वापरक द्वंद" नाटक के संबंध में नाटककार ने खुद ही लिखा है कि "इस नाटक में साम्यवाद का सनातन धर्म से वैचारिक बहस हुआ है, जिसमें दोनों पहलमान को अखारा मे छोड़ में खुद ही पूर्ण निष्पक्षता को पालन करने का प्रयास किया हैं।" अतः माना जा सकता हैं कि नाटककार द्वारा नाटक लेखन का उदेश्य पौराणिक कत्थ के नाटक में राजनीतिक रूप देकर नाटक को आधुनिक समाज के समपक्ष लाना हैं।

"द्वापर द्वंद" नाटक के चरित्र चित्रण में मानसिक द्वंद तथा संघर्ष सभी मैथिली नाटक से अधिक है। इस नाटक में पात्र के चरित्र का विकास पूर्णरूपेण किया गया है एवं उसके संवाद भी छोटे-छोटे रूप मे लिखे गए हैं , जो अभिनय के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना जा सकता है। चरित्र चित्रण में नाटककार ने अपने विचार को नारद द्वारा व्यक्त करना एवं प्रसांगिक विषय को प्रस्तुत करना नाट्य लेखन के सोच को दर्शाता है। जैसे ---

"नारद ---- युद्ध सब करैत अछि जितबेक आशा सं, किन्तु यैह टा एहन कर्म छैक जाहि मे दूनू प्रकारें हारिए छैक। जं जितलहुं तं शत्रु के प्रतिहिंसा लेबाक हेतु सबखन पीठे पर ठाढ़, जं हारलहुं तं अपन अभीष्ट सिद्ध नहि भेल, जं मारल गेलहूँ तं की संसार आ की एकर नीक अधलाह? एहि हड़-हड़ खट-खट सं सब

दिनकाक हेतु पिण्डे छुटि गेल। असल मे लड़ाइ झगड़ा तं वैह करए जकरा एहि संसार सं जयबाक हड़बड़ी होइक। ओ ई कर्म जं सर्वोतम रहितैक तं क्षत्रिऐ सर्वश्रेष्ठ जाति किएक ने कहबितथि।"

उपर्युक्त वाक्य से स्पष्ट हो जाता है कि नाटककार ने नाटक में चरित्र चित्रण को आधुनिक समाज से जोड़ने को दर्शाया है। अतः यह माना जा सकता है कि नाटक में चरित्र चित्रण रंगमंचीय प्रस्तुति के अनुकूल है।

नाटक "द्वापर द्वंद" के दृश्य संयोजन में नाटक द्वारा पौराणिक कत्थ रहते हुए भी आधुनिक विचार को दृश्य मेँ वर्णित किया गया है। नाटक में छोटे-छोटे दृश्य नाटक प्रस्तुति के दृष्टिकोण से बड़े उपयुक्त माना जा सकता है। दृश्य लेखन को आधुनिक नाट्य लेखन के तरीके को अपनाया गया है। दृश्यों का आपस में अंतर संबंध स्पष्ट दिखाय पड़ता है। कुछ दृश्य ऐसे भी हैं, जो रंगमंच पर प्रस्तुति के दृष्टिकोण एवं शास्त्रीय नियम के अनुकूल नही है, जैसे- वध करने का दृश्य, सेना का दृश्य। अतः यह माना जा सकता है कि नाटक का दृश्य संयोजन रंगमच पर प्रस्तुति के अनुकूल है।

"द्वापर द्वंद" नाटक का आरंभ और समापन संस्कृत लक्षण ग्रंथ के अनुकूल ही लिखा गया है।

अंततः पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध अध्ययन दौरान मिले अनुभव से यह कहा जा सकता है कि "द्वापर द्वंद" नाटक सशक्त कथोपकथन से युक्त रहने के कारण रोचक है। नाटककार ने नाटक को आधुनिक यूग से जोड़ने का प्रयास सफल प्रतीत होता है। अतः यह नाटक आधुनिक मैथिली नाटक के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं स्मरणीय है।

----

10 . “रुक्मिणी-हरण” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“रुक्मिणी-हरण” नाटक श्री गोविन्द झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक का लेखन काल 1988 ई० है। इस नाटक के लेखन काल को लेकर सभी एकमत है।

श्री गोविंद झा द्वारा लिखित नाटक “रुक्मिणी-हरण” के प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1989 ई० में किया गया है। यह नाटक चेतना समिति, पटना द्वारा प्रकाशित किया गया है एवं इस नाटक की प्रथम प्रस्तुति चेतना समिति पटना द्वारा किया गया है । इस नाटक का कथानक दो कथा को मिलकर लिखा गया है, पहला महाभारत के दसम स्कन्ध एवं हरिवंस से भीष्म की कन्या की कृष्ण किस तरह विघ्न वाधा दूर करते हुए हरण कर विवाह तक का प्रकरण तथा दूसरा उन्नीसवीं उतरार्ध में विदेशी शोषण के फलस्वरूप मजदूर द्वारा विद्रोह तक के प्रकरण की कथा को जोड़कर लिखा गया है इसी आधार पर नाटककार इस नाटक को “जोआं नाटक रुक्मिणी-हरण एक नव पुराण” कहतें हैं। इसमें शृंगार रस के साथ ही सभी रस को भी समावेश किया गया है। यह नाटक किरतनिया शैली में लिखा गया है। अतः यह माना जा सकता है कि यह नाटक लेखन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल है।

“रुक्मिणी-हरण” नाटक दस रूपक सिधान्त के अनुकूल है क्योंकि नाटक का मुख्य पात्र श्री कृष्ण दिरोदत्त नायक हैं एवं और भी तत्थ दसरूपक के अनुसार वर्णित है। अतः यह कहा जा सकता है कि यह नाटका दस रूपक सिधायंत के अनुकूल है।

“रुक्मिणी-हरण” नाटक के शब्द संयोजन में शास्त्रीय एवं लोग प्रचलित

मैथिली भाषा का समावेश किया गया है, इसमे गद्य और पद्य दोनों का समावेश किया गया है। अतः इस नाटक के शब्द संयोजन में गद्य और पद्य का उरकृष्ट ढंग से पयोग किया गया है।

"रुक्मिणी-हरण" में एक तरफ लोक नाट्य शैली कृतनिया नाटक का समावेश दूसरे तरफ आधुनिक समाज से जनजीवन, जमींदार का अय्यासी, लील खेती करने वाले गोरे का आतंक एवं शोषण के वीरुध जनता के आक्रोश ओर क्रोध का समावेश नाटक को प्रासंगिक बनाता है। अतः यह नाटका प्रासंगिक है।

नाटक "रुक्मिणी-हरण" में नाटककार द्वारा दोनों कथा में जनता कि मुक्ति के लिए चेतना का जागृत होना को दर्शाया गया है जो नाटक के उदेश्य को दर्शाता है। अतः नाटक का उदेश्य आधुनिक समाज से जोड़ना है।

"रुक्मिणी-हरण" नाटक मे चरित्र-चित्रण भी दोनों कथानक के अनुकूल है। नाटक में दृश्य संयोजन, नाटक का आरंभ और समापन संसकृत नाटक का अनुकरण किया गया है। अतः चरित्र-चित्रण, दृश्य संयोजन नाटक का आरंभ और समापन रंगमंचीय प्रस्तुति के अनुकूल है।

अंततः पौराणिक कत्थ के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध अध्ययन के दौरान किए गए अध्ययन से यह कहा जा सकता है कि यह नाटक आधुनिक मैथिली नाटक में अपनी उपयोगिता को दर्शाता है।

भाग-2

ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक का प्रलेखन एवं विश्लेषण

ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक

जिस तरह पुराण प्रसिद्ध पात्र को केन्द्रित कर नाटक लिखने की परंपरा प्राचीन काल से ही है। उसी तरह इतिहास प्रसिद्ध पात्र को केन्द्रित कर नाटक लिखने की परंपरा भी प्राचीन काल से ही है। इसका मुख्य कारण नाट्य लक्षण ग्रंथ में कहे गए वाक्य है, जिसके अनुसार नाटक का नायक धीरोदत्त अर्थात् ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व के पात्र को होना चाहिए है। मैथिली साहित्य में बीसवीं शताब्दी से पूर्व एक भी मैंथिली ऐतिहासिक नाटक नहीं लिखा गया था। बीसवीं शताब्दी में भी जो नाटक लिखा गया वह विशुद्ध ऐतिहासिक नाटक नहीं लिखा गया। इस ऐतिहासिक नाटक में नाटककार ने कुछ तथ्य इतिहास से, कुछ तथ्य जनश्रुति तथा कुछ काल्पनिक तथ्य को समावेश कर लिखा गया। इसीलिए नाटक में कुछ पात्र हैं, तो कुछ जनश्रुति एवं काल्पनिक है।

ऐतिहासिक नाटकों में कथावस्तु जिसतरह ऐतिहासिक व्यक्ति या घटना को लेकर लिखा गया है, मिथिला क्षेत्र ऐसे ऐतिहासिक व्यक्तित्व एवं घटना से भरा पड़ा है। यही वजह है कि यहाँ के नाट्य साहित्य में भी ऐतिहासिक नाटकों की रचना अत्यधिक संभव हो पायी है। इसतरह के नाटकों की रचना मुख्य उद्देश्य मिथिला के युग पुरुषों के आदर्श, उनकी वीरता, साहस, धैर्य, सम्बल, विद्वता आदि को समाज के सामने प्रेरणा रूप में रखना है। इस तरह के विषय को केन्द्र रखकर कई नाटक उपलब्ध है।

अत: शोध अधय्यन में जिस लिखित एवं प्रकाशित ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मुख्यत: तेरह मैथिली नाटकों की प्रलेखन एवं विश्लेषण की गई है, वह नीचे वर्णित है : ---

नाटक	लेखक
1. वीरनरेन्द्र	पं० श्री जीवनाथ झा
2. विद्यापति	श्री विद्यानाथ राय
3. उगना	श्री ईशनाथ झा
4. भगवती भक्त	श्री घनानाथ झा
5. आयाची	श्री काशीनाथ झा
6. कण्ठहार	श्री ब्रज किशोर वर्मा मणिपद्म
7. सन्तपरीक्षा	श्री ललितेश्वर झा
8. कंदर्पीघाट	श्री राजेश्वर झा
9. शास्त्रार्थ	श्री राजेश्वर झा
10. विजेता विद्यापति	श्री काञ्ची नाथ झा किरण
11. राजा शिव सिंह	पं० श्री गोविन्द झा
12. चन्द्रगुप्त	श्री मोहन चौधरी
13. मालिनी	डां० उदय कान्त मिश्र

----

1. “वीर नरेन्द्र” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“वीर नरेन्द्र” नाटक नाटककार पं० श्री जीवनाथ झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक के लेखन काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1956 ई० में हुई है। अत: इस नाटक की लेखन काल 1956 ई० या इससे पहले माना जा सकता है।

“वीर नरेन्द्र” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, माधव झा, दीनबंधु पुस्तकालय, इसहपुर -रामनगर, पोस्ट- सरिसवपाही, मधुबनी, प्रकाशन द्वारा 1956 ई० में प्रकाशित की गई है। यह नाटक पाँच अंक मे बिभाजित की गई है, जिसमे दृश्यों की संख्या भी पाँच है। इस नाटक में कुल पात्र एक्यावन है, जिसमें स्त्री पात्र पाँच और पुरुष पात्र छियालिस (46) है। इस नाटक में पात्रो के अत्यधिक संख्या नाटक के मंचन हेतु उपयुक्त नहीं है। इस नाटक के कथानक मैथिल की वीरता और मिथिला के सांस्कृतिक गौरव के आख्यान को केन्द्रित कर वर्णित किया गया है। खंडवलाकुल संभूत महाराज नरेन्द्र सिंह अपने समय के अद्वुतीय साहसी पुरुष थे। स्वाभिमान और स्वंतत्रता का मन पर जीवनदान देने के लिए वह सतत प्रस्तुत रहते थे। उन ही के जीवन की वीरतापूर्ण घटना को आधार बनाकर यह नाटक रची गयी है। इस नाटक में नाटककार ने कथानक की जटिलता को बड़े कुशलता से सुलझाया है। इस नाटक मे नाटककार ने वीर रस को प्रधानता दिया है। इस नाटक में मनोरंजन हेतु हास्य रस का भी समावेश किया गया है। अत: इस नाटक के लेखन नाटककार के नाट्य लेखन की निपुणता का परिचायक है।

“वीर नरेन्द्र” नाटक संस्कृत नाट्य ग्रंथ के लक्षणानुसार लिखा गया है। इस नाटक में नाट्य रूपक के सिद्धान्त के साथ ही तत्कालीन समय में लोक प्रचलित पारसी नाट्य सिद्धान्त का प्रभाव स्पष्टत: दिखाई पड़ता है। नाटक में भाव व्यंजकता का उपयुक्त एवं उत्कृष्ट समान्यजश किया गया है। अत: यह नाटक रूपक सिद्धान्त के अनुकूल है।

"वीर नरेन्द्र" नाटक में नाटककार ने कथोपकथन जो नाटक के रीढ़ की हड्डी है, पात्र के अनुरूप प्रभावोत्पादक भाषा में लिखा गया है। यह नाटक पद्यात्मक एवं गद्यात्मक दोनों ही रूप में लिखी गयी है। नाटक में गीतों का प्रयोग पारसी रंगमंच के प्रभाव को स्पष्टत: दर्शाता है। अत: इस नाटक के शब्द- संयोजन में सरल पात्रोचित भाषा को पद्यात्मक एवं गद्यात्मक दोनों ही रूप में उपयुक्ता से समावेश कर रंगमंचीय प्रस्तुति के अनुकूल लिखा गया है।

"वीर नरेन्द्र" नाटक मे कथानक की जटिलता को कुशलता से सुलझाते हुये दृश्य-संयोजन रंगमंचीय प्रस्तुति के अनुकूल लिखा गया है। एक दृश्य से दूसरे दृश्य के बीच सामंजस्ता एवं अंतर संबंध को नाटककार ने नाटक में कुशलता से दर्शाया है। इस नाटक के कथानक की जटिलता को दूर करने के लिए नाटककार ने सुच्च अंश के लक्षणानुसार विष्कंभक-प्रवेशक को यथा स्थान निवेश किया है। अत: इस नाटक के दृश्य-संयोजन रंगमंचीय प्रस्तुति के अनुकूल है।

"वीर नरेन्द्र" नाटक में पात्र की अत्यधिक संख्या होने के कारण सभी पात्रो को रंगमंच पर लक्षित नहीं हो पाये है। मुख्य पात्र का चरित्र-चित्रण को नाटककार ने गहन चिंतन कर चित्रित किया है। सभी मुख्य पात्र का चरित्र- चित्रण उपयुक्त एवं औचित्य रूप से किया गया है। इस नाटक के चरित्र-चित्रण में नाटककार ने लोक प्रचलित सरल भाषा का प्रयोग कर नाटक को पात्रोचित एवं अभिनय के अनुकूल चित्रित करने का प्रयास किया है। नाटक मे कुछ पात्र एतिहासिक है तथा कुछ पात्र काल्पनिक है। अत: नाटक का चरित्र-चित्रण रंगमंचीय प्रस्तुति के अनुकूल है।

"वीर नरेन्द्र" नाटक मे नाटककार द्वारा ऐतिहासिक परंपरानुरूप तथ्यों में काल्पनिक तथ्यों को समावेश कर आधुनिक रंगमंच हेतु उपयुक्त बनाना ही नाटक की प्रासंगिकता को दर्शाता है। अत: यह नाटक आधुनिक रंगमंच हेतु प्रासंगिक है।

"वीर नरेन्द्र" नाटक से पहले मैथिली में आधुनिक मैथिली रंगमंच हेतु एक

भी ऐतिहासिक नाटक नहीं लिखे गए है। पंडित श्री जीवनाथ झा के द्वारा आधुनिक रंगमंच हेतु ऐतिहासिक कथ्य के प्रथम नाटक वीर नरेन्द्र का लेखन किया जाना ही नाटककार के नाट्य लेखन के उद्देश्य माना जा सकता है। अत: इस नाटक लेखन का उद्देश्य आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के विकास एवं मार्गदर्शन करना माना जा सकता है।

"वीर नरेन्द्र" नाटक का आरंभ और समापन संस्कृत नाटक के लक्षणानुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है। अत: नाटक का आरंभ और समापन मे संस्कृत लक्षण ग्रंथ के नियम को सस्वर पालन करने का प्रयास किया है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटक "वीर नरेन्द्र" नाटककार पंडित श्री जीवनाथ झा उपयुक्त एवं उत्कृष्ट रचना है। यह नाटक आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अमूल्य एवं अविस्मरणीय कृति है। इस नाटक से ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक के नवयुग का प्रारम्भ माना जा सकता है।

----

2. “विद्यापति” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“विद्यापति” नाटक नाटककार श्री विद्यानाथ राय द्वारा लिखा गया है। इस नाटक लेखन काल को लेकर कोई स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन इस नाटक के प्रथम संस्करण 1959 ई० में हुई है। अत: इस नाटक के लेखन काल 1959 ई० या इससे पहले माना जा सकता है।

“विद्यापति” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1959 ई० में एवं तृतीय संस्करण का प्रकाशन 1964 ई० में विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा द्वारा प्रकाशित की गयी है। यह नाटक कुल तीन अंको मे विभाजित किया गया है, जिसमें दृश्यो की संख्या चौदह है। नाटक मे कुल पात्र बीस है, जिसमें स्त्री पात्र तीन और पुरुष पात्र सत्रह है। इस नाटक के कथानक में नाटककार ने युग पुरुष महाकवि विद्यापति को केन्द्रित कर लिखा है। नाटक के केंद्र बिन्दु विद्यापति है, जिसके नाम पर नाटक का नाम विद्यापति रखा गया है, जो नाटक के नामांकरण के औचित को दर्शाता है। नाटककार ने इस नाटक के लेखन में विद्यापति के सम्पूर्ण जीवनी-शैशव से वार्धव्य तक अर्थात जन्म से लेकर मृत्यु तक की प्रत्येक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख किया है। नाटककार द्वारा नाटक के लेखन में रंगमंचीय दृष्टिकोण का बड़े कुशलता से किया गया है एवं नाटककार द्वारा नाटक में वातावरण एवं परिस्थिति की व्यापकता तथा विविधता के दृष्टिकोण से नाटकीय क्रमबद्धता का अभाव है, साथ ही ऐसा प्रतीत होता है कि यह नाटक सम्पूर्ण नहीं बल्कि किसी बड़े नाटक का संक्षिप्त संस्करण है। इस नाटक में नाटककार ने शिल्प और विषय-वस्तु के दृष्टिकोण से किसी प्रकार से नवीनता का समावेश नहीं किया गया है। अत: इससे स्पष्टत: यह माना जा सकता है कि नाटककार नाटक लेखन में कुछ त्रुटियों के उपरांत भी रंगमंचीय दृष्टिकोण से उपयुक्त है ।

“विद्यापति” नाटक में नाटककार ने संस्कृत लक्षण ग्रंथ के सिद्धान्त के

अनुकूल लिखा है। इसमें नाटककार नाट्य रूपक के सिद्धान्त को सस्वर पालन करने का प्रयास किया है। इस नाटक में त्रुटि यह है कि नाट्य रूपक अनुसार अंक विधान पाँच होना चाहिए लेकिन इस नाटक मे थीं ही अंक है। अन्य सभी लक्षण संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल है। अत: यह माना जा सकता है कि यह नाटक नाट्य रूपक के सिद्धान्त के अनुकूल है एवं भाव व्यंजकता तथा रोचकता का उपयुक्तता से समावेश किया गया है।

"विद्यापति" नाटक के शब्द-संयोजन में छोटे-छोटे स्वाभाविक हृदयग्राही कथोपकथन एवं उपयुक्त सरल भाषा का समावेश किया गया है, जो नाटक को रंगमंच हेतु सर्वथा उपयुक्त एवं उत्कृष्ट बनाता है। यह नाटककार के नाट्य लेखन के शब्द-संयोजन में रंगमंचीय कुशलता को दर्शाता है। इस नाटक में स्थल-स्थल पर राधा-कृष्ण से संबन्धित प्रेम गीत, शिव से संबन्धित नचारी एवं कूट गीत को प्रसंगानुकूल प्रयोग नाटक को अत्यंत ही रोचक एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त बनाता है। अत: इस नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने नाटकीय एवं कुशलता का परिचय दिया है।

"विद्यापति" नाटक में नाटककार ने इतिहास एवं जनश्रुति द्वारा विद्यापति के संदर्भ में जो घटना प्रचलित है, उन सभी तथ्यों का समावेश दृश्य- संयोजन में बड़े कुशलता से किया है। एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध को नाटककार ने सर्वथा ध्यान रखते हुये नाटक का दृश्यांकन किया है। इस नाटक में ऐसे दृश्य को नहीं रखा है, जिसको रंगमंच पर प्रदशित करने में कठिनाई उत्पन्न हो। नाटक में दृश्यों के बीच सामंजस्ता को संभवत: बनाए रखने का प्रयास किया गया है। अत: इस नाटक के दृश्य-संयोजन रंगमंचीय प्रस्तुति के अनुकूल एवं उपयुक्त है।

"विद्यापति" नाटक में नाटककार ने सभी पात्र को प्रसंगानुकूल जीवंत करने का प्रयास किया है। इस नाटक में अभिनेता के अभिनय कौशलता को प्रदर्शित करने का औचित्य अवसर दिया गया है। इस नाटक में पात्र एतिहासिक है, फिर

भी प्रस्तुति परक बनाने हेतु सामाजिक तथ्यों को कुशलता से समावेश किया है। इस नाटक में एक मात्र विद्यापति के चरित्र-चित्रण सम्यक रूप में चित्रित किया गया है। बहलोल लोदी, वजीर तथा योवराज के चरित्र-चित्रण को स्वाभाविक रूप में चित्रित करने हेतु उनकी भाषा मैथिली नहीं रख कर हिंदुस्तानी अर्थात उर्दू मिश्रित हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है। अत: इस नाटक का चरित्र-चित्रण रंगमंचीय एवं अभिनय के दृष्टिकोण से बड़े ही उपयुक्त एवं अनुकूल है।

"विद्यापति" नाटक में नाटककार ने उन्नीस गीतों का समावेश प्रसंगानुकूल किया है, लेकिन इतने गीतों का समावेश अभिनय के दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं है। इस नाटक मे शिल्पगत नवीनता का अभाव है, लेकिन एतिहासिक तथ्यों में कविकल्पित सामाजिक तथ्यों का समावेश नाटक के प्रासंगिकता को दर्शाता है। अत: यह नाटक आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु प्रासंगिक माना जा सकता है।

"विद्यापति" नाटक में अभिनेता, रंगमंच एवं विषय-वस्तु के अनुकूल लेखन किया गया है, साथ ही सरल भाषा, जटिलता रहित दृश्यावली नाटककार के उपयुक्त एवं उत्कृष्ट नाट्य लेखन के उद्देश्य को दर्शाता है। अत: इस नाटक का उद्देश्य विद्यापति के ऐतिहासिक एवं जनश्रुति प्रसगों को आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करना है।

"विद्यापति" नाटक का आरंभ और समापन संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल किया गया है। अत: इस नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटक "विद्यापति" नाटककार श्री विद्यानाथ राय उपयुक्त एवं उत्कृष्ट रचना है। यह नाटक आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति है।

3. "उगना" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"उगना" नाटक नाटककार श्री ईशनाथ झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबधित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है वह इस प्रकार है:- चेतना समिति पटना से प्रकाशित "आधुनिक मैथिली नाटक पहिल शताब्दी" जिसका सम्पादन श्री मधुकान्त झा ने किया है, जिसमें "ईशनाथ झाक नाटक" नाम से डॉ० विनोद झा द्वारा लिखित आलेख में 1955 ई० लिखा है, वहीं "मैथिली साहित्यक इतिहास"(डॉ० बाल गोविंद झा) में 1957 ई० एवं "मैथिली साहित्यक इतिहास"(डॉ० डी० एन० झा 'श्रीष') तथा "मैथिली नाटक एक परिचय"(डॉ० प्रेम शंकर सिंह) में 1963 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1955 ई० से 1963 ई० या उससे पहले माना जा सकता है।

"उगना" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, दरभंगा प्रेस कंपनी (प्राइवेट लिमिटेड), दरभंगा, प्रकाशन द्वारा 1963 ई० में की गयी है। यह तीन अंकों में विभाजित किया गया है, जिसमें दृश्यों की संख्या पंद्रह है। नाटक मे कुल पात्र सत्रह है, जिसमें स्त्री पात्र पाँच एवं पुरुष पात्र बारह है। इस नाटक के कथानक भी महाकवि विद्यापति के जीवन को केन्द्रित कर लिखा गया है। इस नाटक में प्रसंगानुकूल अठारह गीतों को समावेश किए गए है। इस नाटक का नामांकरण कर नीचे मे लिखा गया "उगना रे मोर कतय गेलाए" से नाम के साथ कथानक की सार्थकता सहजहि सिद्ध हो जाती है। इस नाटक के कथावस्तु का आधार मिथिला मे प्रचलित किंवदन्ती है कि साक्षात देवाधिदेव महादेव विद्यापति के भक्तिभाव से आह्लादित होकर "उगना" नाम धारण कर महाकवि के यहाँ चाकरी करने के लिए कैलाश से मृत्यलोक अर्थात पृथ्वी पर आए है। उधर गौरी शिव वियोग से व्याकुल होकर विद्यापति के शरीर में पिपासा को प्रवेश करा कर उगना नामधारी महादेव के रहस्य को उद्घाटित करती है एवं सुधीरा के शरीर में क्रोध और अभिमान को

प्रवेश कराकर महादेव को पुन: कैलाश वापसी करवाने में सफल होती है। इस नाटक के विषय-वस्तु उपर्युक्त तथ्यों को समावेश किया गया है, जो नाटक के नामांकरण को उपयुक्त एवं अनुकूल है। इस नाटक में मुख्य रस भक्ति एवं गौण रस के रूप में रौद्र, अद्भूत, करुण, हास्य आदि रस का समावेश प्रसंगानुकूल किया गया है। महाकवि के निम्न उक्ति में अत्यन्त भक्ति के विलक्षण रूप देखा जा सकता है :---

हम अरण्य रोदन करी, तोहर केहन विवेक।

नहीं जानल हम आन के,सेवल तुअ पद एक ।।

रौद्र रस की स्थायी भाव क्रोध को चारित्रिक रूप प्रदान करके नाटककार ने नवीन उद्भावना को इस प्रकार दर्शाया है :-----

"अएँ रओ चंडलबा । तोहरा लेखे महादेव हाथीघोड़ा"।

जब सम्पूर्ण गाँव मे यह समाचार फैल जाता है कि विद्यापति रात्रि से चओर (दीयरा / सुनसान जगह) में बैठ अंकुरित हुए शिवलिंग के स्तुति में ध्यान मग्न हो जाते हैं, जिसमें अद्भूत रस उद्घाटित होता है एवं सुधीरा के संवाद - 'जाहि पतिदेव के लअ शिरक सिंदूर में लालिमा छल से सहितहि महादेव वियोग में बताह भ नहि जानि कतए गेलाह । हा मा । हमर सुख सोहाग किएक लुटि गेल' में करुण रस एवं उगना का भाव भंगिमा (चाल चलन) से हास्य रस को प्रदशित कर नाटककार ने रस निष्पादन को कुशलता से दर्शाया हैं। अत: यह नाटक आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं मैथिली साहित्य के दृष्टिकोण उत्कृष्ट एवं उपयुक्त है।

"उगना" नाटक में नाटककार द्वारा नाटक भारती, कोशिकी एवं आरभटी वृति किन विलक्षण दृष्टांत प्रस्तुत कि गयी है। देवाधिदेव महादेव कि उपस्थिति से स्वभावत: नाटक में सोंदर्य और लालिमा के साम्राज्य से कौशिकी वृति एवं गौरी

द्वारा स्थिति परिवर्तन के लिए माया रूप क्रोध, पिपासा और अभिमान के साथ मिलकर कुचक्र रच कर महादेव के छ्द्रम रूप को जगजाहिर करने में आरभटी वृति कि उत्तम रूप को उत्कृष्टता से समावेश किया गया हैं। इस नाटक में नाट्य रूपक लक्षण को सस्वर अनुकरण किया गया हैं। अत: यह नाटक नाट्य रूपक ग्रंथ के नियमानुसार सस्वर अनुकरण नाटककार ने कुशलता से किया है।

"उगना" नाटक में नाटककार द्वारा सांस्कृतिक और प्रांजल भाषा का प्रयोग किया गया है। नाटककार ने नाटक में पात्रोचित संवाद और व्यवहार को समावेश किया हैं। इस नाटक मे नाटककार के द्वारा प्रसंगानुकूल गीतों का अनुचित नहीं कहा जा सकता हैं किन्तु अत्यधिक गीतों के समावेश होने से नाटक मे अभिनेता को आघात पहुँचाता हैं, इस दृष्टिकोण से नाटककार द्वारा अठारह गीतों का समावेश इस नाटक में नहीं किया जाता तो उत्तम होता हैं। इस नाटक में गीतों के प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है कि नाटककर ने नाटक में प्रचुर मात्रा में गद्य का समावेश किया है। इस नाटक में शब्द-संयोजन कथानुकूल प्रासंगिक एवं पात्रोचित हैं जिसमें संवाद गद्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों ही रूप में समावेश किया गया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन आधुनिक रंगमंच हेतु प्रस्तुति परक एवं पात्रोचित हैं।

"उगना" नाटक में सूच्य घटना कि कम व्यवहार के कारण समस्त कार्य-व्यापार दृश्य रूप में घटित होती है, परिणाम स्वरूप दर्शक प्रत्येक दृश्य के घटना से प्रत्यक्ष परिचित होकर आनंदानुभूति को प्राप्त करते हैं। नाटककार ने नाटक में एक दृश्य से दूसरे दृश्य के अंतर संबंध को कुशलता से समावेश किया है एवं सभी दृश्यों में सामंजसता को नाटककार ने कुशलता से समावेश किया है। अत: इस नाटक के दृश्य-संयोजन रंगमंचीय दृष्टिकोण से अनुकूल एवं उत्कृष्ट हैं।

"उगना" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण को कथानुकूल पात्रोचित एवं

स्वभावानुकूल चित्रित किया है। इस नाटक में नाटककर ने मुख्य पात्र विद्यापति के द्वारा शिव के भक्ति वात्सलता के दर्शन को सर्वत्र चित्रित किया हैं। इस नाटक में महादेव के चरित्र का दोनों रूप पहला देवाधिदेव और दुसरा उगना का चाकर के दायित्व निष्ठापूर्वक आस्था से आदर्श चरित्र कि उत्कर्षता, सत्यनिष्ठता, उदारता आदि का समावेश कुशलता से किया हैं। धीरोदत्त नायक के रूप में वर्णित विद्यापति के चरित्र-चित्रण में मानसिक अंतर्द्वन्द्व के विलक्षण रूप को दर्शाया है। गौरी के चरित्र-चित्रण देवी के रूप में चित्रित नहीं कर के सर्वथा मानवीय रूप में चित्रित करके नाटककार ने नवीन उद्भावना को प्रदर्शित किया है एवं गौरी कि मायारूप दिखाकर लक्षानुकूल देवी रूप की भी चर्चा किया है। इस नाटक मे सुधीरा के चरित्र-चित्रण नाटक में कहे गए 'क्रोध' के इस संवाद से नाटककार ने स्पष्ट किया है- 'अहांक अभिप्राय जे ओतय हम पानि मे आगि लगाउ गअ, से कोना होएत? हम सुधीराक हृदय मे चेष्टा करब विफल रहब। कहू तअ गंगाजलक समान पवित्र एवं शीतल सुधीरा हृदय मे हमर आगि कोना धधकत? अंहेर बात'। इस नाटक में नाटककार ने पुरुष पात्र के चरित्र-चित्रण में मानव जीवन के विविधता एवं सजीवता को प्रदर्शित किया है वहीं स्त्री पात्र के चरित्र-चित्रण प्राकृतिक एवं मूल सात्विक प्रवृति को ध्यान में रखकर किया गया है । अत: इस नाटक में अभिनय दृष्टिकोण से अभिनेता हेतु चुनौतीपूर्ण है, जो नाटककार के उत्कृष्ट एवं उपयुक्त चरित्र-चित्रण के परिचायक है।

"उगना" नाटक में नाटककार ने कथावस्तु को मांचोपयोगी बनाने के लिए नाटक में कुछ अस्वाभाविक दृश्य, जैसे- सुधीरा के चारित्रिकी उत्कर्षता के निमित्त अभिमान और क्रोध का प्रवेश, शिव के अलौकिक शक्ति के परिचाय महाकवि के शरीर में पिपासा का प्रवेश आदि समावेश किया गया है। कथानक को स्वाभाविक गतिशीलता, घटना के कार्य कारण के संबंध आधिकारिक कथा के साथहि प्रासंगिक कथा का समावेश किया जाना इस नाटक की उत्कृष्टता का परिचायक है। नाटककार ने इस नाटक में अपने कल्पनाशीलता द्वारा कई प्रासंगिक तथ्यों को

समावेश किया है। अत: यह नाटक आधुनिक रंगमंच एवं मैथिली साहित्य हेतु प्रासंगिक है।

"उगना" नाटक में महाकवि विद्यापति के जन्म प्रचलित कथा को आधार बनाकर लिखा गया है, जिसमें नाटककार द्वारा भक्तिभाव और सत्यनिष्ठता के माध्यम से आधुनिक समाज को जागृत करने के उदेश्य को दर्शाता है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का उदेश्य आधुनिक समाज को भक्तिभाव और सत्यनिष्ठता हेतु प्रेरित करना है।

"उगना" नाटक का आरंभ और समापन संस्कृत नाट्य ग्रंथानुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है। अत: इस नाटक का आरंभ और समापन में नाटककार ने संस्कृत नाट्य ग्रंथ को सस्वर एवं कुशलता से प्रतिपालन किया है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री ईशनाथ झा द्वारा लिखित "उगना" नाटक मैथिली सांस्कृतिक आदर्श रूप, धर्म-कर्म के प्रतीत असीम आस्था, ग्रामीण जीवन में सहयोग एवं उत्थान की भावना,साहित्य और कला के चमत्कार, भाव, भाषा, रस-विन्यास, शब्द-संयोजन आदि दृष्टिकोण से बहुत हि मूल्यवान कृति है। अत: यह नाटक आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं अविस्मरणीय कृति है।

----

4. “भगवती भक्त” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“भगवती भक्त” नाटक नाटककार श्री घनानाथ झा द्‌वारा लिखा गया है। इस नाटक के लेखन काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1959 ई० वर्णित है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1959 ई० या इससे पहले माना जा सकता है।

“भगवती भक्त” नाटक का द्‌वितीय संस्करण का प्रकाशन, विद्‌यापति सी, दरभंगा, द्‌वारा 1964 ई० में प्रकाशित की गयी है। नाटककार ने इस नाटक को तीन अंकों में विभाजित किया है, जिसमें दृश्यों की संख्या सात है। इस नाटक मे कुल पात्र एक्कीस है जिसमें स्त्री पात्र छ: और पुरुष पात्र पंद्रह है। यह नाटक “धरू गोविंदक पएर” नाम से भी प्रकाशित हुई है। इस नाटक के कथानक विद्‌यापति परवर्ती महाकवि गोविंद दास की जीवन को केन्द्रित कर लिखा गया है। इस नाटक के घटनाक्रम में चैतन्य महाप्रभु के ‘नव वैष्णव धर्म’ के पृष्टभूमि को समावेश कर लिखा गया है। इस नाटक में नाटककार ने महाकवि के जीवन के प्रमुख घटना का उल्लेख किया है। जिसप्रकार गोविंद दास भक्ति के कारण प्रसिद्‌ध थे उसीप्रकार उनमें अपूर्व कवित्व शक्ति भी था मिथिला के परिपेक्ष्य में भक्ति की प्रधानता नहीं होने के कारण इनके रचना का प्रसार प्रचार नहीं हुआ है। नाटककार ने नाटक में उसी घटना का उल्लेख किया है, जिससे महाकवि के सम्पूर्ण जीवन को प्रकाशित करने में सहायक सिद्‌ध हो, इसीक्रम में भक्ति भावना पर भी प्रकाश डाला गया है। इस नाटक में धर्मद्रोही वैष्णव नामधारी महंत का निंदा है, जो सतत समाज के आँख मे धुल डाल कर ऐश-आराम की जीवन व्यतीत करता है, ऐसा व्यक्ति अहिंसा के अभाव एवं हिंसात्मक प्रवृति की प्रधानता के कारण सभी मर्यादा का हत्या निर्ममतापूर्वक करता है। यही कारण है कि धर्म के नाम पर वह महिला के सतीत्व नष्ट करने में थोड़ा भी कुंठित नहीं होता है। सम्पूर्ण नाटक में तदयुगीन सामाजिक पृष्टभूमि को उद्‌घाटित किया गया है। इस नाटक के कथानक सुदृढ़

नहीं है, क्योंकि कि नाटककार द्वारा समाज में दन्तकथा के रूप में का विवेचन किया गया है। अत: यह नाटक आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त ऐतिहासिक नाटक है।

"भगवती भक्त" नाटक में नाटककार ने नाट्य रूपक लक्षण का सस्वर पालन नहीं किया है। नाटक में तिन्ही अंक है, जो नाट्य रूपक लक्षण के अनुकूल नहीं है बल्कि अन्य सभी लक्षण अनुकूल है। नाटक में भाव व्यंजकता एवं रोचकता का अभाव है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट नहीं माना जा सकता है। अत: यह नाटक नाट्य रूपक लक्षण को सस्वर पालन नहीं किया गया है।

"भगवती भक्त" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल एवं सुबोध भाषा का प्रयोग कर पात्रोचित बनाने का प्रयास किया है। इस नाटक को गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों रूप में लिखा गया है। इस नाटक में तत्सम शब्दों के अधिक प्रयोग से भाषा दृष्टिकोण से कथोपकथन बोझिल है। इस नाटक में गोविंद दास के मुख से जो गीत गवाए हैं, वह गोविंद दास के रचना के अनुकूल नहीं है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित होते हुये भी प्रभावकारी नहीं हैं।

"भगवती भक्त" नाटक के दृश्य-संयोजन में नाटककार ने रंगमंच के सौविध्य को ध्यान नहीं रखा है। एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतरसंबंध एवं सामंजस्ता स्पष्टत: प्रदर्शित किया है। अत: इस नाटक के दृश्य-संयोजन में उपयुक्त तो है, लेकिन उत्कृष्ट नहीं माना जा सकता है।

"भगवती भक्त" नाटक में चरित्र-चित्रण व्यापक नहीं है। तांत्रिक के अनेक मनोभावना को नाटककार ने चित्रित किया है, जो प्रस्तुति कि दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। बच्चादास के मानसिक द्वंद का स्वभाविक चित्रण किया गया है। इस नाटक में बच्चादास एवं प्रेमबाला के चरित्र-चित्रण रोचक

है। इस नाटक में सभी पात्र का चरित्र-चित्रण पत्रोचित एवं स्वभाविक बनाने का प्रयास किया गया है। अत: इस नाटक का चरित्र-चित्रण प्रस्तुति के अनुकूल माना जा सकता है।

"भगवती भक्त" नाटक में नाटककार ने समस्त नाटक के चित्रांकन में काल्पनिक तथ्यों को समावेश कर प्रसांगिक बनाने का प्रयास किया है। अत: यह नाटक आधुनिक रंगमंच हेतु प्रसांगिक है।

"भगवती भक्त" में नाटककार ने शाक्त धर्म के महानता एवं वेष्णव नामधारी बगुला-भगत महन्थ का उपहास किया है। नाटककार ने नाटक में धार्मिक अंधविश्वास को उत्कृष्टत से समावेश किया है। अत: नाटककार के इस नाटक लेखन का उद्देश्य धार्मिक अंधविश्वास के प्रति समाज को जागरूक करना माना जा सकता है।

"भगवती भक्त" का आरम्भ और समापन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के नियम का सस्वर पालन किया गया है। अत: इस नाटक के आरम्भ और समापन संस्कृत नाटक के अनुकूल है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री घनानाथ झा द्वारा लिखित नाटक "भगवती भक्त" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं कृति है । इस नाटक को घना साहित्य परिषद द्वारा अनेक बार प्रस्तुत किया गया है एवं उक्त परिषद द्वारा इसमें भाग लेनेवाले कलाकार को पुरस्कृत भी किया गया है ।

----

5. “अयाची” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“अयाची” नाटक नाटककार श्री काशीनाथ मिश्र द्वारा लिखा गया है। इस नाटक के लेखन काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस नाटक के प्रथम प्रस्तुति कीर्तिनाथ कला परिषद द्वारा 1954 ई० में हुई है। अत: इस नाटक की लेखन काल 1954 ई० या इससे पहले माना जा सकता है।

“अयाची” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा, प्रकाशन द्वारा 1962 ई० में प्रकाशित की गई है। यह नाटक तीन अंक मे बिभाजित की गई है, जिसमें दृश्यों की संख्या भी चौदह है। इस नाटक में कुल सत्तरह है, जिसमें स्त्री पात्र दो और पुरुष पात्र पंद्रह है। महामहोपाध्याय अयाची मिश्र मिथिलांचल के महान विभूति में से एक थे। उनके उद्भट विद्वता से सभी प्रभावित थे। उन्होंने अपने नाम के अनुकूल किसी से भी कभी कोई याचना नहीं किए। उनका मानना था कि मनुष्य को मनुष्य से याचना नहीं करनी चाहिए, मनुष्य को तो एक मात्र ईश्वर से करनी चाहिए। इसी सिद्धयांत के अनरूप उन्होने अपना जीवन व्यतीत किया, उनको धर्म के दस महान लक्षण मे अपरिग्रह को अपने व्यावहारिक जीवन प्रत्यक्ष प्रयोग द्वारा सिद्ध करना था। इसी साधना की झलक इस नाटक के कथानक का केंद्र बिंदु है। इस नाटक में धार्मिकता से प्रेरित होकर अयाची अनेक यातना को सामना करके वैद्यनाथ धाम जाते हैं। वहाँ शिव का आराधना करते हैं। बहुत दीन के पश्चात जब वह घर वापस आते हैं, तब एक उनकी पत्नी भवानी उनको विस्मयपूर्ण कथा कहती हैं की महाराज उनके पुत्र शंकर के विद्वता से प्रसन्न होकार खजाना से अनेक अशर्फी पुरस्कार स्वरूप दिया है, किन्तु भवानी अपनी पूर्व प्रतिज्ञा अनुसार अपने गाँव की चमाइन को सारा पारितोषिक दे देती है, कारण वह शंकर के जन्मोत्सव पर उसको कुछ भी नहीं दिया गया। इस उपर्युक्त पृष्ठभूमि मे प्रस्तुत कथानक को नाटककार द्वारा नाट्य

रूप दिया गया है। मूल कथा मे नाटककार काल्पनिक तथ्यों का समावेश बड़े उत्कृष्ठता से किया है। अत: नाटककार द्वारा इस नाटक लेखन मे आधुनिक रंगमंच एवं मैथिली साहित्य के दृष्टिकोण को कुशलता से समावेश किया है।

"अयाची" नाटक में अंक विधान नाट्यरूपक लक्षण ग्रंथ के अनुकूल नहीं माना जा सकता है, क्योंकि नाट्य रूपक के अनुसार पाँच अंक होना चाहिए लेकिन इस नाटक मे तीन ही अंक हैं। अन्य सभी लक्षण नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ के अनुसार ही है, इस नाटक मे नाटककार द्वारा व्यंजकता एवं भीति को उभारने का प्रयास किया गया है। अत: इस नाटक मे अंकविधान मे कमी के बाबजूद अन्य सभी लक्षण नाट्य रूपक सिद्धान्त के अनकुल माना जा सकता है।

"अयाची" नाटक के शब्द-संयोजन में संघर्ष और द्वंद से हीन सरल सुबोध भाषा द्वारा मिथिला के गौरवपूर्ण अतीत को नाटककार में उत्कृष्ट रूप देने का प्रयास किया है। इस नाटक में भाषा को स्वभाविक बनाने के लिए नाटककार ने पात्र के अनकुल भाषा का प्रयोग किया गया है। नाटक में आदिवासी से वार्तालाप हेतु उसी की भाषा का प्रयोज किया गया है। इस नाटक को नाटककार ने गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों ही रूप को समावेश उत्कृष्टता से किया है। अतः इस नाटक के शब्द-संयोजन में गद्य और पद्य का समावेश पात्रोचित एवं प्रस्तुति परक है।

"अयाची" नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है। नाटककार ने इस नाटक में बहुत सारे दृश्य को कल्पित कर सभी दृश्यों को कुशलता से दर्शाया है। इस नाटक मे एक दृश्य से दुसरे दृश्य के अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। इस नाटक में नाटककार ने नाट लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत का उल्लंघन भी किया है। भोजन करने का दृश्य नाट्य लक्षण ग्रंथानुसार वर्जित किया गया है, लेकिन नाटककार ने इस नाटक में भोजन के दृश्य को प्रत्यक्ष प्रदर्शित किया है। अन्य सभी दृष्टिकोण से

दृश्य-संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ माना जा सकता है। अत: इस नाटक में दृश्य संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता रंगमंचीय अनकुल एवं उत्कृष्ट है।

"अयाची" नाटक किंवदन्ती पर आधारित होने के कारण नाटक के चरित्र-चित्रण में मुख्य पात्र अयाची शंकर भवानी का चित्रण ऐतिहासिक पात्र के रूप में किया गया है एवं अन्य सभी पात्र और उसका चित्रण नाटककार द्वारा कल्पित किया गया है। इस नाटक में नाटककार ने सभी पात्र का चरित्र-चित्रण को स्वभाविक एवं पात्रोचित बनाने का प्रयाश किया है। अत: इस नाटक में चरित्र-चित्रण पात्रोचित एवं रंगमंचीय दृष्टिकोण से उपयुक्त माना जा सकता है।

"अयाची" नाटक में ऐतिहासिक कथानक को किंवदन्ती के आधार पर लिखते हुए भी काल्पनिक तथ्य को समावेश कर नाटक को आधुनिक समाज को जोड़ते हुए नाटककार ने प्रासंगिक बनाने का प्रयास कुशलता से किया है। अत: यह नाटक आधुनिक रंगमंच एवं मैथिली साहित्य हेतु प्रासंगिक है।

"अयाची" नाटक में मिथिला पुरातन बिभूति के गौरवपूर्ण गरिमा को किया गया है। इस नाटक में अतीत के गौरवपूर्ण गरिमा का समावेश आनेवाले युग हेतु अनुकरणीय है, इसलिए यह नाटक मंच प्रयोगी ऐतिहासिक नाटक है। अत: इस नाटक का उद्देश्य गौरवपूर्ण गरिमा को समावेश कर आधुनिक समाज के समक्ष प्रस्तुत करना माना जा सकता है।

"अयाची" नाटक के आरंभ और समापन में नाट्य लक्षण ग्रंथ को सस्वर अनुकरण किया गया है। अत: इस के आरंभ और समापन नाटक नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनकुल माना जा सकता है।

अंतत: शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री काशीनाथ मिश्र द्वारा लिखित नाटक "अयाची" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति है।

6. "कण्ठहार" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"कण्ठहार" नाटक नाटककार श्री ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' द्वारा लिखा गया है। इस नाटक के लेखन काल को लेकर कोई मतांतर नहीं है। अत: इस नाटक की लेखन काल 1964 ई० है।

"कण्ठहार" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन मैथिली प्रकाशन समिति, सरिसव, दरभंगा, प्रकाशन द्वारा विक्रम संवत 2021 को प्रकाशित की गई है। यह नाटक एग्यारह अंक मे बिभाजित की गई है, जिसमें दृश्यों की संख्या भी छत्तीस है। इस नाटक में कुल पात्र छबीस है, जिसमें स्त्री पात्र छ: और पुरुष पात्र बीस है। यह नाटक भी विद्यापति को केन्द्रित कर लिखा गया है, जिसका मूल कथानक विद्यापति उपन्यास का नाटकीय रूपान्तरण है। इस नाटक में महाकवि विद्यापती के प्रारम्भिक जीवन से लेकर अंतिम समय तक के चित्रण को नाटककार ने अत्यधिक नाटकीय शैली में चित्रित किया है। विद्यापति शस्त्र और शास्त्र दोनों के ज्ञाता समान रूप से थे। गढ़-गोढ़ियारी के युद्ध स्थल मे इनके शस्त्र शक्ति शास्त्रार्थ में शास्त्र के ज्ञान की परिचय को समावेश किया है। विद्यापति ने मातृभूमि और मातृभाषा के पुजा में अपना जीवन समर्पित कर दिए। राजनीति छद्म से दूर संगीत कला से महाराज शिवसिंह को दिल्ली सुल्तान को बंधन से विमुक्त करवाये। इससे महाराज शिवसिंह एवं लखिमा प्रभावित होकर उनको अत्यधिक सम्मानित किये। महारानी लखिमा के संगीत प्रवीणता की आभास नाटक में स्थल-स्थल पर नाटककार ने समावेश किया है। महारानी के सती हो जाने के पश्चात विद्यापति निराश्रित होकर भक्ति के तरफ उन्मुख हुए। महादेव प्रसन्न होकर इनके यहा नौकरी किये उसके पश्चात उनकी मृत्यु हो जाती है। उपर्युक्त विषय वस्तु को नाटककार ने एस नाटक के पृष्ठ भूमि में समावेश करने का प्रयास किया है। इस नाटक मे नाटककार ने इतने सारे तथ्यों का समावेश किया है कि नाटक

अत्यधिक बारा हो गया है, जिस कारण नाटक का रंगमंच पर एक दिन मे मंचन होना असम्भव है। अत: यह नाटक रंगमंच हेतु उतना उपयुक्त नहीं है जितना की साहित्य के रूप में उपयुक्त है।

"कण्ठहार" नाटक नाट्य रूपक ग्रंथ के लक्षण अनुकूल ही माना जा सकता है। नाटक के विषय वस्तु को इतिहास के पृष्टभूमि पर कण्ठहार के समान सुंदर एवं भावमय चित्र को समावेश करने में नाटककार सफल हुए है। इस नाटक में अंकविधान नाट्य रूपक लक्षण के अनकुल है एवं अन्य लक्षण भी रूपक लक्षण के अनुकूल है। अत: यह नाट्य रूपक लकक्षणानुसार उपयुक्त माना जा सकता है।

"कण्ठहार" नाटक में नाटककार ने सजीव और प्रवाहयुक्त कथोपकथन समावेश कर प्रमाणित किया है कि इस नाटक शब्द-संयोजन में मैथिली अभिव्यक्ति का सामर्थ कितना है। नाटककार ने इस नाटक में पात्र के अनुकूल भाषा का समावेश किया है। इस नाटक मे बड़े बड़े कथोकथन नाटक के शब्द संयोजन के त्रुटि को दर्शाता है। नाटककार ने नाटक में गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों ही रूप को समावेश किया है, जिसमें नाटककार द्वारा गद्य को कवित्व से भरा सरलता इस नाटक प्रमुख आकर्षण है। इस नाटक की भाषा भी रंगमंचीय दृष्टिकोण से अनुकूल नहीं माना जा सकता है। अत: इस नाटक के शब्द-संयोजन, गद्य एवं पद्य का समावेश प्रस्तुति के अनुकूल उपयुक्त नहीं माना जा सकता है, बल्कि मैथिली साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त माना जा सकता है।

"कण्ठहार" नाटक मे नाटककार द्वारा अत्यधिक दृश्यों को समावेश किया गया है, जिसके वजह से नाटक के विशालता के कारण एक दिन में इस नाटक की प्रस्तुति संभव नहीं है, जो रंगमंचीय दृष्टिकोण से त्रुटिपूर्ण माना जा सकता है। एक दृश्य से दूसरे दृश्य के बीच का अंतर संबंध और सामंजस्ता को नाटककार द्वारा औचित्य रूप से समावेश किया गया है। इस नाटक में कोई भी दृश्य स्वभाविक रूप से दर्शक को मुग्ध करने में सक्षम है। अत: इस नाटक के दृश्य-संयोजन,अंतर-

संबंध एवं सामंजस्ता मैथिली साहित्य के दृष्टिकोण से जितना उपयुक्त और उत्कृष्ट है उतना रंगमंचीय दृष्टिकोण से नहीं माना जा सकता है।

"कण्ठहार" नाटक में सभी पात्रों के चरित्र-चित्रण में नाटककार ने कुशलता से चित्रित करने का प्रयास किया है। नाटककार ने इस नाटक मे सभी पात्रों को निखारने हेतु ऐतिहासिकता के साथ ही स्वाभिकता एवं नवीनता को कुशलता से समावेश किया है, फिर भी इस नाटक में चरित्र-चित्रण प्रस्तुति के दृष्टिकोण से अत्यधिक उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। अत: इस नाटक का चरित्र चित्रण अभिनेता एवं अभिनय के दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं माना जा सकता है।

"कण्ठहार" नाटक में मुख्य कथ्य ऐतिहासिक होते हुए भी प्राचीनता में नवीनता, नवीनता में आधुनिकता और आधुनिकता में सरसता से परिपूर्ण कर नाटक में विशिष्टता प्रदान करने का नाटककार ने हर संभव प्रयास किया है। अत: यह माना जा सकता है कि आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु प्रासंगिक है।

"कण्ठहार" नाटक में नाटककार ने इतिहास के प्रसंग में नवीनता और आधुनिकता को अपने नाट्य चिंतन से उत्कृष्टता देने का प्रयास किया है, जो नाटककार के नाट्य लेखन के उद्देश्य को दर्शता है। अत: इस नाटक लेखन के उद्देश्य ऐतिहासिक प्रसंग में आधुनिकता एवं नवीनता समावेश कर साहित्यिक उत्कृष्टता को दर्शाना माना जा सकता है।

"कण्ठहार" इस नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल ही है। अत: नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ अनुकूल है।

अंतत: शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री मणिपद्म द्वारा लिखित नाटक "कण्ठहार" साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य हेतु गौरव का विषय है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अमूल्य एवं स्मरणीय कृति है।

7. “सन्त परीक्षा” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“सन्त परीक्षा” नाटक नाटककार श्री ललितेश्वर झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक के लेखन काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस नाटक के प्रथम संस्करण प्रकाशन 1966 ई० में हुई है। अत: इस नाटक की लेखन काल 1966 ई० या इससे पहले माना जा सकता है।

“सन्त परीक्षा” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन रमेश झा, बलभद्रपुर, लहरियासराय दरभंगा, प्रकाशन द्वारा 1966 ई० में प्रकाशित की गई है। यह नाटक तीन अंक मे विभाजित की गई है जिसमे दृश्यों की संख्या भी दस है। इस नाटक में कुल सोलह है, जिसमें स्त्री पात्र पाँच और पुरुष पात्र एग्यारह है। नाटककार ने इस नाटक में मिथिलांचल के दो बिभूति सन्त साहेब दास एवं महाराज राघव सिंह के जीवन की रोचकीय प्रसंग को केन्द्रित कर नाटक के कथानक का विन्यास किया गया है। राघव सिंह के यहाँ प्रेत के उपद्रव अत्यधिक था, इसलिए वह चिंतित थे। उनके गुप्तचर सूचित करता है कि एक सन्त तपस्या में तल्लीन हैं। राघव सिंह सन्त से मिलने आते हैं, अनेक प्रयास के उपरांत सन्त के दर्शन प्राप्त करते है। वह उनके विपत्ति से अवगत होते हैं, बीच मे ही बिहार सुबा के नबाब अलीबर्दी खाँ मिथिला पर आक्रमण करता है। युद्ध में सन्त को बंदी बना लिया जाता हैं। विपक्षी सैनिक द्वारा सन्त को पीड़ित किया जाता है, किन्तु भगवत कृपा से उसका कोई प्रभाव उन पर नहीं होता है। सन्त कि कृपा से विपक्षी सैनिक अस्त व्यस्त हो जाता है। विपक्षी उनको बंद करके रखना चाहता है, लेकिन स्वतः ही ताला खुल जाती है। जब राघव सिंह लगन के रूप में एक टाका देना स्वीकार करते हैं, तब सभी को मुक्त किया जाता है। उपयुक्त विषय को पृष्ठ भूमि मे रखकर नाटक लिखा गया हैं। कथानक के अनरूप ही नाटककार द्वारा नाटक का नामांकरण “सन्त परीक्षा” रखा गया हैं । अत: यह नाटक कथानक के

अनुकूल ही चित्रित किया जाना कुशल नाट्य लेखन का परिचायक है।

"सन्त परीक्षा" नाटक का विन्नयहास में नाट्य रूपक का समावेश लक्षणानुसार ही माना जा सकता है। नाटककार द्वारा नाटक में व्यंजकता एवं रोचकता को समावेश करने का प्रयास उपयुक्त माना जा सकता हैं। अत: यह नाटक नाट्य रूपक लक्षण के अनुकूल है एवं व्यंजकता एवं रोचकता का समावेश उपयुक्त है।

सन्त परीक्षा" नाट्यक में नाटककार द्वारा शब्द-संयोजन उपयुक्त एवं उत्कृष्ट हैं। नाटक में गद्य और पद्य दोनों ही रूप का समावेश नाटककार ने कुशलता से किया हैं। इस नाटक में नाटककार द्वारा मैथिली भाषा का प्रयोग का प्रयोग किया गया है, लेकिन स्थल-स्थल पर भाषा जनित त्रुटि दिग्दर्शित होता है। अत: इस नाटक में शब्द-संयोजन, गद्य एवं पद्य का समावेश उपयुक्त रूप से किया गया हैं, जो नाटककार के नाट्य लेखन कुशल शब्द-संयोजन के परिचायक हैं।

"सन्त परीक्षा" नाटक के दृश्य-संयोजन में नाटककार ने अपने नाटकीय परिपक्ता को पारिपूर्णता से प्रदर्शित किया है। इस नाटक में सभी दृश्य मंचपयोगी एवं अभिनय के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं अनुकूल है। इस नाटक में एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अन्तर संबंध को नाटककार ने उत्कृष्टता से उभारने का प्रयास किया है एवं सभी दृश्यों के सामंजस्ता बड़े ही उपयुक्त हैं। अत: इस नाटक के दृश्य-संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं रंगमंचीय प्रस्तुति अनुकूल है, जो नाटककार के कुशल नाट्य चिंतन का परिचायक है।

"सन्त परीक्षा" नाट्यक के चरित्र-चित्रण में नाटककार द्वारा मुख्य पात्र का चरित्र-चित्रण कथानक के प्रसंगानुकूल किया गया है। मैथिली सन्त साहित्य में सन्त साहेब राम दास का गणना मिथला के विभूति में किया गया हैं, जिन्होने भक्ति मार्ग के अवलंबन की सिद्धि प्रपात किया हैं। महाराज राघव सिंह खंडवला कुल के उर्ज्जितम मिथिलेश थे । उपर्युक्त व्यक्ति के चरित्र चित्रण कथानक के

प्रसंगानुकुल प्रशंसनीय है। अन्य सभी पात्र के चरित्र चित्रण को नाटककार ने कथानक का प्रसंगानुरूप कल्पित किया है। अत: इस नाटक का चरित्र-चित्रण में अभिनेता, अभिनय एवं रंगमंचीय दृष्टिकोण का समावेश बहुत ही उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"सन्त परीक्षा" नाटक श्री ललितेश्वर झा द्वारा लिखित ऐतिहासिक नाटक मात्र ही नहीं माना जा सकता है। इस नाटक में नाटककार ने ऐतिहासिक तथ्य में कवि कल्पना से आधुनिकतावादी विचार को समावेश किया है। अत: यह नाटक आधुनिक रंगमंच एवं मैथिली साहित्य हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"सन्त परीक्षा" नाटक के ऐतिहासिक प्रसंग में आधुनिक सामाजिक तथ्यों को समावेश कर दर्शक एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त बनाया जाना नाटककार के नाट्य लेखन के उद्देश्य माना जा सकता हैं। अत: इस नाटक का उद्देश्य आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं मैथिली साहित्य के माध्यम से आधुनिक समाज को जागृति करना है।

"सन्त परीक्षा" नाटक आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल उपयुक्त माना जा सकता है। अत: इस नाटक का आरंभ और समापन उपयुक्त माना जा सकता है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री ललितेश्वर झा द्वारा लिखित नाटक "सन्त परीक्षा" आधुनिक ऐतिहासिक नाटक में ऐतिहासिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं रंगमचीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण एवं उत्कृष्ट है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य हेतु गौरव का विषय है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति है।

---

8. "कंदर्पीघाट" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"कंदर्पीघाट" नाटक नाटककार श्री राजेश्वर झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक लेखन काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1966 ई० में हुई है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1966 ई० या उससे पहले माना जा सकता है।

"कंदर्पीघाट" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, अमरनाथ झा, प्रकाशन, रसुआर, भाया निर्मली, सहरसा, प्रकाशन द्वारा 1966 ई० में प्रकाशित की गई है। यह नाटक तीन अंक मे विभाजित की गई है, जिसमें दृश्यों की संख्या भी पन्द्रह है। इस नाटक में कुल सोलह है, जिसमें स्त्री पात्र एक और पुरुष पात्र पन्द्रह है। इस नाटक के केंद्रबिन्दु कंदर्पीघाट का युद्ध है, उसी को केंद्रित कर कथानक के पृष्ठभूमि की तैयार किया गया है। जो नाटक नामांकरण के औचित्य को दर्शाता है। मिथिला के इतिहास में "कंदर्पीघाट" एक विशिष्ट स्थान रखता है, जो बलिदान, पराक्रम एवं शस्त्र-संचार की प्रेरणा है। वस्तुत: यह रणभूमि मिथिला हेतु हल्दी-घाटी समान है। इस नाटक का नायक खंडवलाकुल का पराक्रमी शासक महाराज नरेन्द्र सिंह है, जो धीर-वीर और स्वतन्त्रता प्रिय है। अलीवर्दी खाँ उनके पराक्रम एवं रणकुशलता से मुग्ध होकर अनेक उपाधि से उनको विभूषित करते है। कंदर्पीघाट मेन राजा नरेन्द्र सिंह पटना के मुसलमान नबाब के उपशासक रामनारायण के साथ युद्ध करते हैं एवं उसमें महाराज नरेन्द्र सिंह अपने वीरता के बल पर विजयी प्राप्त करते हैं। उनसे परास्त होने के बाद नबाब मिथिला को कर्ज मुक्त कर देता है। इस नाटक का कथानक महाराज नरेन्द्र सिंह के अतुलित वीरता का परिचायक है, जो किसी मुसलमान से मिथिला को कर मुक्त करवाये हैं, एवं कंदर्पीघाट के ऐतिहासिकता भी सिद्ध होती है। यह नाटक वीर रस प्रधान नाटक है, इसीलिए सम्पूर्ण नाटक वीर रस से ओत-प्रोत है। अत: इस नाटक का लेखन

एवं नामांकरण मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं अनुकूल

(77)

माना जा सकता है।

"कंदर्पीघाट" नाटक में नाटककार ने नाट्य रूपक, भाव व्यंजकता, भीति आदि नाटकीय तथ्य का समावेश उत्कृष्ठता से किया है। इस नाटक के नायक धीरोदत्त वीर नरेन्द्र हैं। इस नाटक में अंक तीन है जो नाट्य रूपक के अनुसार नहीं है, एवं अन्य सभी लक्षण नाट्यरूपक नियम के अनुसार ही है। अत: इस नाटक में नाट्यरूपक, भाव व्यंजकता, भीति आदि का समावेश नाट्य लक्षण ग्रंथ अनुसार उपयुक्त माना जा सकता है।

"कंदर्पीघाट" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल एवं सुबोध भाषा का प्रयोग किया है जो अभिनय हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है। सभी पात्र के अनुकूल भाषा का प्रयोग कर नाटककार ने शब्द-संयोजन को स्वभाविक एवं पात्रोचित बनाने का प्रयास किया है। यह नाटक गद्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों ही रूप में लिखा गया है, जिसमें नाटककार ने सरल एवं सुबोध भाषा का प्रयोग कर प्रस्तुति परक एवं पात्रोचित बनाया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित, प्रस्तुति परक एवं साहित्यिक दृष्टिकोण से उपयुक्त माना जा सकता है।

"कंदर्पीघाट" नाटक के दृश्य-संयोजन में भी रंगमंचीय प्रस्तुति के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक दोनों रूप ही का समावेश कुशलता से किया गया है। एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने परिपक्ता से समावेश किया है। अत: इस नाटक का दृश्य-संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से किया है, जो उत्कृष्ट दृश्य विन्यास का परिचायक है।

"कंदर्पीघाट" नाटक में मुख्य पात्र महाराज नरेन्द्र एवं अन्य सभी पात्र का चरित्र-चित्रण नाटकीय कथानक के प्रसंगानुकूल पात्रोचित एवं स्वभाविकता को

ध्यान में रख कर चित्रित किया गया है। अत: इस नाटक का चरित्र-चित्रण अभिनेता एवं रंगमंच हेतु अनुकूल एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है।

“कंदर्पीघाट” नाटक में मुख्य कथानक ऐतिहासिक है, जिसमें नाटककार द्वारा उत्कृष्ठता से कल्पित कर आधुनिक रंगमंच के प्रस्तुति परक तथ्यों को समावेश कर प्रसांगिक बनाया है। अत: यह नाटक आधुनिक संदर्भ हेतु रंगमंच एवं साहित्यिक दृष्टिकोण से प्रसांगिक है।

“कंदर्पीघाट” नाटक में नाटककार द्वारा उत्कृष्ट कथोपकथन, चरित्र-चित्रण एवं प्रस्तुति परक नाटकीय तथ्यों का समावेश कर कंदर्पीघाट के ऐतिहासिक महत्व को रंगमंच एवं साहित्य के माध्यम से आधुनिक समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाना नाट्य लेखन का उदेश्य माना जा सकता है। अत: इस नाटक का उदेश्य कंदर्पीघाट के गौरवशाली इतिहास को रंगमंच एवं साहित्य के माध्यम से आधुनिक समाज के समक्ष प्रस्तुत करना माना जा सकता है।

“कंदर्पीघाट” नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल रचा गया है। अत: इस नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ अनुकूल उपयुक्त है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री राजेश्वर झा द्वारा लिखित नाटक “कंदर्पीघाट” आधुनिक ऐतिहासिक नाटक में ऐतिहासिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं रंगमचीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण एवं उत्कृष्ट है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य हेतु गौरव का विषय है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति है।

----

9. “शास्त्रार्थ” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“शास्त्रार्थ” नाटक नाटककार श्री राजेश्वर झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक लेखन काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन 26 जनवरी 1967 ई० में हुई है। अत: इस नाटक का लेखन काल 26 जनवरी 1967 ई० या उससे पहले माना जा सकता है।

“शास्त्रार्थ” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन अमरनाथ झा, प्रकाशन, रसुआर, सहरसा, प्रकाशन द्वारा 26 जनवरी 1967 ई० में प्रकाशित की गई है। यह नाटक तीन अंक में विभाजित की गई है, जिसमें दृश्यों की संख्या बारह है। इस नाटक में कुल बारह है, जिसमें स्त्री पात्र तीन और पुरुष पात्र नौ है। इस नाटक में नाटककार द्वारा शंकराचार्य, मंडन एवं भारती के बीच शास्त्रार्थ के विवरण को केन्द्रित कर लिखा है। प्रतिभासम्पन्न मीमांसाचार्य मंडन के विद्वता प्रभावित होकर से प्रसिद्ध अद्वैतवादी सन्यासी केरल-किशोर शंकराचार्य शास्त्रार्थ के लिए मिथिला आए। मंडन के गृहसेविका के मुख से मीमांसा की तथ्यपूर्ण उत्तर सुनकर शंकराचार्य विस्मय-विमुग्ध हो जाते हैं। मंडन और शंकराचार्य के साक्षात्कार होने के उपरांत शास्त्रार्थ की तैयारी होती है। शास्त्रार्थ में निर्णायक के रूप में वेद-वेदांग, इतिहास, गणित, धर्मशास्त्र आदि में प्रवीण मंडन विदुषी पत्नी भारती को नाटककार ने रखा गई है। भारती दोनों के गले में माला डालकर घोषणा करती है कि जिसके गले की माला शास्त्रार्थ के दौरान जाएगी वह पराजित माना जाएगा। कई दिनों तक शास्त्रार्थ चलता रहा। उसके उपरांत सर्व सर्वप्रथम मंडन के गले की माला सुखना शुरू हुआ, यह देख निर्णायक के रूप में भारती शंकराचार्य को विजय घोषित करती है और स्वंय शास्त्रार्थ प्रारम्भ कर देती है। भारती अपनी कौशलता से

शंकराचार्य को परास्त कर शर्त्तानुसार उनको साधु के वेश को त्याग कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करवाती है। उपर्युक्त प्रसंग को पृष्टभूमि में रखकर यह नाटक चित्रित किया गया है । इससे स्पष्ट हो जाता है कि इस नाटक का नामांकरण

कथानक के प्रसंगानुकूल उपयुक्त है। नाटककार ने इस नाटक में काल्पनिक प्रसंग को अत्यधिक समावेश किया है, जिसके कारण नाटक में ऐतिहासिक प्रसंग गौण पड़ गया है। अत: यह नाटक साहित्य के दृष्टिकोण से तो उपयुक्त है ही, साथ ही त्रुटि को गौणकर रंगमंच के दृष्टिकोण से भी उपयुक्त बनाया जा सकता है।

"शास्त्रार्थ" नाटक में नाटककार ने नाट्य रूपक सिद्धान्त का सस्वर अनुकरण किया है। नाटक में भाव व्यंजकता और रोचकता का अभाव दिख पड़ता है। अत: यह नाटक नाट्य रूपक सिद्धान्त के अनुकूल ही माना जा सकता है।

"शास्त्रार्थ" नाटक में नाटककार ने सरल एवं सुबोध भाषा का प्रयोग किया है, लेकिन स्थल-स्थल पर भाषा जनित त्रुटि भी दृष्टिगोचर होता है। इस नाटक में स्थल स्थल भाषा पर जनित त्रुटि प्रस्तुति हेतु उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। इस नाटक में गद्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों ही रूप में लिखा गया है, नाटकीय तथ्य के अनुकूल ही माना जा सकता है। अत: इस नाटक के शब्द-संयोजन में भाषा जितना उपयुक्त होना चाहिए वह नहीं है।

"शास्त्रार्थ" नाटक के दृश्य-संयोजन को नाटककार ने नाटकीय लक्षण के अनुकूल प्रस्तुति परक बनाने का प्रयास किया है। एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से समावेश किया है। इस नाटक के कथानक ऐतिहासिक होते हुए भी नाटककार ने दृश्य-संयोजन में काल्पनिक तथ्यों का समावेश प्रचुरता से किया है। अत: इस नाटक का दृश्य-संयोजन साहित्य के दृष्टिकोण से जितना उपयुक्त माना जा सकता है उतना प्रस्तुति के दृष्टिकोण से नहीं माना जा सकता है।

"शास्त्रार्थ" नाटक के चरित्र-चित्रण में नाटककार ने मुख्य पात्र को प्रसंगानुकूल उपयुक्त ढंग से चित्रित किया है। सभी पात्र का चरित्र-चित्रण प्रसंगानुकूल उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। इस नाटक में नाटककार द्वारा मंडन, शंकराचार्य एवं भारती के चरित्र-चित्रण में ऐतिहासिक के साथ ही काल्पनिक तथ्यों का समावेश

प्रसंगानुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है। अत: इस नाटक का चरित्र-चित्रण प्रस्तुति के दृष्टिकोण से अत्यधिक उपयुक्त नहीं माना जा सकता है।

"शास्त्रार्थ" नाटक के कथानक ऐतिहासिक होते हुए भी नाटककार ने अपने द्वारा कल्पित तथ्यों को समावेश कर प्रासंगिक बनाने का प्रयास सफल माना जा सकता है। अत: यह नाटक रंगमंच एवं साहित्य हेतु प्रासंगिक माना जा सकता है।

"शास्त्रार्थ" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण, कथानक, शब्द-संयोजन आदि के उपयुक्त है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने मातृभूमि मिथिला के विद्वता एवं ज्ञानवान व्यक्तित्व को साहित्य के माध्यम से आधुनिक समाज को जागृत करना है, जो नाटककार के नाट्य लेखन का उद्देश्य माना जा सकता है। अत: इस नाटक का उद्देश्य मिथिला के गौरवशाली व्यक्तित्व को आधुनिक समाज एवं साहित्य के समक्ष प्रस्तुत करना है।

"शास्त्रार्थ" नाटक के आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल है। अत:इस नाटक का आरंभ समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल ही है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री राजेश्वर झा द्वारा लिखित नाटक "शास्त्रार्थ" आधुनिक ऐतिहासिक नाटक में ऐतिहासिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं रंगमचीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य हेतु गौरव का विषय है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति है।

----

10. "विजेता विद्यापति" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"विजेता विद्यापति" नाटक नाटककार श्री कांचीनाथ झा 'किरण' द्वारा लिखा गया है। इस नाटक लेखन काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस नाटक के प्रथम मंचन 'मिथिला नाट्य कला परिषद' सरिसव द्वारा 1961 ई० में हुई है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1961 ई० या उससे पहले माना जा सकता है।

"विजेता विद्यापति" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, किरण साहित्य संस्थान, धर्मपुर लोहना रोड दरभंगा, प्रकाशन द्वारा 1972 ई० में प्रकाशित की गई है। यह नाटक तीन अंक में विभाजित की गई है, जिसमें दृश्यों की संख्या उन्नतीस है। इस नाटक में कुल सत्रह है, जिसमें स्त्री पात्र की संख्या चार और पुरुष की संख्या पात्र तेरह है। इस नाटक में मिथिला के लोकस्मृति को जगजाहिर करनेवाले महाकवि विद्यापति के जीवन की उस घटना को केन्द्रित कर लिखा गया है। जिसमें मिथिला के सीमा पर आक्रमण प्रसंग पठान युद्ध में बंदी बने कुमार शिवसिंह को अपने प्रतिभा कला के बल पर बंधन से मुक्ति दिलाकर दिल्ली से मिथिला लाते है। इस नाटक में नाटककार द्वारा समस्त क्रियाकलाप विद्यापति को विजेता प्रमाणित किया गया है, जो इस नाटक के नामांकरण "विजेता विद्यापति" रखे जाने को अनुकूल एवं उपयुक्त सिद्ध करता है। मिथिला- मैथिली के पुण्य प्रतीक विद्यापति के चारु-चरित से राष्ट्र और मानवता, समाज और व्यक्तित्व, भारतीयता और मैथिलीत्व सभी के सरस सामंजस्य इस नाटक के कलाकृति में अभिव्यक्त किये गये है। विद्यापति मात्र शास्त्र के ही ज्ञानी नहीं,

बल्कि कुशल शस्त्रज्ञभी थे। यही इस नाटक में नाटककार द्वारा सिद्ध किया गया है। विद्यापति के अन्तिम उद्देश्य था- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि चिर गरीयसी अर्थात मातृभूमि कि रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। कलम के सिपाही विद्यापति भी उपर्युक्त सिद्धान्त के आधार पर पराक्रमी योद्धा प्रमाणित होते है ।

अत: इस नाटक का लेखन में कथानक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त है, जो नाटकार के नाट्य लेखन के कुशलता का परिचायक है।

"विजेता विद्यापति" नाटक में नाट्य रूपक के सिद्धान्त का नाटककार ने सस्वर पालन किया है इस नाटक में भाव व्यंजकता और रोचकता हृदयग्राही एवं दर्शक को आकृष्ट करने में पूर्णरूपेण सफल माना जा सकता है। इस नाटक के नायक भी रूपक लक्षणानुसार ही है, लेकिन अंक विधान अनुकूल नहीं है। अत: इस नाटक में नाट्य रूपक सिद्धान्त के अंशत: अभाव के बाबाजूद अन्य सभी लक्षण अनुकूल है।

"विजेता विद्यापति" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार द्वारा सरल एवं सुबोध भाषा का प्रयोग किया गया है। इस नाटक में गद्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों ही रूप का बड़े कुशलता से किया गया है। इस नाटक के कथोपकथन में नाटककार द्वारा स्वभाविक एवं नाप-तौल कर शब्दों को संयोजित किया गया है, नाट्य लेखन के उत्कृष्टता का परिचायक है। अत: इस नाटक के शब्द-संयोजन एवं गद्य और पद्य का समावेश साहित्य एवं रंगमंचीय दृष्टिकोण से सहज और स्वभाविक है।

"विजेता विद्यापति" नाटक के दृश्य-संयोजन को भी नाटककार ने बड़े उत्कृष्टता एवं कुशलता से दर्शाया है। इस नाटक के सभी दृश्य प्रस्तुति परक एवं उपयुक्त है। एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध एवं सामंजस्ता प्रस्तुति हेतु

अनुकूल एवं सुदृढ़ है। अत: इस नाटक का दृश्य-संयोजन रंगमंचीय प्रस्तुति एवं नाट्य साहित्य के दृष्टिकोण से कुशल एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है।

"विजेता विद्यापति" में मुख्य पात्र का चरित्र-चित्रण धीरोदत्त नायक एवं वीर पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। इस नाटक में नाटककार विद्यापति के अभिनव पक्ष को चित्रित किया है। अभी तक विद्यापति का चरित्र-चित्रण भक्त रूप में किया गया है, लेकिन नाटककार ने सर्वप्रथम उनको विजेता के रूप में

चित्रित कर उनके चरित्र को नवीन साहित्यिक रूप दिया है। अन्य सभी पात्रों का चरित्र-चित्रण भी पात्रोचित एवं प्रसंगानुकूल अभिनयपयोगी है। अत: इस नाटक का चरित्र-चित्रण प्रसंगानुकूल साहित्य एवं रंगमंचीय दृष्टिकोण से अभिनेता एवं प्रस्तुति हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"विजेता विद्यापति" नाटक के कथानक ऐतिहासिक घटना पर आधारित है, लेकिन नाटककार ने प्राचीन कथावस्तु को नव विन्यास देकर स्वभाविक एवं मंचपयोगी बनाने हेतु के स्थल-स्थल पर आधुनिक तथ्यों को समावेश कर प्रासंगिक को उत्कृष्टता से दर्शाया है। अत: यह नाटक आधुनिक मैथिली रंगमंच हेतु प्रासंगिक है।

"विजेता विद्यापति" नाटक में विद्यापति को भक्त के रूप प्रस्तुत न करके विजेता के रूप में प्रस्तुत किया जाना नाटककार के नाट्य लेखन का उद्देश्य माना जा सकता है। अत: इस नाटक का उद्देश्य मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के माध्यम से आधुनिक समाज के समक्ष विजेता के रूप में प्रस्तुत करना माना जा सकता है।

"विजेता विद्यापति" नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री कांचीनाथ झा 'किरण' द्वारा लिखित

नाटक “विजेता विद्यापति” आधुनिक ऐतिहासिक नाटक में ऐतिहासिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं रंगमचीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य हेतु गौरव का विषय है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं अविस्मरणीय कृति में से एक है।

----

11. “राजा शिवसिंह” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“राजा शिवसिंह” नाटक नाटककार पं० श्री गोविन्द झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक लेखन काल को लेकर कोई स्पष्टत: समय सीमा नहीं वर्णित है। इस नाटक के प्रथम मंचन ‘तरूण नाट्य कला परिषद’ सरिसवपाही द्वारा 24 फरवरी 1971 ई० में हुई है। अत: इस नाटक का लेखन काल 24 फरवरी 1971 ई० या उससे पहले माना जा सकता है।

“राजा शिवसिंह” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, अरविन्द कुमार, 216 राजवंशीनगर, धर्मपुर पटना, प्रकाशन द्वारा 1973 ई० में प्रकाशित की गई है। यह नाटक नौ अंक में विभाजित की गई है, जो दृश्य रहित है। इस नाटक में कुल बारह है, जिसमें स्त्री पात्र नहीं है एवं सिर्फ पुरुष पात्र ही बारह है। इस नाटक के कथानक में राजा शिवसिंह के अंतिम युद्ध और पराजय के साथ तत्कालीन गृह-कलेश को केन्द्रित कर लिखा गया है। यह प्रसिद्ध है कि राजा पुरादित्य महाराज शिवसिंह के आदेश से राजा अर्जुनराय का हत्या कर देता है। राजा अर्जुन राय के पुत्र युवक होने पर प्रक्षिप्त नाम से प्रकट होकर अपने पिता के हत्या के प्रतिशोध लेने हेतु प्रस्तुत होता है। एक तरफ राजा शिवसिंह से मिलकर उनका विश्वास पात्र बनकर कुटनीतिपूर्वक सप्तश्रेष्ट से उनको मतांतर करवाकर तुलादान के हेतु प्रोत्साहित किए, दूसरे तरफ वह इब्राहिम शाह से मिलकर उचित अवसर पर

छलपूर्वक मिथिला पर आक्रमण करवाकर उनको पलायन हेतु विवश कर दिया। नाटककार ने चतुर सिंह के देशद्रोहिता को जिसतरह सूक्ष्म मनोविश्लेषण किया है, इसतरह का मैथिली साहित्य में विरल ही माना जा सकता है। अंत में देशद्रोहिता के कुपरिणाम का चित्र अंकित किया है, जो देशभक्ति-विषय के नैतिक आदर्श के ध्योतक है। भीमासिंह चित्रांकन कर नाटककार विलक्षण रीति से देश भक्ति प्रेम कि उदात्त चित्र प्रस्तुत किया है। उपर्युक्त विषय को इस नाटक के पृष्टभूमि में समावेश कर नाटककार ने बड़े उत्कृष्टता चित्रित किया है। पारिवारिक कलह पर

रहस्यात्मक ढंग से लिखा गया मैथिली का यह सर्वप्रथम नाटक है। इसीलिए रहस्यात्मक धटना का पाठक एवं दर्शक के समक्ष प्रस्तुत करने का श्रेय नाटककार ही दिया जा सकता है। इस नाटक के नामांकरण कथानक के अनुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है। अत: इस नाटक का लेखन साहित्य एवं रंगमंच के द्दष्टिकोण से नाटककार के उपयुक्त एवं उत्कृष्ट नाट्य चिंतन एवं लेखन के परिचायक है।

"राजा शिवसिंह" नाटक में नाटककार द्वारा नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ के सिद्धान्त के अनुकूल अंक विधान, नाटक के नायक आदि का समावेश उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है। इस नाटक में भाव व्यंजकता, रोचकता, आरभटि एवं अन्य नाटकीय तत्व का समावेश बड़े कुशलता से किया है। इस नाटक पर पारसी रंगमंच का प्रभाव भी स्पष्टत: द्दष्टिगोचर होता है। अत: यह नाटक नाट्य रूपक लक्षणानुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है, साथ ही पारसी नाटक के नाटकीय तत्व का समावेश भी उपयुक्त है।

"राजा शिवसिंह" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने रंगमंच एवं साहित्य दोनों द्दष्टिकोण का समावेश प्रसंगानुकूल स्वाभाविक और पत्रोचित किया है। इस नाटक में मैथिली भाषा का प्रयोग प्रसंगानुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है। चूँकि नाटककार संस्कृत भाषाविद् थे, इसीलिए स्थल-स्थल पर संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है। इस नाटक में नाटककार ने गद्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों

ही रूप को समावेश कर शब्द संयोजित किया है। इस नाटक में पारसी नाटक के अनुरूप गीत एवं दोहा को समावेश किया गया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन अभिनय, अभिनेता एवं साहित्य सभी दृष्टिकोण से उपयुक्त है।

"राजा शिवसिंह" नाटक में नाटककार द्वारा दृश्य-संयोजन में ऐतिहासिक घटना को बड़े निपुणता एवं रहस्यात्मकता से किया गया है। इस नाटक के सभी दृश्य रंगमंचीय प्रस्तुति एव साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है। इस

नाटक में एक दृश्य से दूसरे दृश्य अंतर संबंध एवं सामंजस्ता प्रस्तुति हेतु विशिष्टता का परिचायक है। अत: इस नाटक का दृश्य-संयोजन रंगमंच एवं साहिय के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट एवं विशिष्ट है।

"राजा शिवसिंह" नाटक के चरित्र-चित्रण में मुख्य पात्र का चित्रण ऐतिहासिक प्रसंगानुकूल किया गया है। विद्यापति के चरित्र-चित्रण में उनके वास्तविक व्यक्तित्व का उद्घाटन वस्तुत: इस नाटक में किया गया है। इस नाटक में एक भी स्त्री पात्र को नहीं रखा गया है, कियोंकि नाटककार श्री गोविन्द झा का कथन है कि मिथिला में अभिनेत्री का अल्पता देखकर जानकर इस नाटक को स्त्री पात्र रहित बनाए है। इस नाटक में विदुषक का चरित्र-चित्रण संस्कृत नाटक के अनुसार ही किया गया है। अत: इस नाटक में सभी पात्र का चरित्र-चित्रण रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"राजा शिवसिंह" नाटक के ऐतिहासिक प्रसंग को आधुनिकतावादी दृष्टिकोण को समावेश किया जाना आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच हेतु प्रसांगिकता को दर्शाता है। अत: इस नाटक में नव शिल्प एवं रहस्यात्मक दृश्यविन्यास का समावेश नाटक को आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं साहित्य हेतु प्रसांगिक बनाता है।

"राजा शिवसिंह" नाटक का उद्देश्य ओइनवार वंश के आंतरिक स्थिति को उद्घाटित करना है। अत: इस नाटक का उद्देश्य रंगमंच एवं साहित्य के माध्यम

से ओइनवार वंश के रहस्यात्मक घटना को आधुनिक समाज के समक्ष रखना माना जा सकता है।

"राजा शिवसिंह" नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि पं० श्री गोविन्द झा द्वारा लिखित नाटक "राजा शिवसिंह" साहित्य एवं रंगमंच हेतु अमूल्य एवं अविस्मरणीय कृति में से एक है।

12. "चन्द्रगुप्त" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"चन्द्रगुप्त" नाटक नाटककार श्री मोहन चौधरी द्वारा लिखा गया है। इस नाटक लेखन काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं हो सका है। इस नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1974 ई० में हुई है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1974 ई० या उससे पहले माना जा सकता है।

"चन्द्रगुप्त" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, मैथिली रंगमंच, 162/85/ए लेक गार्डेन्स कलकत्ता, प्रकाशन द्वारा 1974 ई० में प्रकाशित की गई है। यह नाटक तीन अंक में विभाजित की गई है, जिसमें दृश्यों की संख्या दस है। इस नाटक में कुल एग्यारह है, जिसमें स्त्री पात्र तीन और पुरुष पात्र आठ है। नाटककार ने इस नाटक के कथानक में इतिहास प्रसिद्ध चन्द्रगुप्त और महाराज नन्द को केन्द्रित कर लिखा है। महाराज नन्द जीवन की चरमोपलब्धि, ऐश्वर्य, एवं सुरा-सुन्दरी को समझते है, तथा चन्द्रगुप्त और मुरा को अवहेलना दृष्टि से देखते है। इस अपमान से चन्द्रगुप्त का धैर्य टूट जाता है, और उनके हृदय में प्रतिशोध की भावना जागृत होता है। इसीकारण वह राजमहल को परित्याग कर देते है।

महाराज नन्द जिस राजमहल में सुशोभित किये हुए है, उसका वास्तविक अधिकारी चन्द्रगुप्त है, किन्तु नन्द के स्वार्थ के वजह से यह सम्भव नहीं। हो पाता है। इधर कात्यायन के सभी बच्चे को हत्या कर दिया जाता है, जिस कारण उनके हृदय में भी प्रतिशोध की भावना जागृत होता है। कात्यायन और चन्द्रगुप्त मिलकर चाणक्य संग प्रतिशोध हेतु गुप्त मंत्रणा करतें हैं। इस योजना को कार्यान्वित करने हेतु चाणक्य को भी अपने पक्ष में शामिल करतें हैं। सभी एक स्थल पर मिलकर प्रतिशोध की भावना से कार्य करतें हैं। इसीलिए मलयाधिपति चन्द्रकेतु साथ मिलकर गुप्त मंत्रणा करतें हैं। इन्हीं के मिली भगत से मगध पर आक्रमण

करतें हैं। नन्द को हटा चाणक्य को उचित अधिकारी बनातें हैं। चन्द्रगुप्त को चाणक्य आदेश देते हैं कि नन्द का मुंडी काट के लाओ। चन्द्रगुप्त भयभीत हो जाते हैं, लेकिन आदेश का पालन तो करना ही पड़ता है। उपर्युक्त विषय-वस्तु को इस नाटक के कथानक पृष्टभूमि में रखकर यह नाटक लिखा गया है। इस नाटक में नाटककार ने ऐतिहासिक तथ्य को उपयुक्त नाटकीय तत्व मिलाकर प्रस्तुति दृष्टिकोण को विशिष्ट रूप से समावेश किया है, कियोंकि नाटककार एय अभिनेता भी है। अत: इस नाटक के नामांकरण कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं नाटक का विन्यास भी रंगमंच एवं साहित्य हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"चन्द्रगुप्त" नाटक को नाटककार ने नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ के सिद्धान्त को सस्वर समावेश किया है। इस नाटक में भाव व्यंजकता, रोचकता, आर्यभीति आदि नाटकीय तत्वों का समावेश कुशलता से किया है। अत: यह नाटक नाट्य रूपक एवं नाटकीय तत्वों का समावेश रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण के बड़े ही उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"चन्द्रगुप्त" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल, सुबोध एवं पात्रोचित भाषा को समावेश कर प्रस्तुति हेतु विशिष्टता देने का प्रयास किया है। इस नाटक के कथोपकथन एवं भाषा शैली को नाटककार ने सरल, स्वभाविक एवं पात्रोचित बनाने का प्रयास कुशलता से किया है। इस नाटक में गद्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों ही का उपयुक्त रूप से समावेश नाटककार के कुशल नाट्य चिंतन के परिचायक है। अत: इस नाटक में शब्द-संयोजन अभिनेता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से बड़े ही उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है।

"चन्द्रगुप्त" नाटक में दृश्य-संयोजन को नाटककार ने रंगमंच, अभिनय एवं

साहित्य दृष्टिकोण के औचित्य को सस्वर पालन किया है। इस नाटक में एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध एवं सामंजस्ता तथ्यगत एवं उपयुक्त है। अत: इस नाटक के सभी दृश्य प्रस्तुति परक एवं उपयुक्त है।

"चन्द्रगुप्त" नाटक में सभी पात्रों का चरित्र-चित्रण प्रसंगानुकूल एवं स्वभाविक है। इस नाटक के मुख्य पात्र चन्द्रगुप्त का चित्रण धीरोदत्त नायक रूप में उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है। अत: इस नाटक का चरित्र-चित्रण रंगमंच एवं साहित्य हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है।

"चन्द्रगुप्त" नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी नाटककार ने काल्पनिक तथ्यों को समावेश किया है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु प्रासंगिक माना जा सकता है।

"चन्द्रगुप्त" नाटक लेखन का मुख्य उद्देश्य इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तित्व चन्द्र गुप्त को मैथिली नाटक में समावेश कर मैथिली रंगमंच हेतु गौरवशाली इतिहास के

माध्यम से आधुनिक समाज को जागृत करना माना जा सकता है। अत: इस नाटक का उद्देश्य इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तित्व चन्द्र गुप्त को मैथिली नाट्य साहित्य में समावेश कर गौरवशाली इतिहास को आधुनिक समाज के समक्ष रखना हैं।

"चन्द्रगुप्त" नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि श्री मोहन चौधरी द्वारा लिखित नाटक "चन्द्रगुप्त" मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु गौरव का विषय है।

----

13. "मालिनी" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"मालिनी" नाटक नाटककार डॉ० उदयकान्त मिश्र द्वारा लिखा गया है। इस नाटक लेखन काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं हो सका है। इस नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1973 ई० में हुई है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1973 ई० या उससे पहले माना जा सकता है।

"मालिनी" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, अंबिका प्रकाशन मंदिर, सोती सलमपुर, पोस्ट-परोदिया, जिला-समस्तीपुर, प्रकाशन द्वारा 1973 ई० में प्रकाशित की गई है। यह नाटक पाँच अंक में विभाजित की गई है, जिसमें दृश्यों की संख्या पच्चीस है। इस नाटक में कुल चौबीस है, जिसमें स्त्री पात्र आठ और पुरुष पात्र सोलह है। इस नाटक के केंद्र बिन्दु उदयन, योगन्धारायण, वासवदत्ता एवं पद्मावती के प्रसिद्ध आख्यान पर आधारित है, जिसमे नाटककार ने भारत के

संघीय एकता के समर्थन के संबंध को उत्कृष्टता से समावेश करने का प्रयास किया है। इस नाटक के नायक उड्डयन है, जो भारतीय अखंडता के प्रतीक सम्राट रूप मे अपने को प्रतिष्ठित करवाने हेतु दृढ़प्रतिज्ञ है। इसी उद्देश्य को पूर्ति करने हेतु वह प्रधानामात्य योगंधरायण के अखण्ड भारत के महान उद्योक के हेतु आह्वान करते हैं। उदयन के एक मात्र आकांक्षा है कि सम्पूर्ण आर्यावर्त में एक संघिए शासन हो। राजा का आकांक्षा पूर्ति हेतु योगंधरायण महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते है इस नाटक कथानक इन्हीं उपर्युक्त तथ्य को केन्द्रित कर लिखा गया है। इस नाटक घटनाक्रम को नाटककार ने इस रूप में संयोजित किया है कि वासवदत्ता उदयन की अर्धांगनी है, किन्तु अपने आप को इस रूप में प्रकट करती है कि जैसे दोनों में किसी कारणवश वैमनस्ता है। इसके परिणाम स्वरूप मगध

कुमारी पद्मावती उदयन के कनिष्ठा पत्नी के रूप मे घोषित होती है, जिसमें वासवदत्ता मालिनी वेश धारण करके महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। इसके फलस्वरूप उदयन आर्यावर्त के नरेश के रूप मे घोषित होते है। वासवदत्ता ने मालिनी वेश को धारण करके उदयन के उद्देश्य को पूर्ण करती है। इस नाटक का नामांकरण कथानक अनुकूल उपयुत्त है। यह नाटक साहित्यिक दृष्टिकोण से उपयुक्त है लेकिन रंगमंचीय दृष्टिकोण से नहीं माना जा सकता है। अत: यह नाटक आधुनिक मैथिली साहित्यिक दृष्टिकोण से उपयुक्त है, लेकिन रंगमंचीय दृष्टिकोण से नहीं माना जा सकता है।

"मालिनी" नाटक में नायक, नायिका नाट्य रूपक सिद्धान्त के अनुसार अनुकूल है एवं अंकविधान भी नाट्य रूपक के अनुकूल ही है। भाव व्यंजकता रोचकता का अभाव नाटक में रंगमंचीय दृष्टिकोण से अनुकूल नहीं है। संस्कृत के

सुप्रसिद्ध ‘मुद्राराक्षस’ नाट्य परम्परा का मौलिक राजनीति नाट्य रूपक का मैथिली में नितांत अभाव था, जिसकी भरपाई नाटककार ने इस नाटक से बहुत दूर हुआ है। अत: इस नाटक में नाट्य रूपक लक्षण को नाटककार ने उपयुक्त ढंग से समावेश किया है, लेकिन भाव व्यंजकता एवं रोचकता का अभाव है।

“मालिनी” नाटक के शब्द-संयोजन में पात्रोचित नाटक के विशिष्टता माना जा सकता है। नाटक में गद्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों ही रूप का समावेश संस्कृत नाटक के अनुसार ही किया गया है। अत: इस नाटक में शब्द-संयोजन साहित्य एवं रंगमंच के अनुकूल है।

“मालिनी” नाटक के मुख्य विशेषता दृश्य-संयोजन की संतुलित संघटन ही माना जा सकता है, जिसमे राजनीतिक घटनाक्रम के संगति बड़े उपयुक्त तरीके से

निष्पादित करने में नाटककार पूर्णरूपेण सफल है। इस नाटक में एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध एवं समंजस्ता को उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ रूप से दर्शाया गया है। इस नाटक में रंगमंचीय दृष्टिकोण से दृश्य-संयोजन में अभाव है। अत: इस नाटक में दृश्य-संयोजन कथानक के प्रसंगानुकूल साहित्यिक दृष्टिकोण से उपयुक्त है, लेकिन रंगमंचीय दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं माना जा सकता है।

“मालिनी” नाटक के चरित्र-चित्रण प्रसंगानुकूल उपयुक्त है, लेकिन रंगमंचीय दृष्टिकोण से कई जगह उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। इस नाटक के चरित्र चित्रण में मनोविश्लेषण एवं संघर्ष का अभाव है, जिसके वजह से रंगमंचीय हेतु उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। इस नाटक में त्रुटि को दुर कर रंगमंच हेतु उपयुक्त बनाया जा सकता है। अत: इस नाटक में चरित्र-चित्रण प्रसंगानुकूल एवं

साहित्यिक दृष्टिकोण से उपयुक्त है एवं रंगमंचीय दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं माना जा सकता है।

"मालिनी" नाटक के कथानक ऐतिहासिक होते हुए भी नाटककार ने जन-जन में राष्ट्रीयता के भावना को समावेश कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जो नाटक को आधुनिक मैथिली साहित्य हेतु प्रासंगिक बनाता है। राष्ट्र का प्रति प्रेम भावना जागृत करने से ही राष्ट्रीयता का विकास संभव है। राष्ट्र का तभी संभव है, जब राष्ट्रीयता की भावना जन जन के ह्रदय में समावेश हो किसी राष्ट्र को खंड खंड कर देने से वही विध्वंस का कारण बन जाता है। जब राष्ट्र एक सूत्र में बंधे होते हैं, तभी वह समृद्ध शाली राष्ट्र के गरिमा को प्राप्त करते है। इस ऐतिहासिक तथ्यों का समावेश नाटक को आधुनिक संदर्भ हेतु प्रासंगिक बनाता है। अत: यह नाटक मैथिली सामाजिक हेतु प्रासंगिक है।

(94)

"मालिनी" नाटक के कथानक ऐतिहासिक है, फिर भी इसमे राष्ट्रीयता एवं भारतीय सांस्कृतिक चेतना को उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ रूप मे समावेश किया जाना नाटककार के नाट्य लेखन के उद्द्श्य को दर्शाता है। अत: इस नाटक का उद्देश्य ऐतिहासिक प्रसंग को राष्ट्रवादी भावना एवं भारतीय सांस्कृतिक चेतना को मैथिली साहित्य के माध्यम से आधुनिक समाज के समक्ष प्रस्तुत करना माना जा सकता है।

"मालिनी" का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल उपयुक्त है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार डॉ० उदयकान्त मिश्र द्वारा लिखित नाटक "मालिनी" आधुनिक ऐतिहासिक नाटक में ऐतिहासिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं

रंगमचीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु गौरव का विषय है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति है।

भाग-3

राजनीतिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक का

प्रलेखन
एवं विश्लेषण

(96)

राजनीतिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक

जिस तरह पुराण से संबंधित कथ्य को लेकर आधुनिक कथ्य के पौराणिक नाटक एवं इतिहास से संबंथित कथ्य को लेकर आधुनिक कथ्य के ऐतिहासिक नाटक लिखे गए है, वैसे ही राजनीति से संबंधित कथ्य को लेकर राजनीतिक नाटक भी लिखे गए हैं जिसको आधुनिक कथ्य के राजनीतिक नाटक कहे जाते है। मिथिला क्षेत्र में हो रही राजनीतिक उथल-पुथल से मैथिली नाटककार भी प्रभाभित हुए। अत: उन्होने अपने नाट्य रचना में राजनीतिक कथानाक को समावेश कर न रचना किए।

साहित्यकार जब जिस तरह का माहौल होता है उससे प्रभावित होते है। 1885 ई० मे जब काँग्रेस संस्था की स्थापना हुई, इससे भारतीय राजनीतिक रंगमंच पर अनेकों दृश्य सामने उभरकर आए और इस तरह के राजनीतिक दृश्यो का प्रकाष्ठा 1942 ई० के आंदोलन में प्रदर्शित हुआ। कई जगह पुल तोड़ा गया, तार काटे गए, थाना, डाकखाना, कचहरी आदि लुटा गया। भारतीय राजनीतिक में उथल-पुथल से भारतीय साहित्य भी प्रभावित हुआ। भारतीय राजनीतिक के इस उथल-पुथल का प्रभाव मिथिला क्षेत्र पर भी पड़ा, जिसके फलस्वरूप मैथिली साहित्य भी इस तरह के राजनीतिक विषय से अलग नहीं रह पाया। अत: मैथिली में भी राजनीतिक कथ्य को लेकर नाटक लिखने की परंपरा लिखने का आरंभ हुआ। मिथिला क्षेत्र में राजनीतिक उथल-पुथल अधिक नहीं हो पाया, इसी कारण इस विषय को लेकर अधिक संख्या में मैथिली नाटक नहीं लिखा गया है।

अत: शोध अध्ययन में जिस लिखित और प्रकाशित राजनीतिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक को वर्णित किया गया है, मुख्यत: तीन नाटक ही उपलब्ध

है। जिन तीन नाटकों का प्रलेखन एवं विश्लेषण किया गया है, वह नीचे वर्णित हैं :---

नाटक	लेखक
1. फ़ेरार	श्री शारदानन्द झा
2. वीरचक्र	श्री सुरेन्द्र प्रसाद सिन्हा
3. खट्टर काका चीन में	श्री कपिल प्रभाकर

----

1. “फेरार” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“फेरार” नाटक नाटककार श्री शारदानन्द झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक के लेखनकाल को लेकर को स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन इसमें 1942 ई० के आंदोलन को कथ्य में समावेश किया गया हैं। इस नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन 1950 ई० में हुई है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1950 ई० या 1950 ई० से पहले एवं 1942 ई० बाद तक माना जा सकता हैं।

“फेरार” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, तीरभुक्ति पब्लिकेशन, 1 सर पी० सी० बनर्जी रोड इलाहाबाद, प्रकाशक द्वारा 1950 ई० में प्रकाशित की

गयी है। इस नाटक को नाटककार ने तीन (3) अंक में विभाजित किया हैं, जिसमें दृश्यों की संख्या सत्रह (17) है । इस नाटक में कुल पात्रों की संख्या बाईस (22) है, जिसमें पुरूष पात्र की संख्या एक्कीस (21) एवं स्त्री पात्र की संख्या एक है। इस नाटक में अत्यधिक होने के कारण मंचन हेतु उत्कृष्ट नहीं माना जा सकता है। इस नाटक के कथानक सन 1942 ई० के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम एवं मिथिला क्षेत्र में इस आंदोलन का प्रभाव को केन्द्रित कर लिखा गया है। नाटककार ने इस नाटक के विषय-वस्तु में 1942 ई० के भारतीय स्वातंत्र। संग्राम के दौरान ब्रिटिश सरकार के दमनकारी नीति के फलस्वरूप मिथिला क्षेत्र की चार प्रबल क्रांतिकारी व्यक्ति - अनूप, शशिधर, शोभा तथा मुनरक का आंदोलन में भाग लेकर स्थल-स्थल पर विद्रोह और इसके फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार के प्रतिशोध की अग्नि के ज्वाला में जलने के कारण डर से फ़ेरार जीवन व्यतीत करने से संबंधित कथ्य को समावेश किया गया है। इस नाटक का नाम "फ़ेरार" रखा जाना कथ्य के अनुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है। इस नाटक के कथानक में मिथिला क्षेत्र में 1942 ई० आंदोलन के दौरान मैथिल द्वारा इस आंदोलन को अत्यधिक प्रोत्साहन एवं अपने जान की बाजी लगाकर अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र करवाने की अभिलाषा से स्थल-स्थल पर   ब्रिटिश शासन के बिरुद्ध बगाबत के

(99)

चित्रण को नाटककार ने बड़े कुशलता से समावेश किया है। इस नाटक में स्थल-स्थल पर रेलवे स्टेशन, पोस्टऑफिस, एवं थाना को लुटा जाना का लुटा जाना, ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वतन्त्रता सेनानी की विरुद्ध कानूनी कारवाई कर हिराशत में बंद किया जाना, ब्रिटिश शासन द्वारा सभी प्रयास असफल हो जाना, मुख्य चारों फ़ेरार को अदालत में मजिस्ट्रेट के सामने किए जाना की विचार के फलस्वरूप पुलिस द्वारा घुश मांगने पर विरोध किया जाना एवं अंततः कालापानी का सजा और जुर्माना किया जाना को समावेश करते हुए नाटक का समापन को चित्रित करने में नाटककार ने अपने कुशल नाटय लेखन का परिचय दिया है।

नाटककार ने इस नाटक को तीन अंको में बिभाजित किया है, किन्तु नाटक के अध्ययन से यह स्पष्टत: ज्ञात होता है कि इसके विषय-वस्तु में संकीर्णता है, अगर इस नाटक को एकांकी रूप में लिखा जाता तो विशेष रोचक होता। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का लेखन साहित्य के दृष्टिकोण से जितना उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है, उसके अपेक्षाकृत रंगमंचीय दृष्टिकोण से नही माना जा सकता है।

"फेरार" नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रूपक सिद्धयांत को अनुकरण करने के साथ ही फारसी नाटक एवं पाश्चात्य नाटक के लेखन के सिद्धयांत को भी अनुकरण किया है। इस नाटक का अंकविधान संस्कृत नाट्य रूपक सिधयंत के अनुकूल उपयुक्त है। इस नाटक में नाटककार ने व्यंजकता का समावेश कुशलता से करने का प्रयास किया है, लेकिन रोचकीयता का अभाव प्रतीत होता है। अन्य सभी नाटकीय तथ्य का समावेश नाटककार ने अपने नाट्य लेखन में बड़े कुशलता से किया है। अत: इस नाटक के लेखन में संस्कृत नाट्य रूपक, फारसी नाटक एवं पाश्चात्य नाटक के सिद्धयांत सभी का समावेश साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है।

"फेरार" नाटक में नाटककार ने साहित्यक मैथिली भाषा का प्रयोग अत्यधिक किया है, जो किलिष्टता का परिचायक है। इस नाटक में पात्रो के संवाद और

व्यवहार को नाटककार ने वास्तविक रूप में वर्णित करने का प्रयास किया है। इस नाटक के नाटक का शब्द-संयोजन में नाटककार ने गद्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों ही रूप का समावेश बड़े कुशलता से किया है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का शब्द-संयोजन नाटक के कथानक के अनुकूल एवं पात्रोचित लिखा जाना साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उपयुक्त माना जा सकता है।

"फ़ेरार" नाटक के दृश्य संयोजन में एक दृश्य से दूसरे दृश्य का अंतर संबंध को नाटककार ने जिस विचारधारा का समावेश करने का प्रयास किया है, वह

जितना उपयुक्त है उसके अपेक्षाकृत उत्कृष्ट नहीं है। इस नाटक के दृश्य संयोजन में कहीं कहीं अंतर संबंध में सामंजस्ता का अभाव है। इस नाटक का दृश्य रंगमंचीय छोटी सी परिधि में समावेश किया जाना मुश्किल है। इस नाटक के दृश्य संयोजन में 1942 ई० के आंदोलन की विशालता का हर संभव समावेश करने का प्रयश नाटककार ने किया है। इस नाटक में एक दृश्य से दूसरे दृश्य के बीच की सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से समावेश करने का प्रयास किया है। इस नाटक का दृश्य संयोजन रंगमंचीय दृष्टिकोण से उतना उपयुक्त नहीं है जितना की सिनेमा की दृष्टिकोण से है। अत: इस नाटक का दृश्य संयोजन साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है, उसके अपेक्षाकृत रंगमंचीय दृष्टिकोण से नहीं माना जा सकता है।

"फ़ेरार" नाटक में नाटककार ने सभी पात्रो का चरित्र चित्रण में विशेष रूप से सजग रहने का प्रयास किया है। इस नाटक में चार प्रबल क्रांतिकारी वक्ती अनूप, शशिधर, शोभा तथा मुनरक का चरित्र चित्रण मुख्य पात्र के रूप में चित्रित किया गया है नाटककार ने नाटक के चारों पात्र में से अनूप बाबू का चरित्र को आदर्श पात्र के रूप में न दर्शाकर चरित्र में दुर्बलता, कष्ट झलने की अनिच्छा तथा दृढ़ता के अभाव को दर्शाया है। शोभा का चरित्र चित्रण में घर का जलना. लोग के बीच बेइज्जती को झेलना, लोग द्वारा दुत्कारा जाना इस सभी का समावेश इस सभी को शोभा द्वारा झेलना इस पात्र को आदर्श पात्र के रूप में चित्रण किया जाना को

सिद्ध करता है। इस नाटक में नाटककार ने सबसे अत्यधिक क्रांतिकारी के रूप में मुनरक के चरित्र को चित्रित किया है। मुनरक के चरित्र चित्रण को क्रांतिकारी द्वारा किए गए सभी विद्रोह में मुख्य क्रांतिकारी के रूप में चित्रित किया है। अन्य सभी पात्रो का चरित्र चित्रण को भी नाटककार ने प्रसंगा नुकुल चित्रित करने का प्रयास कुशलता से किया हैं। नाटककार द्वारा सभी पात्रो का चरित्र चित्रण ने पात्र के एक ही अंश पर प्रकाश डाला गया है, अर्थात इस नाटक के चरित्र चित्रण में नाटककार ने पात्र के जीवन के थोड़े बहुत प्रसंग को ही समावेश किया गया है।

अत: इस नाटक के चरित्र चित्रण साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से जितना उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है उसके अपेक्षा कृत अभिनेता एवं अभिनय के दृष्टिकोण से नहीं माना जा सकता है।

"फेरार" नाटक के लेखन में भाषा दृश्य संयोजन चरित्र चित्रण आदि को भारतीय आज़ादी के लिए किए गए 1942 ई० के आंदोलन के प्रसंग को समावेश किया जाना ही इस नाटक के प्रासंगिकता को दर्शाता है। मैथिली नाटक में प्रथम राजनैतिक नाटक के रूप में इस नाटक को लिखा जाना भी नाटक के प्रासंगिकता को पूर्णत: सिद्ध करता है। इस नाटक के कथ्य में आधुनिक भारतीय राजनैतिक विषय वस्तु का समावेश एवं अन्य नाटकीय तथ्यो का प्रसंगानुकूल समावेश बड़े कुशलता से किया गया है, जो इस नाटक के प्रासंगिकता पूर्णत: सिद्ध करता है। अत: इस नाटक में आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से प्रासंगिकता का समावेश उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है।

"फेरार" नाटक के लेखन का उद्देश्य नाटककार द्वारा नाटक लेखन के सम्बन्ध प्रकाशित नाटक "फेरार" में लिखे गये उनके निम्न वाक्य स्पष्टत: हो जाता है:---

"हमर मित्र लोकनिक फरमाइस छल जे नाटक राजनीतिक हो। एहि हेतु हम एहि नाटकक विषय 1942 ई० के क्रांति तथा पछाति ब्रिटिश गवर्मेन्टक दमनकारी

राखल गेल अछि। परंच तें कोनो व्यक्ति विशेषक चित्रण बुझबाक चाही। हमर दृष्टिकोण केवल जनताक उग्ररूप तथा ताहिना ब्रिटिश गवर्मेन्टक नादिरशाही मात्र अछि। स्वतन्त्रता प्राप्त करबा में कतबा उत्साह, सत्य वा असत्य छल, कतबा बुढ़लोकनिक समालोचना से सब देखाओल अछि"। ["फेरार" नाटक लेखक वक्तव्य, पृष्ठ-1]

अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का उद्देश्य मैथिली में राजनीतिक नाटक लिखा जाना है।

"फेरार" नाटक का आरंभ संस्कृत नाट्य सिद्धान्त के अनुकूल एवं समापन पाश्चात्य नाटक के अनुकूल माना जा सकता है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक के आरंभ और समापन में संस्कृत एवं पाश्चात्य नाटक को समावेश कर लिखा गया है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री शारदानन्द झा द्वारा लिखित नाटक "फेरार" प्रथम राजनैतिक कथ्य आधुनिक मैथिली नाटक है। यह नाटक आधुनिक राजनैतिक नाटक में रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से अतिमहत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य हेतु गौरव का विषय है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अमूल्य एवं अविस्मरणीय कृति है।

----

2. "वीरचक्र" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"वीरचक्र" नाटक नाटककार श्री विद्यानाथ राय द्वारा लिखा गया है। इस नाटक लेखन काल को लेकर कोई स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन इस नाटक के प्रथम संस्करण 1964 ई० प्रकाशित में हुई है। इस नाटक के कथानक अक्टूबर 1962 ई० में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण की घटना को केन्द्रित लिखा

गया है। अत: इस नाटक के लेखन काल 1964 ई॰ या इससे पहले अक्टूबर 1962 ई॰ के बीच माना जा सकता है।

"वीरचक्र" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, देवेन्द्र प्रकाशन, बलहा (पुरानानकार) पोस्ट-थरमा, जिला-मुजफ्फरपुर प्रकाशक द्वारा 1964 ई॰ प्रकाशित की गयी है। इस नाटक को नाटककार द्वारा कुल चार (4) अंकों में विभाजित किया गया है, जिसमें दृश्यो की संख्या दस (10) है। इस नाटक में कुल पात्र बाईस (22) है, जिसमें स्त्री पात्र छ: (6) और पुरुष पात्र सोलह (16) है। इस नाटक के कथानक 1962 ई॰ में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण की घटना को केंदित कर लिखा गया है। 1962 ई॰ के अक्टूबर चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। भारतीय सेना ने पूर्णरूपेण विरोध किया तथा देश की स्वतन्त्रता को रक्षा करने के लिए अनेक व्यक्ति अपना जीवन का बलिदान दिया। भारतीय जवान के रक्त टीका से हिमवान की रजत शीश रंजित हो गया। ऐसे समय में भला साहित्य कैसे वंचित रहता साहित्यकारों में भी देश प्रेम की भावना का लहर उठा। जिस प्रकार देश की गौरव के रक्षा के लिए कर्मठ सिपाही बंदूक उठाता है, उसी प्रकार साहित्यकार अपने क्रांतिकारी रचना के माध्यम से बारूद भरने का कार्य करते हैं। इससे मैथिली साहित्य भी प्रभावित हुआ और "वीरचक्र" नाटक इसी प्रभाव का प्रतिफल है। इस नाटक में ऐसे कर्मठ नरेन्द्र नामक सिपाही का चर्चा किया गया

है, जो अपने नव विवाहिता अर्धांगिनी को उपेक्षा कर देश हित में मृत्यू की अपेक्षा करता है। नरेन्द्र की अर्धांगिनी मनोरमा के तन, मन, प्राण के कण-कण स पुरुष को पौरुषत्व प्रधान करता है। इस नाटक में नाटककार द्वारा नरेन्द्र और मनोरमा के जीवन गाथा को नाटक के पृष्टभूमि में रखकर लिखा गया है, जो देश की सीमा पर सुरक्षा के लिए अपने प्राण का बलिदान कर देते हैं। यह नाटक चीनी आक्रमण

के पृष्टभूमि पर राष्ट्रीयता का परिचायक वीर रस परिपूर्ण है साथ ही अन्त में करुण रस का समावेश हृदयविदारक है। नरेन्द्र के वीरता का उपहार के रूप में वीरचक्र प्राप्त होता है, इसलिए इस नाटक का नाम “वीरचक्र” “वीरचक्र” रखा गया है, जो कथानक के अनुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का लेखन साहित्य के दृष्टिकोण से जितना उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है, अपेक्षाकृत रंगमंचीय से नहीं है।

“वीरचक्र” नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रुपक सिद्धयांत का सस्वर अनुकरण न करते हुए पाश्चात्य नाटक के सिद्धयांत का भी अनुकरण किया गया है। इस नाटक में अंकविधान नाट्य रूपक सिद्धयांत के अनुकुल उपयुक्त है। इस नाटक में भाव व्यंजकता, आर्यभीति, रोचकता आदि नाटकीय तत्वों को नाटककार ने हरसंभव समावेश करने का प्रयास किया है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक एवं पाश्चात्य नाटक दोनों का प्रभाव स्पष्टत: दिखाई पड़ता है जो रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त है।

“वीरचक्र” नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार द्वारा सरल भाषा का प्रयोग नाटकीय कुशलता का परिचायक है। इस नाटक में भाषा का प्रयोग पत्रोचित एवं प्रसंगानुकूल कुशलता से किया गया है। इस नाटक के मध्य में मंत्री एवं जेनरल

द्वारा एक स्थल पर हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है तथा अन्य स्थल पर मैथिली भाषा का प्रयोग किया गया है, जो कृत्रिमता को दर्शाता है। इस नाटक में पत्रोंचित अभिव्यक्ति एवं संवाद जो नाटक का प्राण है को नाटककार ने कुशलता से समावेश किया है। इस नाटक में कहीं-कहीं संवाद बहुत बड़ा है, जो भाषण के तरह प्रतीत होता है। इस नाटक में सरल भाषा का प्रयोग किया गया है, लेकिन

कई स्थान पर पात्र एवं प्रसंग के अनुकूल उपयुक्त भाषा का न प्रयोग किया जाना नाट्य लेखन में त्रुटि का परिचायक है। इस नाटक में अधिकांश संवाद गद्यात्मक है एवं कहीं-कहीं पद्यात्मक भी है। अत: यह माना जा सकता है कि कुछ त्रुटि को अगर दूर कर दिया जाय तो इस नाटक का शब्द-संयोजन साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"वीरचक्र" नाटक के दृश्य में नाटककार द्वारा एक दृश्य से दूसरे दृश्य के बीच अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने बड़े कुशलता समावेश करने का प्रयास किया है। सभी दृश्यों को नाटकीय तथ्य के अनुकूल क्रमबद्धता प्रदान करने का नाटककार द्वारा हर संभव प्रयास किया गया है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का दृश्य-संयोजन साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"वीरचक्र" नाटक के चरित्र-चित्रण में मुख्य पात्र नरेन्द्र और मनोरमा का चित्रण विरोचित रूप में किया गया है, जो मैथिल ही नही अन्य देश भक्त युवक एवं युवती हेतु भी प्रेरणादायक है। इस नाटक में नरेन्द्र कि अर्धांगिनी मनोरमा के चरित्र-चित्रण आदर्श पात्र के रूप में किया गया है, जो अपने शृंगार, अलंकार एवं विवाहिता की जीवन को त्याग कर पुरुष में पौरुषत्व प्रदान करता है। इस नाटक में

मनोरमा को आदर्श पात्र के रूप में चित्रित करने के प्रयास में नाटक तथ्य के अनुसार भूमि से दूर होता प्रतीत होता है। इस नाटक में सभी पात्र के चरित्र-चित्रण में पात्रोचित अभिव्यक्ति को नाटककार ने बड़े कुशलता से समावेश किया है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का चरित्र-चित्रण साहित्य, रंगमंच एवं अभिनेता के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"वीरचक्र" नाटक में कथानक, दृश्य-संयोजन, सबद-संयोजन, चरित्र-चित्रण आदि दृष्टिकोण से प्रासंगिक है। इस नाटक के सम्बन्ध में सुधाकर झा 'शास्त्री' द्वारा लिखे गए निम्न वाक्य से नाटक कि प्रासंगिकता स्पष्टत: प्रदर्शित होता है:---

" 'वीरचक्र' नामक मौलिक नाटक में देशभक्तितथा आदर्श भारतीय नारी के चित्र उपस्थित करबा में युवक लेखक अपन कवि कल्पना शक्ति एवं वर्णन क्षमता के पूर्ण परिचय दैत अछि। एहि में वीर आ करुण रसक समन्वय पाठक हेतु हृदयग्राही भेल अछि।"

अत: यह पूर्णरूपेण माना जा सकता है कि यह नाटक आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से प्रासंगिक है।

"वीरचक्र" नाटक का उद्देश्य भारत पर चीनी आक्रमण को कथानक में समावेश कर नाटक के माध्यम से देशभक्ति एवं राष्ट्रियता की भावना को जागृत करना है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का उद्देश्य देशभक्ति एवं राष्ट्रियता कि भावना को दर्शना है।

इस नाटक के आरंभ और समापन में संस्कृत नाट्य लेखन सिद्धयांत का

पालन न करते हुए पाश्चात्य नाटक के सिद्धयांत का अनुकरण किया गया है। अत: इस नाटक का आरंभ और समापन पाश्चात्य नाटक के सिद्धयांत का अनुकरण किया गया है।

अंतत: राजनैतिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटक "वीरचक्र" नाटककार श्री सुरेन्द्र सिन्हा द्वारा लिखित उपयुक्त एवं उत्कृष्ट रचना है। यह नाटक आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति है।

3."खट्टर काका चीन में" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"खट्टर काका चीन में" नाटक नाटककार श्री कपिल प्रभाकर द्वारा लिखा गया है। इस नाटक काल को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस नाटक के प्रथम संस्करण 1967 ई० में प्रकाशित हुई है एवं 1962 ई० के चीनी आक्रमण की घटना को कथानक में समावेश कर लिखा गया है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1967 ई० या 1962 ई० के बाद एवं 1967 ई० से पहले तक माना जा सकता है।

"खट्टर काका चीन में" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, राजभारती, सत्य निकेतन, मटरस, पोस्ट-पिरोजगढ़, दरभंगा, प्रकाशक द्वारा 1967 ई० में प्रकाशित की गयी है। इस नाटक चार(4) अंकों में विभाजित किया गया है, जिसमें दृश्यों की संख्या बाईस (22) है। इस नाटक में कुल पात्र एक्कीस(21) है, जिसमें स्त्री पात्र चार(4) एवं पुरुष पात्र सत्रह(17) है। इस नाटक के कथानक भी 1962 ई० में भारत पर चीनी आक्रमण की घटना को केन्द्रित कर लिखा गया है। नाटक इस नाटक में मैथिली प्रेमी के चिरपरिचित 'खट्टर काका'को चीनी आक्रमण की घटना को आधुनिकता एवं राष्ट्रीयता वादी विचारधारा को कथानक में समावेश कर बड़े कुशलता से अंकित करने का प्रयास किया है जो नाटककार के नाट्य में निपुणता का परिचायक है। इस नाटक में नाटककार द्वारा भारतीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने हेतु राष्ट्रीयता की भावना सहज रूप से हृदय में दर्दनाक एहसास दिलाने का प्रयास किया गया है। इस नाटक में हास्य, वीर एवं करुण रस को प्रधानता दिया गया है एवं अन्य रस का भी समावेश कहीं-कहीं किया गया है। इस नाटक में खट्टर काका को चीनी आक्रमण की घटना के कथानक में समावेश बड़े कुशलता से किया गया है, जो नाटक के नामांकरण "खट्टर काका चीन में" रखा

जाना कथानुकूल उपयुक्तता एवं उत्कृष्टता का परिचायक है। अत: यह माना जा सकता है कि यह नाटक रंगमंच एवं साहित्य दोनों ही दृष्टिकोण उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"खट्टर काका चीन में" नाटक के लेखन में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रूपक सिद्धयांत के सस्वर न मानते हुए पाश्चात्य नाटक एवं पारसी नाटक के सिद्धयांत स्थल-स्थल पर समावेश किया है। इस नाटक में भाव व्यंजकता, आयभट्टी, रोचकीयता आदि नाटकीय तत्वों का समावेश कुशलता किया गया है। इस नाटक का अंकविधान संस्कृत नाट्य रुपक सिद्धयांत के अनुकुल उपयुक्त है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक में नाट्य लेखन सिद्धयांत, भाव व्यंजकता, आर्यभट्टी, रोचकीयता आदि साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"खट्टर काका चीन में" नाटक में नाटककार द्वारा सरल एवं प्रांजल भाषा का प्रयोग किया गया है। नाटकककर ने पत्रोचित संवाद एवं व्यवहार को अपने लेखन के माध्यम से कुशलता दर्शाया है। इस नाटक के शब्द-संयोजन में प्रसंगानुकूल गद्य एवं पद्य दोनों को समावेश किया गया है। इस नाटक का शब्द-संयोजन प्रसंगानुकूल एवं पत्रोचित है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का शब्द-संयोजन साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण अभिनेता हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"खट्टर काका चीन में" नाटक में नाटककार ने अधिकांश घटना को दृश्य रूप में समावेश करने का प्रयास बड़े कुशलता से किया है, जिसके फलस्वरूप दर्शक घटना से प्रत्यक्ष परिचित होकर हृदयानुभूति को प्राप्त करते हैं। इस नाटक में

नाटककार ने एक दृश्य से दूसरे दृश्य के अंतरसंबंध को मंचीय दृष्टिकोण से लिखने का कुशलता प्रयास किया है। इस नाटक में एक दृश्य से दूसरे दृश्य के बीच सामंजस्ता को कुशलता से समावेश किया है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का दृश्य-संयोजन साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"खट्टर काका चीन में" नाटक के चरित्र-चित्रण कथानुकूल पत्रोचित एवं स्वभावानुकूल चित्रित किया गया है। इस नाटक में मुख्य पात्र मैथिली के चिरपरिचित खट्टर काका है। खट्टर काका अध्यावधि में मिथिला के मिट्टी से महादेव बनाकर पुजा-पाठ, शास्त्रपुराण पर प्रवचन एवं व्यंग्य-विनोद करने के लिए प्रसिद्ध थे, किन्तु नाटककार द्वारा इस नाटक में उनका चरित्र-चित्रण आधुनिक वस्त्र शूट-बूट धारणकर चीन के सीमा तक पहुंच व्यक्ति-व्यक्ति में राष्ट्र प्रेम के प्रति जागरूक करनेवाले व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया गया है। अन्य सभी पात्र का चरित्र-चित्रण कथानुकूल पत्रोचित एवं स्वभाविक ही है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक का चरित्र-चित्रण कथानुकूल प्रस्तुति परक एवं हृदयग्राही है जो साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"खट्टर काका चीन में" नाटक के कथानक में आधुनिक राजनैतिक चीनी आक्रमण में अध्यावधि के चिरपरिचित मैथिली के पात्र खट्टर काका को आधुनिक रूप देकर राष्ट्रीयता को दर्शाना नाटक को आधुनिक समय ही नही भविष्य हेतु भी प्रासंगिक है। इस नाटक में मुख्य पात्र खट्टर काका द्वारा 'जय जवान, जय किसान' के नारा कर्मठता और कठोरता का समावेश कुशलता से किया गया है जो आधुनिक दृष्टिकोण से प्रासंगिकता को दर्शाता है। अत: यह माना जा सकता है कि

यह नाटक आधुनिक समय भी प्रासंगिक है।

"खट्टर काका चीन में" नाटक के कथानक में राजनैतिक तथ्य चीनी आक्रमण प्रसिद्ध मैथिली पात्र खट्टर काका के माध्यम से राष्ट्रीयता कि भावना को मिथिला क्षेत्र में प्रभावशाली रूप भागीदारी को दर्शना माना जा सकता है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक के लेखन का उद्देश्य राजनैतिक नाटक के माध्यम से राष्ट्र-प्रेम के प्रभावशाली रूप को दर्शाना है।

"खट्टर काका चीन में" नाटक के आरंभ और समापन संस्कृत नाटक के अनुसार न करके पाश्चात्य नाटक का अनुसार किया गया है। अत: यह माना जा सकता है कि इस नाटक आरंभ और समापन पर पाश्चात्य नाटक के अनुसार ही उपयुक्त एवं उत्कृष्ट रूप से लिखा गया है।

अंतत: राजनैतिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री कपिल प्रभाकर द्वारा लिखित नाटक "खट्टर काका चीन में" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति है।

भाग-4

सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक का प्रलेखन एवं विश्लेषण

सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक

जिस तरह पौराणिक विषय को लेकर लिखे गए नाटक को पौराणिक नाटक, ऐतिहासिक विषय को लेकर ऐतिहासिक नाटक एवं राजनीतिक विषय को लेकर राजनीतिक नाटक कहा जाता है, उसी तरह सामाजिक विषय को लेकर लिखे गए को सामाजिक नाटक कहा जाता है। इस तरह के नाटकों के विषय-वस्तु समाज की वर्तमान समस्या जैसे कहीं वैवाहिक समस्या, कहीं पर साधारण नायक नायिका की व्यक्तिगत समस्या, कहीं पर गरीबी एवं अमीरी की समस्या तो कहीं पर समाज में प्रचलित कुरीति आदि का चित्रण करना होता है। इस तरह के नाटकों में नाटकीय पात्र समाज के साधारण से साधारण व्यक्ति होते हैं, सिर्फ राजा रानी या धीरोदत्त नायक हो यह आवश्यक नहीं। इस तरह के नाटकों के माध्यम से सामाजिक विरूपता, रूढ़िवादिता, अपराध, विषमता, राष्ट्रीय चेतना, शिक्षा आदि विषयवस्तु को दिखाकर चेतना उत्पन्न करने का कार्य किया जाता है। मिथिला क्षेत्र में इस तरह के जागरूकता का अत्यधिक आभाव रहा है। अर्थात इस तरह के नाटक का विषयवस्तु सामाजिक कथ्य के धुरी पर केन्द्रित होता है।

मैथिली भाषा में सामाजिक कथ्य के नाटक के जन्मदाता पं० श्री जीवन झा हैं। इस नाटक से पहले एक नाटक कविशेखर ज्योतिरीश्वर द्वारा "धुर्त्तासमागम" लिखा गया` है, किन्तु इसे नाटक के श्रेणी में नहीं रखकर प्रहसन की श्रेणी में रखा गया है। सामाजिक विषयवस्तु को सर्वप्रथम पं० श्री जीवन झा ने ही सर्वप्रथम नाटक लिखे हैं। इससे पहले मिथिला के नाटक को शैली में बांधकर लिखा, लेकिन विशुद्ध भाषा में मैथिली नाटक नहीं लिखा गया था। इससे पहले संस्कृत, प्राकृत से पूर्ण मैथिली नाटक त्रिभाषाओं की संगम थी। पं० श्री जीवन झा ने सर्वप्रथम इस त्रिवेणी संगम को तोड़कर एकछाहा (पूर्णरूपेण) मैथिली भाषा में नाटक लिखना प्रारम्भ किया। संस्कृत नाटक लक्षण ग्रंथ में नाटक का विषयवस्तु मंचन के ऐसे सिद्धायांत के अनुरूप बाँधा गया था, जिसमें सामाजिक घटना से संबन्धित विषय-

वस्तु नाटक के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता था। पं० श्री जीवन झा ने इस भ्रम (अंधविश्वास) को दूर किया, उन्होंने देखा कि अब ऐसा युग नही है, जिसमें राजा को ही केवल स्थान दिया जाय या नाटक के नायक नायिका देवता या धीरोदत्त गुणों वाला क्षत्रिय हो। वह अपने नाटक में समाज का चित्र चित्रित करना चाहते थे, इसीलिए संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ में कहे गए लक्षण के परिधि से पूर्णरुपेण बाहर नहीं होते हुए भी विषयवस्तु में परिवर्त्तन लाए और सर्वप्रथम समाज के एक साधारण युवक और युवती के जीवन पर आधारित एक सामाजिक नाटक लिखे, इससे पहले मैथिली में सामाजिक नाटक नही लिखा गया था। मैथिली साहित्य में सामाजिक विषयवस्तु को केंद्र में रखकर बहुत ही नाट्य रचना उपलब्ध है।

अत: शोध अध्य्यन में जिस लिखित एवं प्रकाशित सामाजिक कथ्य के आधुनिक मुख्यत: तेरह मैथिली नाटकों की प्रलेखन एवं विश्लेषण की गई है, वह नीचे वर्णित है:---

नाटक	लेखक
1. सुन्दर-संयोग	पं० श्री जीवन झा
2. नर्मदा-सट्टक	पं० श्री जीवन झा
3. चीनीक लड्डू	श्री ईशनाथ झा
4. बसात	पं० श्री गोविन्द झा
5. जुएल कनकनी	श्री महेन्द्र मलंगिया
6. एक छल राजा	श्री उदय नारायण ‘नचिकेता’
7. भफाईत चाहक जिनगी	श्री सुधांशु शेखर चौधरी
8. लेटाईत आँचर	श्री सुधांशु शेखर चौधरी

----

1. “सुन्दर संयोग” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“सुन्दर संयोग” नाटक नाटककार पं० श्री जीवन झा द्वारा लिखा गया है। यह नाटक सिर्फ सर्वप्रथम सामाजिक नाटक ही नही है, बल्कि आधुनिक मैथिली नाटक का जन्म भी इसी नाटक से हुआ है। इस नाटक के लेखन काल को लेकर कोई मतभेद नहीं है। सभी मैथिली साहित्य के अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1904 ई० है। अत: इस नाटक की लेखन काल 1904 ई० है।

“सुन्दर संयोग” नाटक के प्रथम संस्करण के प्रकाशन को लेकर कोई स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन उपलब्ध जानकारी के अनुसार संभवत: 1904 ई० में प्रकाशित की गई है। इस नाटक के तृतीय संस्करण का प्रकाशन, काशी राज के सभापति लक्ष्मण झा प्रकाशन द्वारा संवत 1995 में प्रकाशित की गई है। यह नाटक चार अंक में विभाजित की गई है। इस नाटक में कुल पात्र दस (10) है, जिसमें स्त्री पात्र छ: (6) और पुरुष पात्र चार (4) है । सामाजिक पृष्टभूमि को आधार बनाकर इससे पहले मैथिली में नाटक नहीं लिखे गए थे । इस नाटक से ही पं० श्री जीवन झा सर्वप्रथम सामाजिक नाटक के लेखन का शुभारम्भ किये। इस नाटक के कथानक में सरला और सुन्दर नाम के मैथिली युवक एवं युवती के वैवाहिक संबंध और प्रेमप्रगाढ़ता को केन्द्रित कर लिखा गया है। इस नाटक में नाटककार ने मिथिलांचल में प्रचलित वैवाहिक समस्या को चित्रित किया गया है। इस नाटक में परिणीता एवं परित्यक्ता नारी के वेदना को मार्मिकता से नाटककार ने समावेश किया है। इस नाटक में करुण रस, शृंगार रस, हास्य रस मुख्य रूप से एवं कहीं-कहीं अन्य रस का भी समावेश किया गया है। इस नाटक के कथानक में नायक सुन्दर किसी कारणवश पत्नी सरला को चतुर्थी के रात्रि (सुहागरात) को

छोड़कर भाग जाता है। इसके बाद किसी अनुष्ठानार्थ सुन्दर वैद्यनाथ धाम जाता है। अनुष्ठानोंपरांत घर वापसी की योजना बनता है, उसी समय सरला भी अपने संबंधी के साथ वैद्यनाथ धाम पहुँचती है। संयोगवश सरला भी वहीं ठहरती है, जहाँ सुन्दर ठहरा हुआ है। सुन्दर सरला को पहचान लेता है, लेकिन सरला नहीं पहचान पाती है। जबतक सरला वैद्यनाथ धाम में रहती है, सुन्दर तत्पर रहता है कि इन लोगों को किसी तरह का समस्या न हो। सरला को देखते ही सुन्दर को विरहाग्नि में प्रज्वलित ही जाता है, लेकिन शालीनतावश उसको स्पष्ट नहीं होने देता है। वैद्यनाथ धाम की अपार भीड़ में सुन्दर सरला के सुरक्षा हेतु सदैव तत्पर है, जिसके फलस्वरूप सरला के हृदय में सुन्दर के प्रति स्वाभाविक रूप से स्नेह जागृत होती है। सरला के बहन कादम्बरी सुन्दर को पहचान जाती है, वह भयवश नहीं बोलती है। सारी घटना इस तरह नियोजित होती है, जिससे सभी को विश्वास हो जाता है कि सुन्दर ही सरला का पति है। सरला अपने माँ के साथ वैद्यनाथ धाम से गाँव जाती है एवं सुन्दर भी गाँव पहुँचकर ससुराल जाता है। सरला और सुन्दर के मिलन को नाटककार ने "सुन्दर संयोग" की संज्ञा दिया है, जो कथानक के अनुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है। इस नाटक पर संस्कृत नाट्य परंपरा के साथ ही समकालीन लोकनाट्य परंपरा एवं पारसी नाट्य परंपरा का प्रभाव स्पष्टत: प्रदर्शित होता है। नाटककार पं० श्री जीवन झा काशी में हिन्दी रंगमंच से अवगत हो चुके थे, इसीलिए मैथिली के नाट्य लेखन में एक नवयुग का निर्माण करने में सक्षम हुए। अत: यह नाटक साहित्य के दृष्टिकोण से सर्वोत्कृष्ट है एवं कुछ त्रुटि को दूर कर रंगमंच हेतु भी उत्कृष्ट बनाया जा सकता है।

"सुन्दर संयोग" नाटक का लेखन संस्कृत नाट्य परंपरा एवं मध्यकालीन मैथिली नाट्य परंपरा में लिखे गए नाटक के अवशेष प्रतीत होता है। इस नाटक के

नायक संस्कृत नाट्य रूपक सिद्धयांत के अनुकूल धीरोदात्त न होते हुए समाज के साधारण व्यक्ति है, जो पाश्चात्य या पारसी नाट्य परंपरा के प्रभाव को स्पष्टत: प्रमाणित करता है। इस नाटक में भाव व्यंजकता एवं रोचकीयता को नाटककार ने बड़े कुशलता से समावेश किया है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य परंपरा के साथ ही मध्यकालीन मैथिली नाट्य परंपरा, पारसी नाट्य परंपरा एवं पाश्चात्य नाट्य परंपरा प्रभाव भी है एवं नाटक में भाव व्यंजकता रोचकीयता का समावेश रंगमंच एवं साहित्य दोनों ही दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"सुन्दर संयोग" नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है। नाटककार ने इस नाटक में दृश्य को कल्पित कर सभी दृश्यों को कुशलता से दर्शाया है। इस नाटक मे एक दृश्य से दुसरे दृश्य के अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। इस नाटक के कथानक अत्यल्प है तथापि इसके प्रस्तुतिकरण एवं वर्णन नाटककार की प्रतिभा एवं नाट्य लेखन में निपुणता का परिचायक है। कथा का क्रमिक विकास को नाटककार ने ऐसा मोड़ दिया है, जो दृश्य में अचानक ही व्यंग्य एवं उत्सुकता को विकसित करता है । संगीत नाटक का प्राण आदि काल से ही रहा है। जिसतरह संस्कृत नाटककार का उद्देश्य जीवन संधर्ष तथा द्वंद के अपेक्षाकृत अत्यधिक न दर्शाकर प्रेक्षक को रसानुभूति कराना है। अत: इस नाटक में सभी दृश्यों का संयोजन एवं अंतर संबंध को बड़े कुशलता से प्रदर्शित किया गया है, जो आधुनिक नाट्य लेखन के अनुकूल एवं उपयुक्त माना जा सकता है।

"सुन्दर संयोग" नाटक के शब्द संयोजन में नाटककार ने संस्कृतनिष्ठ, प्रांजल एवं माधुर्य गुण से भरा हुआ मैथिली भाषा का उपयोग किया गया है। इस

नाटक के संवाद छोटे-छोटे, चुस्त, सरल, हृदय स्पर्शी एवं नाटकीयता से परिपूर्ण है। संपूर्ण नाटक में एक जैसा पात्र के सन्निवेश होने के कारण भाषा की एकरूपता सर्वत्र दिखाई पड़ती है। नाटक में शब्द संयोजन प्रमुख माना जाता है। वस्तुत: चरित्र के विकास, कथावस्तु के विन्यास तथा विभिन्न रस निष्पति के लिए मुख्य साधन शब्द संयोजन ही है। इस नाटक के शब्द संयोजन चरित्र के विकाश के लिए नहीं हुआ है, लेकिन स्वाभाविकता को अवश्य ही नाटककार ने ध्यान रखा है। इस नाटक के लेखन में शब्द संयोजन गध्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों ही रूप में किया गया है। इस नाटक में मध्यकालीन मैथिली में लिखे गए नाट्य परंपरा के तरह ही गीत की संख्या अत्यधिक है। इस नाटक में कुल चौबीस(24) गीत है, जिसमें एक तरफ अगर तिरहुत, बटगमनी, परिछनि, बारहमासा आदि गीत समावेश है, तो दूसरी तरफ गजल को भी निवेश किया गया है। नाटक के चौथे अंक में सभी अभिनय व्यापार रुक जाता है तथा एकमात्र गीत के धारा प्रवाहित होता है। अत: इस नाटक के लेखन में गद्य एवं पद्य का समावेश साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"सुन्दर संयोग" नाटक के चरित्र चित्रण में नाटककार पूर्णत: सफलता नहीं प्राप्त किए हैं। आरंभ से लेकर कीर्तनियां परंपरा तक मैथिली में नाटक के चरित्र चित्रण के दृष्टिकोण से नहीं लिखा गया है, बल्कि जितने भी नाटक लिखे गए हैं, उसका एकमात्र उद्देश्य था सरस गीत के नाटकीय प्रदर्शन द्वारा जनसमूह को आमोदित करना था। इस तरह की चरित्र चित्रण में दुर्बलता इस नाटक में भी प्रतीत होता है। इस नाटक में मुख्य पात्र सुंदर का चरित्र चित्रण आदर्श पुरुष के रूप में किया गया है। अत: इस नाटक का चरित्र चित्रण में वर्तमान समाजिक परिवेश को समावेश कर चित्रित किया है, जो साहित्य एवं रंगमंच दोनों दृष्टिकोण

से उपयुक्त माना जा सकता है, उत्कृष्ट नहीं।

"सुन्दर संयोग" नाटक के नाटककार पं० श्री जीवन झा ने मैथिली नाटक के विषय-वस्तु में पौराणिक कथ्य को आधार न बनाकर सर्वप्रथम सामाजिक कथ्य को समावेश कर आधुनिकतावादी विचारधारा को समाज के समक्ष रखा है । मिथिलांचल में कन्या विवाह से संबन्धित कुप्रथा को समावेश कर लिखा जाना आधुनिक समय में भी नाटक की प्रसांगिक बनाता है । अत: यह नाटक आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से प्रासांगिक है ।

"सुन्दर संयोग" नाटक मिथिलांचल में प्रचलित कन्यादानी शब्द उस परिणीता, किन्तु परित्यक्ता नारी यातना की इतिहास को अपने अंदर समेटे हुई है। युगपुरुष पं० श्री जीवन झा समसामयिक सामाजिक वातावरण में यह परंपरा परिव्याप्त था एवं वह इसके दुष्प्रभाव को अनुभव कर चुके थे। अत: इस नाटक का उद्देश्य वैवाहिक संबन्धित कुप्रथा को समाज के समक्ष रखकर समाज को जागृत करना माना जा सकता है।

"सुन्दर संयोग" नाटक का आरंभ में नाटककार ने संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ को सस्वर न समावेश करते हुए मध्यकालीन मैथिली नाट्य परंपरा को समावेश किया है। इस नाटक का समापन संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल ही सुखांत है एवं भारतवाक्य के तरह ही कुछ पंक्तियाँ नाटककार द्वारा उपदेशात्मक रूप में समावेश किया गया है। अत: इस नाटक का आरंभ और समापन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ सस्वर न समावेश करते हुए मध्यकालीन मैथिली नाट्य परंपरा का समावेश साहित्य एवं रंगमंच उपयुक्त उव्म उत्कृष्ट माना जा सकता है।

अंतत: सामाजिक कत्थ के आधुनिक नाटक "सुन्दर संयोग" में नाटककार पं० श्री जीवन झा ने अपनें लेखन कौशलता का परिचय देते हुए बड़े सहज ढंग से नाटक में परिपुर्णता देने का प्रयास किया गया है। नाटककार के द्वारा नाटक लेखन में यह प्रयास आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्य के गौरव को और भी गौरवान्वित किया है। यह नाटक सिर्फ प्रथम सामाजिक नाटक ही नहीं है, बल्कि आधुनिक कथ्य के प्रथम मैथिली नाटक भी है। पं० श्री जीवन झा का यह नाटक आधुनिक मैथिली नाटक में अपनी ऐतिहासिकता को सिद्ध करता है, जो वर्षों तक स्मरणीय रहेगा। अत: यह नाटक आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से अमूल्य एवं अविस्मरणीय कृति है।

----

2. “नर्मदा-सट्टक” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“नर्मदा-सट्टक” नाटक नाटककार पं० श्री जीवन झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक लेखन काल को लेकर मैथिली साहित्य एवं साहित्यकार में कोइ मतभेद नही है,बल्कि स्पष्ट जानकारी उपलब्ध है। अत: इस नाटक के लेखन काल मैथिली साहित्य के अनुकूल 1906 ई० माना जा सकता है।

“नर्मदा-सट्टक” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, मैथिली अकादमी, पटना-800001 द्वारा 1980 ई० में प्रकाशित की गयी है। यह नाटक कुल तीन अंको मे विभाजित किया गया है। इस नाटक मे कुल पात्र तेरह (13) है, जिसमें स्त्री पात्र पाँच (5) और पुरुष पात्र आठ (8) है। इस नाटक के कथानक में नाटककार ने मिथिला समाज में कन्या विवाह से संबन्धित कुप्रथा को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपने आलोचनात्मक दृष्टिकोण को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। इस नाटक के कथानक मुख्य पात्र नर्मदा और सागर के मिलन, प्रेम एवं उसके बाद दोनों के वैवाहिक संबंध को केन्द्रित कर लिखा गया है। इस नाटक में नाटककार ने आधुनिक मिथिला के कर्तव्यभाव को दिग्दर्शित कराते हुए कथा को संघटित किया है। इस नाटक में मिथिला के करवट लेती तात्कालीन आदर्शवादी मनोवृत्ति और सुधारवादी भावना को कुशलता से नाटककार वर्णित किया है, जैसे:- लोग संकट में रहे तो उसे मदद करना चाहिए। इसी प्रवृत्ति के कारण नाटक के नायक सागर नायिका नर्मदा को कमला नदी में डूबते वक्त बचा लेता है। कपिलेश्वर स्थान पर मेला में नायक नायिका को पुनर्मिलन होता है। दोनों का मिलन घटक द्वारा करवा कर, दोनों में वैवाहिक संबंध स्थापित करवाया जाता है। नाटक का आरंभ महेशवाणी से होती है एवं इसमें प्रस्तावना के अन्तर्गत सूत्रधार

और विदूषक रंगमंच पर उपस्थित होकर नाटककार का परिचय के साथ ही घटक के हास्यास्पद चित्र उपस्थित करता है। इस नाटक में नाटककार विविध नाट्य शैली का प्रयोग किया है। इस नाटक का कथानक सामाजिक है, तथा पृष्टभूमि के चित्रण में नाटककार परम्परागत शैली का अनुकरण कर स्थल-स्थल पर नवीनता आभास कुशलता से दर्शाया गया है। इस नाटक शृंगार रस के साथ ही हास्य, वीर आदि रस का समावेश नाटककार ने बड़े कुशलता से किया है। इस नाटक के कथानक में नर्मदा नाम की कन्या को सागर नाम का युवक कमला नदी में डूबने से बचाता है और दोनों पुन: कपिलेश्वर मंदिर पर एक दूसरे को देखते हैं, कपिलेश्वर स्थान में ही मोदन झा एवं सागर का साक्षात्कार होता है तथा विवाह का प्रस्ताव रखा जाता है, नर्मदा के अभिभावक त्रिविक्रम ठाकुर द्वारा तुलनात्मक विवेचना के उपरान्त श्रेष्ठ माना जाने पर सागर के साथ करते है। इस नाटक के नामांकरण कथानुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है। इस नाटक मे प्रस्तावना, सूत्रधार व नटी, विष्कंभक, प्रवेशक भरतवाक्य संस्कृत नाट्य परंपरा के अनुकूल ही माना जा सकता है। अत: इस नाटक का लेखन साहित्य एवं रंगमंच दोनों ही दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"नर्मदा-सट्टक" नाटक संस्कृत नाट्य ग्रंथ के लक्षणानुसार के साथ ही लोक नाट्य परंपरा दोनों को समावेश कर लिखा गया है। इस नाटक में मुख्य पात्र नायक संस्कृत नाट्य रुपक परंपरा के अनुकूल धीरोदत्त न होते हुए पाश्चात्य एवं पारसी नाट्य परंपरा के अनुकूल समाज का एक साधारण व्यक्ति है। इस नाटक में नाट्य रूपक के सिद्धान्त के साथ ही तत्कालीन समय में प्रचलित पारसी एवं पाश्चात्य नाट्य परंपरा का प्रभाव स्पष्टत: दिखाई पड़ता है। नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकीयता का उपयुक्त एवं उत्कृष्ट समान्यजश किया गया है। अत: इस नाटक के नायक एवं कुछ त्रुटि को छोडकर अन्य सभी लक्षण संस्कृत नाट्य

रूपक सिद्धान्त के अनुकूल है।

"नर्मदा सट्टक" नाटक मे कथानक की जटिलता को कुशलता से सुलझाते हुये दृश्य-संयोजन रंगमंचीय प्रस्तुति के अनुकूल लिखा गया है। एक दृश्य से दूसरे दृश्य के बीच सामंजस्ता एवं अंतर संबंध को नाटककार ने नाटक में कुशलता से दर्शाया है। इस नाटक के कथानक की जटिलता को दूर करने के लिए नाटककार ने सुच्च अंश के लक्षणानुसार विष्कंभक-प्रवेशक को यथा स्थान निवेश किया है। अत: इस नाटक के दृश्य-संयोजन रंगमंचीय प्रस्तुति के अनुकूल है।

"नर्मदा-सट्टक" नाटक में नाटककार ने कथोपकथन जो नाटक के रीढ़ की हड्डी है, पात्र के अनुरूप प्रभावोत्पादक एवं पात्रोचित भाषा में लिखा गया है। यह नाटक पद्यात्मक एवं गद्यात्मक दोनों ही रूप में लिखी गयी है। नाटक में गीतों का प्रयोग पारसी रंगमंच के प्रभाव को स्पष्टत: दर्शाता है। अत: इस नाटक के शब्द- संयोजन में सरल पात्रोचित भाषा को पद्यात्मक एवं गद्यात्मक दोनों ही रूप में उपयुक्ता से समावेश कर रंगमंचीय प्रस्तुति के अनुकूल लिखा गया है।

"नर्मदा सट्टक" नाटक में पात्र की अत्यधिक संख्या होने के कारण सभी पात्रो को रंगमंच पर लक्षित नहीं हो पाये है। मुख्य पात्र का चरित्र-चित्रण को नाटककार ने गहन चिंतन कर चित्रित किया है। सभी मुख्य पात्र का चरित्र- चित्रण उपयुक्त एवं औचित्य रूप से किया गया है। इस नाटक के चरित्र-चित्रण में नाटककार ने लोकप्रचलित सरल भाषा का प्रयोग कर नाटक को पात्रोचित एवं अभिनय के अनुकूल चित्रित करने का प्रयास किया है। नाटक मे कुछ पात्र सामाजिक है तथा नाटककार द्वारा कल्पित है। अत: नाटक का चरित्र-चित्रण रंगमंचीय प्रस्तुति तथा साहित्य के दृष्टिकोण से अनुकूल एवं उपयुक्त है।

"नर्मदा सट्टक" नाटक में नाटककार ने द्वारा मिथिलांचल में वैवाहिक संबन्धित प्रचलित कुप्रथा के परंपरानुरूप तथ्यों में काल्पनिक तथ्यों को समावेश कर आधुनिक रंगमंच हेतु उपयुक्त बनाना ही नाटक की प्रासंगिकता को दर्शाता है।

अत: यह नाटक आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण प्रासंगिक माना जा सकता है।

"नर्मदा सट्टक" नाटक से पहले मैथिली आधुनिक मैथिली रंगमंच हेतु सिर्फ एक ही सामाजिक नाटक "सुन्दर संयोग" लिखे गए है। पंडित श्री जीवन झा के द्वारा आधुनिक रंगमंच हेतु सामाजिक कथ्य के माध्यम से वैवाहिक संबंध में प्रचलित कुप्रथा को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाना है, जो नाटककार के नाट्य लेखन के उद्देश्य माना जा सकता है। अत: इस नाटक लेखन का उद्देश्य आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के विकास एवं मार्गदर्शन करना माना जा सकता है।

"नर्मदा सट्टक" नाटक का आरंभ और समापन संस्कृत नाटक के लक्षणानुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है, साथ ही मध्यकालीन मैथिली नाट्य परंपरा का प्रभाव स्पष्टत: प्रतीत होता है। अत: नाटक का आरंभ और समापन मे संस्कृत लक्षण ग्रंथ के नियम को सस्वर पालन न करते हुए मध्यकालीन मैथिली नाट्य परंपरा समावेश किया है, जो साहित्य एवं आधुनिक रंगमंच के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं अनुकूल माना जा सकता है।

अंतत: सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक के शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटक "नर्मदा सट्टक" नाटककार पंडित श्री जीवन झा उपयुक्त एवं उत्कृष्ट रचना है। यह नाटक आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अमूल्य एवं अविस्मरणीय कृति है। इस नाटक को सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक के नवयुग के प्रारम्भिक दौड़ के नाटक रूप में माना जा सकता है।

----

3. "चीनीक लड्डू" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"चीनीक लड्डू" नाटक नाटककार श्री ईशनाथ झा द्वारा लिखा गया है। इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबधित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1349 साल या 1941 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1941 ई० है।

"चीनीक लड्डू" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन प्रो० रमानाथ के संपादकत्व में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'मैथिली साहित्य-पत्रक' दूसरे वर्ष के प्रथम अंक (अगहन 1349 साल) से लेकर चौंथे अंक तक धारावाहिक रूप में प्रकाशित की गई है एवं द्वितीय संस्करण का प्रकाशन, विद्यापति प्रकाशन दरभंगा द्वारा 1960 ई० में प्रकाशित की गई है। नाटककार ने इस नाटक को तीन अंकों में विभाजित किया है, जिसमें दृश्यों की संख्या बाईस(22) है। इस नाटक मे कुल पात्र सत्ताईस(27) है, जिसमें स्त्री पात्र चार(4) और पुरुष पात्र तईस(23) है। यह नाटक समाज के जमींदार परिवार के दो भाई सुधाकान्त एवं प्रेमकांत के बीच आपस में बटुआ दास द्वारा फैलाए गए वैमनस्यता को केंदित कर लिखा गया है। इस नाटक के कथानक में दो भाई के पारस्परिक प्रेम के बीच खलनायक पात्र बटुआ दास वैमनस्यता का बीजारोपण करता है। दोनों भाई एक प्रतिष्ठित जमींदार के हैं। पिता के मृत्यु के बाद इन लोगों का देखरेख मामा धर्मानंद करते हैं, लेकिन फरेबी दीवान बटुआ दास मिथ्या का जल बुनकर प्रेमकांत को सुधकान्त के विरुद्ध तैयार करता है, की सुधकान्त अपनी खानगी के रूप में धन एकत्रित किए जा रहा है। इस धटना की जानकारी जब प्रेमकांत के पत्नी चंडिका को होती है, तो वह अपने पति को चंडी रूप धारण कर अपने पति को तैयार करती है, लेकिन इस षड्यंत्र के पीछे बटुआ दास का ही हाथ यह नहीं सिद्ध कर पाती है। षड्यंत्र विकराल रूप धारण कर लेता है, दोनों भाई एक दूसरे को दुश्मन जानकार एक दूसरे से अलग

हो जाता है। षड्यंत्र का समापन यहीं न होकर बटुआ दास के मंत्रणा से प्रेमकांत सुधाकान्त के पुत्र के हत्या की योजना बंनाता है, इसके फलस्वरूप चीनीक लड्डू बनाया जाता है। लड्डू लेकर बटुआ दास सुधकान्त के यहाँ जाता है, बटुआ दास सद्दश अतिथि के स्वागत के रूप में भोजन के दौरान चूड़ा दही के साथ ही चीनी के स्थान पर चीनी के लड्डू को दिया जाता है। अपने दुष्कर्म का फल बटुआ दास को स्वयं भगाना पड़ता है। नामांकरण के दृष्टिकोण से इस नाटक का नाम "चीनीक लड्डू" उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है। इस नाटक में कथावस्तु का आयोजन दर्शक के मनोरंजन को ध्यान में रखकर लिखा गया है। इस नाटक प्रस्तावना, सूत्रधार व नटी, विष्कंभक, प्रवेशक, भरतवाक्य के अभाव के रहते हुए भी नाटकीयता में कोई बाधा नहीं उत्पन्न होती है। यह नाटक शिल्प एवं नाटकीयता के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस नाटक के दृश्य आयोजन और सूच्य वस्तुकी आयोजन बड़े कुशलता से की गई है। अत: यह नाटक आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त ऐतिहासिक नाटक है।

"चीनीक लड्डू" नाटक में नाटककार ने नाट्य रूपक लक्षण का पालन नहीं किया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य परंपरा का पालन किया गया है। इस नाटक में तीन ही अंक है, जो नाट्य लक्षण ग्रंथ के सिद्धयांत के अनुकूल नहीं है। इस नाटक के नायक नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत के अनुकूल धीरोदत्त नहीं है, वस्तुत: मेरे जानकारी के आधार पर इस नाटक के मुख्य नायक प्रेमकान्त है, लेकिन बटुआ दास के व्यक्तित्व के सामने इनका व्यक्तित्व कमजोर पड़ जाता है, जो समाचीन नहीं है एवं अन्य लक्षण भी संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल नही है। आचार्य भरतमुनि के नाट्य लक्षण ग्रंथ में नाटक रचना के लक्ष्य रस निष्पति को स्वीकार किए है। यद्यपि इस नाटक में किसी भी रस की विशेष रूप निष्पति से नहीं हुई है, तथापि अनेक रस व्यञ्जना से दर्शक को अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है। इस नाटक में बटुआ दास के प्रेमपूर्ण आलाप से शृंगार रस, सुशीला के उक्ति से करुण रस, चंडिका के स्वर में क्रोध आवेश से रौद्र रस,

सुशीला एवं चंडिका के अभियोग से आश्चर्य हुए वचन से अद्भुत रस बटुआ दास द्वारा सुकुमार के प्रसंग में दिये गए परामर्श से वीभत्स रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का अभाव है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट नहीं माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन सस्वर नहीं किया गया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत: दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"चीनीक लड्डू" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल, सुबोध एवं स्वाभाविक भाषा का प्रयोग कर कथोपकथन को पात्रोचित को कुशलता से समावेश किया है। नाटक में चरित्र चित्रण का मुख्य अस्त्र संवाद- योजना या कथोपकथन को माना जाता है, जिसमें यह नाटक सबल एवं सजीव कथोपकथन उपस्थित करता है। इस नाटक में कथोपकथन को रोचक बनाने की लिए हास्य व्यंग्य आदि का समुचित योजना को कुशलता समावेश किया गया है। इस नाटक को गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों रूप में लिखा गया है। इस नाटक से पहले जो मैथिली नाटक लिखे गए, उसमें गीत की बाहुल्य रहती थी, वह इस नाटक में नहीं है। इस नाटक में आठ(8)गीत हैं। इस नाटक के कथोपकथन के उक्ति को अत्यधिक प्रभावी बनाने के लिए स्थल-स्थल लोकोक्ति को समावेश किया गया है, नाटक को अत्यधिक प्राणवन्त बनाता देता है। इस नाटक शब्द संयोजन में भी नाटककार ने पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकुल वास्तविकता को समावेश कर कथोपकथन संयोजित किया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित, स्वभाविक और सरल है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से होते हुये भी प्रभावकारी हैं।

"चीनीक लड्डू" नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है। नाटककार ने इस नाटक में नाटककार ने सारे दृश्य को कल्पित कर सभी दृश्यों को कुशलता से दर्शाया है। इस नाटक मे एक दृश्य से दुसरे दृश्य के अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। नाटक का प्रमुख तत्व अभिनय है। अभिनेता रंगमंच पर आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक अभिनय द्वारा दर्शक के ह्रदय में जो आह्लाद उत्पन्न कनाने सक्षम होते हैं, वही दृश्य काव्य की प्राण है। इस नाटक में दृश्य और सूच्य वस्तु का आयोजन बड़े कुशलता से नाटककार द्वारा किया गया है। यद्यपि सूच्य वस्तु के अभाव में दृश्य वस्तु की बोधगम्यता एवं रोचकता बाधित हो जाती है, तथापि नाटक के विस्तार को देखते हुए संभाव्य दृश्य को सूच्य रूप में प्रस्तुत करके नाटककार ने मंचोपयोगी एवं समयोपयोगी सिद्ध किये हैं। इस नाटक में नाटककार ने नाट्य लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत का उल्लंघन भी किया गया है। मृत्यु, भोजन आदि दृश्य नाट्य लक्षण ग्रंथानुसार रंगमंच पर प्रस्तुत करना वर्जित किया है। नाटककार ने इस नाटक में बटुआ दास के मृत्यु एवं भोजन के दृश्य को भी समावेश किया है, साथ ही शयनागार में बिस्तर पर लेटे मानिनी प्रिया के अधर स्पर्श के दृश्य को भी समावेश किया गया है, संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल अनुचित है। अन्य सभी दृष्टिकोण से दृश्य-संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ माना जा सकता है। अत: इस नाटक में दृश्य संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता रंगमंचीय अनकुल एवं उत्कृष्ट है।

"चीनीक लड्डू" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण कथानुकूल पात्रोचित एवं स्वभावानुकूल चित्रित किया है। इस नाटक में नाटककर ने मुख्य पात्र के साथ ही अन्य पात्र के चरित्र को भी नाटककार ने बड़े कुशलता चित्रित किया हैं। नाटक में चरित्र के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के उत्थान-पतन के मार्ग को निर्देशित करना आवश्यक माना गया है। इस नाटक में तीस पुरुष पात्र एवं तीन महिला पात्र का समावेश से मंच भीड़ होनों स्वाभाविक है, लेकिन पात्र की उपस्थिति प्रमाणित है।

इस नाटक में चरित्र के चारित्रिक प्रवृति के अनुरूप चित्रण किया गया है, एवं वेष-भूषा और विभिन्न लक्षण आदि भी पात्र के चरित्र के अनुकूल ही चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ सुधाकान्त के चरित्र का आदर्श, त्यागी, दृढ़,सहृदय एवं विनयशील पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं प्रेमकांत के चरित्र विलासी, विवेकहीन एवं अपराधी के साथ-साथ स्वार्थी पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। इस नाटक में आदर्शवादी, कर्त्तव्यनिष्ठ, उचितवक्ता, सच्चरित्र व्यावहारिक पुरुष के रूप में धर्मानन्द एवं सदानन्द झा के चरित्र को चित्रित किया गया है। इस नाटक में बटुआ दास का चरित्र एक तरफ परम स्वार्थी के रूप में तो दूसरी तरफ निकृष्ठ प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। विदूषक के रूप में ढोलकिया के चरित्र का चित्रण किया गया है। जहाँ सुशीला के चरित्र का चित्रण पतिपरायणा, सहिष्णु, संतोषी और स्वाभिमानी स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं चंडिका के चरित्र को नामानुरूप चित्रित किया गया है। छुलही के चरित्र का चित्रण अपकर्षता के रूप में चित्रित किया गया है एवं अन्य सभी पात्र के चरित्र का चित्रण भी प्रसंगानुकूल कुशलता से चित्रित किया गया है। इस नाटक में धर्मानन्द के उक्ति से भारतीवृतिका विलक्षण व्यवहार दृष्टिगत होता है एवं इस वृति के अनुरूप करुँ एवं अद्भुत रस के अनेक दृष्टान्त देखा जा सकता है। बटुआ दास के चारित्रिक वृति में आरभटी वृतिक दर्शन सहजता से दृष्टिगत होता है, लेकिन सात्वतीएवं कौशकी वृति का अभाव अवश्य ही दृष्टिगत होता है। अत: इस नाटक के चरित्र-चित्रण अभिनेयता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से कथानक के प्रसंगानुकूल एवं पत्रोचित है, जो नाटककार के उत्कृष्ट एवं उपयुक्त चरित्र-चित्रण के परिचायक है।

"चीनीक लड्डू" नाटक में कुछ त्रुटि के के रहते हुए भी मैथिली नाटक के विकास में विशेष महत्व है। यह नाटक चरित्र-चित्रण के विकास, कथोपकथन कि स्वाभाविकता और वर्तमान कुत्सित समाज के चित्र को चित्रित करने में पूर्णत: सफल है, जो इस नाटक की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। अत: यह नाटक

आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के लिए प्रासंगिक ही नहीं बल्कि अग्रणीय प्रसांगिक नाटक में एक है।

"चीनीक लड्डू" नाटक के लेखन का उद्देश्य निस्संदेह यह है कि समाज में कुत्सित भावना को समाप्त कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं आदर्शोन्मुख करना है। अत: नाटककार के इस नाटक लेखन का उद्देश्य में कुत्सित भावना को समाप्त कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं आदर्शोन्मुख करना माना जा सकता है, जो मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट एवं कुशल नाट्य लेखन के उद्देश्य को सिद्ध करता है।

"चीनीक लड्डू"" का आरम्भ और समापन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के नियम का सस्वर पालन नहीं किया गया है। यह नाटक नट-नटी और सूत्रधार के आरम्भिक प्रस्तावना-दृश्य को त्याग कर वंदना से आरम्भ होती है, वह भी और भी अभिनव रीति से। राजमार्ग पर अप्सराएँ गाते हे प्रवेश करती है, तथा वहीं से नाटक में दृश्य नाटक आरम्भ होती है। इस नाटक का समापन भी संस्कृत नाट्य परंपरा के अनुसार भारतवाक्य से न होते है, नये रीति से किया गया है। अत: इस नाटक के आरम्भ और समापन संस्कृत नाटक के परंपरा अनुकूल पूर्णरूपेण न होते हुए आधुनिक नाट्य परंपरा को आधारित कर नये रीति से लिखा गया है, जो आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं साहित्य से दृष्टिकोण उपयुक्त है।

अंतत: सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि उपयोगिता के दृष्टिकोण, नाटकीयता, कथोपकथन के सरलता-स्वाभाविकता एवं भाषा के अकृत्रिम प्रयोग के दृष्टिकोण से नाटककार श्री ईशनाथ झा द्वारा लिखित नाटक "चीनीक लड्डू" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अभी भी श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है। इस नाटक की जितनी बार सफल अभिनय की प्रस्तुति हुई है, जो अपेक्षाकृत कम ही मैथिली नाटक की हुई है।

4. "बसात" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"बसात" नाटक नाटककार पं० श्री गोविन्द झा द्‌वारा लिखा गया है। इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबधित विभिन्न नाट्‌य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1958 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1958 ई० है।

"बसात" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन दरभंगा प्रेस कम्पनी (प्राइवेट) लिमिटेड, दरभंगा द्‌वारा 1956 ई० में प्रकाशित की गई है। नाटककार ने इस नाटक को तीन अंकों में विभाजित किया है, जिसमें दृश्यों की संख्या चौबीस(24) है। इस नाटक मे कुल पात्र पंद्रह(15) है, जिसमें स्त्री पात्र चार(4) और पुरुष पात्र एग्यारह(11) है। सामाजिक नाटक के विकास में नाटककार पं० श्री गोविन्द झा भी अपना योगदान दिये हैं। यद्‌यपि इनका जन्म ऐसे परिवार में हुआ है, जिनका अधिकार संस्कृत भाषा पर प्राय: सदैव रहा है। तथापि संस्कृत संस्कार को लेकर इन्होंने अंग्रेजी शिक्षा-पद्‌धित को भी अनुगमन किए, इसीलिए जहां एक तरफ मिथिला, मैथिल और मैथिली समाज के हेतु गौरवान्वित हैं, वहीं दूसरी तरफ मैथिली समाज जो अभी भी रूढ़िवादिता फैली हुई है, उसको प्रगति पर लाने इच्छुक हैं। इस नाटक के कथानक नव युग के नव बसात के आदर्श को केंदित कर लिखा गया है। जिसतरह बसात निर्जीव घास को उड़ा देता है, उसी- प्रकार नव युग नव प्रवृति के चेतना से प्राचीन मान्यता समाप्त होकर नारी जागरण की शंखनाद करती है। इस नाटक में नाटककार ने नवयुग के आदर्श को बड़े कुशलता से चित्रित करने का प्रयास किया है। प्रत्येक समाज में अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोग

होते हैं, मिथिला समाज भी इसके अपवाद नहीं। कृष्णकांत मिथिला का एक युवक है, जो पिता द्वारा निश्चित किया हुआ विवाह को मात्र इस कारण से अस्वीकार कर देता है कि पुष्पा(वधू) पढ़ी-लिखी नहीं है। वह लिली नाम की आधुनिकतावादी विचारधारा वाली लड़की के प्रेम जाल में फंसा हुआ है। पिता इस आत्मग्लानि से विरक्त होकर घर छोड़ कर चले जाते है और पुष्पा द्वारा स्थापित आश्रम में रहने लगते हैं। कृष्णकांत को जब सूचना मिलता है तो वह लिली के प्रेम जाल को तोड़कर पिता को ढुढ़ने निकल पड़ता है और नहीं मिलने पर रेल में कटने का निश्चय करता है। आश्रम के लोग इनका रक्षा करते हैं, तब इनको अपने गलती का एहसास होता है। उसी वक़्त लिली भी वहाँ पहुँच जाती है, इसके उपरांत पुष्पा कृष्णकांत और लिली का विवाह करवाती है। वस्तुत: बसात की तरह ही मुख्य पात्र कृष्णकान्त का चरित्र अस्थिर और चंचल है, जो इस नाटक का नामांकरण "बसात" कथानक के अनुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है। इस नाटक प्रस्तावना, सूत्रधार व नटी, विष्कंभक, प्रवेशक, भरतवाक्य के अभाव के रहते हुए भी नाटकीयता में कोई बाधा नहीं उत्पन्न होती है। यह नाटक शिल्प एवं नाटकीयता के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस नाटक के लेखन मे नाटक के नवीन शिल्प तथा चित्रांकन के नवीन प्रणाली को समावेश किया गया है। इस नाटक में सबसे मुख्य वस्तु है- अंतर्द्वंद्व का चित्रण। इस दृष्टिकोण से यह नाटक मैथिली में प्राय: सर्वाधिक सफल नाटक माना जा सकता है, लेकिन इस नाटक का कथानक उलझा हुआ है,क्योकि संघटन के दृष्टिकोण से इस नाटक का पूर्व भाग जितना संतुलित है उतना उत्तर भाग नहीं। इस नाटक का कथा वस्तु इस नाटक का कथानक आधुनिक सभ्यता के अंधानुकरण एवं उसके कुपरिणाम तथा सामाजिक रूढ़िवादिता के व्यंग्य पर आधारित है। इस नाटक के कथानक सामाजिक समस्या के प्रस्तुती-

करण एवं उसके समुचित समाधान के दृष्टिकोण पूर्ण सफल नहीं माना जा सकता है। मैथिली में पूर्व के सभी नाटक संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के चरण-चिन्ह पर चलने का चेष्टा किया था, इस दिशा में नया मोड़ लाए पं० श्री जीवन झा लेकिन वह विषयवस्तु में नवीनता लाने के बाबाजूद चरित्र-चित्रण तथा संवाद को नहीं निखार पाये। इस दिशा में समुचित विकास लाये श्री ईशनाथ झा लेकिन सामाजिक संधर्ष को उपस्थित कर सर्वप्रथम नाटक में संघर्ष का चित्रण पं० श्री गोविन्द झा ने लाकर मैथिली नाटक को पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुरूप लाने का चेष्टा किये हैं। अत: इस नाटक के नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के अनुरूप नाटक होते हुए भी आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"बसात" नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण का पालन नहीं किया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य परंपरा का पालन किया गया है। इस रूपक नाटक में पश्चिम के यथार्थवाद का निश्चित ही पूर्ण रुपेण प्रभाव है, कारण यथार्थवादी नाटककारों ने नाटक के क्षेत्र राजा, महाराजा तथा राजकुमार तक ही सीमित न मानते हुए बल्कि समस्त संसार नाटक की परिधि में रखा है। तीन ही अंक है, जो संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के सिद्धयांत के अनुकूल नहीं है। इस नाटक के नायक नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत के अनुकूल धीरोदत्त नहीं है। वस्तुत: मेरे जानकारी के आधार पर इस नाटक के मुख्य नायक कृष्णकान्त है एवं अन्य लक्षण भी संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल है। आचार्य भरतमुनि के नाट्य लक्षण ग्रंथ में नाटक रचना के लक्ष्य रस निष्पति को स्वीकार किए है। इस नाटक में रस की निष्पति कथानक के अनुकूल हुई है, तथा अनेक रस व्यञ्जना से दर्शक को अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है,

उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत: दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"बसात" नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है, कियोंकि सभी दृश्यों को यथार्थवादी परंपरा के अनुरूप संयोजित किया गया है। इस नाटक में कथानक के अनुकूल ही नाटककार ने दृश्य को कल्पित कर नवयुगीन सामाजिक संघर्ष के वास्तविकता को क्रमश: सभी दृश्यों के माध्यम से कुशलता से दर्शाया है, लेकिन उत्तर भाग के अपेक्षाकृत पूर्व भाग अत्यधिक सुदृढ़ एवं सुसंगठित रूप से संयोजित किया गया है। इस नाटक मे एक दृश्य से दुसरे दृश्य के अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। नाटक का प्रमुख तत्व अभिनय है। अभिनेता रंगमंच पर आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक अभिनय द्वारा दर्शक के ह्रदय में जो आहलाद उत्पन्न कराने सक्षम होते हैं, वही दृश्य काव्य की प्राण है। नाटक रेल में कटने का दृश्य संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथानुसार रंगमंच पर प्रस्तुत करना वर्जित किया है। अन्य सभी दृष्टिकोण से दृश्य-संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ माना जा सकता है। अत: इस नाटक में दृश्य संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता अनुकूल एवं उत्कृष्ट है, जो अभिनय, अभिनेता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से नाटककार द्वारा कुशल दृश्य संयोजन का परिचायक है।

"बसात" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल, सुबोध एवं स्वाभाविक भाषा का प्रयोग कर कथोपकथन में पात्रोचित को कुशलता से समावेश किया है। नाटक में चरित्र चित्रण का मुख्य अस्त्र संवाद-योजना या कथोपकथन को

माना जाता है, जिसमें यह नाटक सबल एवं सजीव कथोपकथन उपस्थित करता है। इस नाटक के कथोपकथन मुख्यत: गद्यात्मक और अल्पत: पद्यात्मक रूप में लिखा गया है । इस नाटक से पहले जो मैथिली नाटक लिखे गए, उसमें गीत की बाहुल्य रहती थी, वह इस नाटक में नहीं है। इस नाटक में तीन(3) गीत हैं। इस नाटक के शब्द संयोजन में भी नाटककार से पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकुल स्वगत भाषण बहिष्कार एवं सामाजिक संघर्ष के वास्तविकता को कथोपकथन के माध्यम से संयोजित किया गया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित, स्वभाविक और सरल है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से होते हुये भी प्रभावकारी हैं।

"बसात" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण कथानुकूल पात्रोचित एवं स्वभावानुकूल चित्रित किया है। इस नाटक में नाटककर ने मुख्य पात्र के साथ ही अन्य पात्र के चरित्र को भी नाटककार ने बड़े कुशलता चित्रित किया हैं। इस नाटक में मुख्य पात्र कृष्णकान्त का चरित्र-चित्रण यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप मनोवैज्ञानिक अध्ययन के साथ ही सामाजिक संघर्ष के उत्थान-पतन के मार्ग को दिग्दर्शित करता है। इस नाटक में चरित्र के चारित्रिक प्रवृति के अनुरूप चित्रण किया गया है, एवं वेष-भूषा और विभिन्न लक्षण आदि भी पात्र के चरित्र के अनुकूल ही चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ कृष्णकान्त के चरित्र का अस्थिर एवं चंचल युवा के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं जगदीश के चरित्र नव शिक्षित लम्पट(लफंगा), विलासी, विवेकहीन एवं स्वार्थी पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। इस नाटक में समाज आदर्शवादी, कर्त्तव्यनिष्ठ, सच्चरित्र व्यावहारिक पुरुष के रूप में कृष्णकांत के पिता उर्फ बम बाबा के चरित्र को चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ पुष्पा के चरित्र का चित्रण सहिष्णु, संतोषी और स्वाभिमानी मैथिल कन्या के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं लिली के चरित्र को नवयुगीन मैथिल कन्या के रूप में चित्रित किया गया है एवं अन्य सभी पात्र के चरित्र का चित्रण भी प्रसंगानुकूल कुशलता से चित्रित किया गया है। अत: इस

नाटक के चरित्र-चित्रण अभिनेयता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से कथानक के प्रसंगानुकूल एवं पत्रोचित है, जो नाटककार के उत्कृष्ट एवं उपयुक्त चरित्र-चित्रण के परिचायक है।

"बसात" नाटक में कुछ त्रुटि के के रहते हुए भी मैथिली नाटक के विकास में विशेष महत्व है। यह नाटक चरित्र-चित्रण के विकास, कथोपकथन कि स्वाभाविकता और वर्तमान नवयुगीन सामाजिक संघर्ष के चित्र को चित्रित करने में पूर्णत: सफल है, जो इस नाटक की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। अत: यह नाटक आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के लिए प्रासंगिक ही नहीं बल्कि अग्रणीय प्रसांगिक नाटक में एक है।

"बसात" नाटक के लेखन का उद्देश्य निस्संदेह यह है कि नवयुगीन समाजिक संघर्ष को चित्रित कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं जागृत करना है, लेकिन इस नाटक का मुख्य उद्देश्य नारी की जागृत कर मैथिल युवा के गौरव का महत्वांकन करना है। अत: नाटककार के इस नाटक लेखन का उद्देश्य में कुत्सित भावना को समाप्त कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं की जागृत कर मैथिल युवा के गौरव का महत्वांकन करना है, जो मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट एवं कुशल नाट्य लेखन के उद्देश्य को सिद्ध करता है।

"बसात" का आरम्भ और समापन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के नियम का पालन न करते हुए पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप किया गया है। यह नाटक नट-नटी, सूत्रधार के आरम्भिक प्रस्तावना-दृश्य एवं पं० श्री गोविन्द झा तथा श्री ईशनाथ झा के नाटक में जो मंगलश्लोक का निवेश हैं, सभी को वहिष्कार करते हुए यथार्थवादी नाट्य परंपरा के वहीं अनुरूप ही नाटक आरम्भ होती है। इस नाटक का समापन भी संस्कृत नाट्य परंपरा के अनुसार भरतवाक्य से न होते है, नये रीति से किया गया है। अत: इस नाटक के आरम्भ और समापन संस्कृत नाटक के परंपरा अनुकूल पूर्णरूपेण न होते हुए आधुनिक नाट्य

परंपरा को आधारित कर नये रीति से लिखा गया है, जो आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं साहित्य से दृष्टिकोण उपयुक्त है।

अंतत: सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि उपयोगिता के दृष्टिकोण, नाटकीयता, कथोपकथन के सरलता-स्वाभाविकता `एवं भाषा के अकृत्रिम प्रयोग के दृष्टिकोण से नाटककार पं० श्री गोविन्द झा द्वारा लिखित नाटक "बसात" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अभी भी श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है। इस नाटक की जितनी बार सफल अभिनय की प्रस्तुति हुई है, जो अपेक्षाकृत कम ही मैथिली नाटक की हुई है। अत: नाटककार पं० श्री गोविन्द झा द्वारा लिखित नाटक "बसात" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अभी भी श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है।

----

5. "जुएल कनकनी" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"जुएल कनकनी" नाटक नाटककार श्री महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखा गया है। नाटककार श्री महेंद्र इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबधित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है, उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1972 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1972 ई० है।

"जुएल कनकनी" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, गंगा प्रकाशन, लोहना (जनकपुर धाम) द्वारा 1972 ई० में प्रकाशित की गई है। नाटककार ने इस नाटक को अंक एवं दृश्य में विभाजित न करके दो(2) भाग में किया है। इस नाटक मे कुल सात(7) पात्र है, जिसमें स्त्री पात्र दो(2) और पुरुष पात्र पाँच(5) है। नाटककार श्री महेन्द्र मलंगिया मैथिली नाट्य साहित्य एवं रंगमंच के मध्य अपने विषय को सूक्ष्म निष्पादन हेतु नाट्य लेखन के क्षेत्र में सर्वोपरि एवं अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किये है। यह अपने प्रत्येक नाटक में समाज के कोशकीय स्वरूप तक पहुंचते हैं तथा उसको अपने सूक्ष्म दृष्टि से मनोवैज्ञानिक पद्धति से अवलोकित करते हैं। इनके नाटक का विषय समाज के निम्न वर्ग की स्थिति एवं मन:स्थिति है। इनके नाटक के माध्यम से समाजशास्त्र के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त पर आधारित आज के सामाजिक विकासक्रम तक भी पहुँचा जा सकता है। इनका नाटक लोकधर्मी और समाज के बहुसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। यह नाटक मैथिली समाज के निम्न मध्यम वर्गीय परिवार के दुर्भावना, विभ्रांति एवं शारीरिक-मानसिक उत्पीड़न के अंतर्द्वंद तथा उसके प्रतिफल को केंदित कर लिखा गया है। इस नाटक के कथानक में मुख्य पात्र संज्ञा के विवशता

के साथ खेलने वाले बैजू समान नरपिशाच के अत्याचार एवं संज्ञा के अंतर्दाह, पीड़ा और अप्रतिम त्याग को नाटककार ने मार्मिकता चित्रित किया है। इस नाटक के अंत में संज्ञा के अंतरंग में निहित रहस्य-जाल को जिस कलात्मक रीति के उद्घाटित किया गया है एवं जिस नाटकीय कौशल से जीबू के आत्मद्वंद्वात्मक ग्रंथि को खोलकर इसबार प्रतिशोध की भावना को प्रज्वलित किया गया है, वह बहुत ही प्रभावित करता है। यह नाटक एक आधुनिक सामाजिक नाटक है जो मनुष्य के अवचेतन मन में बैठकर उसके एक-एक उलझन को दिखाना चाहता है। इस नाटक के कथानक अत्यन्त सुसंगठित एवं अतियथार्थवादी है। अत: इस नाटक के नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के अनुरूप नाटक होते हुए भी आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"जुएल कनकनी" नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण का पालन नहीं किया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य परंपरा का पालन किया गया है। इस रूपक नाटक में पश्चिम के यथार्थवाद का निश्चित ही पूर्ण रुपेण प्रभाव है, कारण यथार्थवादी नाटककारों ने नाटक के क्षेत्र राजा, महाराजा तथा राजकुमार तक ही सीमित न मानते हुए बल्कि समस्त संसार नाटक की परिधि में रखा है। इस नाटक में अंक-विधान को नाटककार ने संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के सिद्धयांत के अनुकूल न विभाजित करते हुए केवल दो भाग में विभाजित किया है। इस नाटक के नायक नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत के अनुकूल धीरोदत्त न होते हुए समाज के निम्न मध्यमवर्गीय पात्र है। वस्तुत: कथानक के आधार पर इस नाटक के मुख्य पात्र नायिका संज्ञा है एवं अन्य लक्षण भी संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल है। आचार्य भरतमुनि के

नाट्य लक्षण ग्रंथ में नाटक रचना के लक्ष्य रस निष्पति को स्वीकार किए है। इस नाटक में रस की निष्पति कथानक के अनुकूल हुई है, तथा रस व्यञ्जना से दर्शक

को अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत: दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"जुएल कनकनी" नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है, कियोंकि दृश्य को अतियथार्थवादी परंपरा के अनुरूप संयोजित किया गया है। इस नाटक में कथानक के अनुकूल ही नाटककार निम्न मध्यमवर्गीय पारिवारिक विडम्बना, विसंगति, व्यभिचार, मानसिक कुंठा आदि के बीच मानवीय संघर्ष के वास्तविकता को क्रमश: दोनों भाग दृश्यांकन के माध्यम से अत्यधिक सुदृढ़ एवं सुसंगठित रूप से संयोजित किया गया है। इस नाटक दृश्य के अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। नाटक का प्रमुख तत्व अभिनय है। अभिनेता रंगमंच पर आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक अभिनय द्वारा दर्शक के हृदय में जो आह्लाद उत्पन्न कराने सक्षम होते हैं, वही दृश्य काव्य की प्राण है, जिसको नाटककार ने खुद को चिकित्सक रूप में रखकर मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषित कर संयोजित किया गया है, जो गम्भीर नाट्य चिंतन का परिचायक है। इस नाटक के दृश्यांकन में यथार्थपरक ग्रामीण परिवेश, घटना के विकास में अकृत्रिम सहजता मंच निर्देशक के सटीकता या मंचनीयता कुशलता से समावेश किया गया है एवं अन्य सभी दृष्टिकोण से दृश्य-

संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ माना जा सकता है। अत: इस नाटक में दृश्य संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता अनुकूल एवं उत्कृष्ट

है, जो अभिनय, अभिनेता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से नाटककार द्वारा कुशल दृश्य संयोजन का परिचायक है।

"जुएल कनकनी" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल, तीक्ष्ण जीवंत, स्वाभाविक एवं पात्रोचित के अनुकूल अति यथार्थवादी भाषा का प्रयोग कर कथोपकथन में बड़े कुशलता से समावेश किये हैं। नाटक में चरित्र-चित्रण का मुख्य अस्त्र संवाद-योजना या कथोपकथन को माना जाता है, जिसमें यह नाटक सबल, तीक्ष्ण एवं सजीव कथोपकथन उपस्थित करता है। इस नाटक के कथोपकथन पूर्णत: गद्यात्मक रूप में लिखा गया है। मैथिली नाटक के प्राय: सभी नाटक में गीत की उपस्थिति रहती थी, वहीं इस नाटक में गीत हैं ही नही। इस नाटक के शब्द संयोजन में भी नाटककार से पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकुल स्वगत भाषण बहिष्कार एवं सामाजिक संघर्ष के वास्तविकता को कथोपकथन के माध्यम से संयोजित किया गया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित, स्वभाविक और सरल है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से होते हुये भी प्रभावकारी हैं।

"जुएल कनकनी" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण कथानुकूल पात्रोचित एवं स्वभावानुकूल चित्रित किया है। इस नाटक में नाटककर ने मुख्य पात्र के साथ ही अन्य पात्र के चरित्र को भी नाटककार ने बड़े कुशलता चित्रित किया हैं। इस नाटक में मुख्य पात्र संज्ञा की चरित्र-चित्रण यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप मनोवैज्ञानिक अध्ययन के साथ ही सामाजिक संघर्ष के उत्थान-पतन के मार्ग को दिग्दर्शित करता है। इस नाटक में चरित्र के चारित्रिक प्रवृति के अनुरूप चित्रण किया गया है एवं वेष-भूषा और विभिन्न लक्षण आदि भी पात्र के चरित्र के अनुकूल ही चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ संज्ञा के चरित्र का अस्थिर

एवं चंचल युवा के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं बैजू के चरित्र लम्पट(लफंगा), विलासी, विवेकहीन एवं स्वार्थी पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ पुष्पा के चरित्र का चित्रण सहिष्णु, संतोषी और स्वाभिमानी

मैथिल कन्या के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं लिली के चरित्र को नवयुगीन मैथिल कन्या के रूप में चित्रित किया गया है एवं अन्य सभी पात्र के चरित्र का चित्रण भी प्रसंगानुकूल कुशलता से चित्रित किया गया है। अत: इस नाटक के चरित्र-चित्रण अभिनेयता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से कथानक के प्रसंगानुकूल एवं पत्रोचित है, जो नाटककार के उत्कृष्ट एवं उपयुक्त चरित्र-चित्रण के परिचायक है।

"जुएल कनकनी" नाटक में कुछ के रहते हुए भी मैथिली नाटक के विकास में विशेष महत्व है। यह नाटक चरित्र-चित्रण के विकास, कथोपकथन की स्वाभाविकता और निम्नवर्गीय समाज के पारिवारिक की स्त्री उत्पीड़न के संघर्ष के को चित्रित करने में पूर्णत: सफल है, जो इस नाटक की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। अत: यह नाटक आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के लिए प्रासंगिक ही नहीं बल्कि अग्रणीय प्रसांगिक नाटक में एक है।

"जुएल कनकनी" नाटक के लेखन का उद्देश्य निस्संदेह यह है कि नवयुगीन समाजिक संघर्ष को चित्रित कर लोगों के ह्रदय को उदात्त बनाना एवं जागृत करना है, लेकिन इस नाटक का मुख्य उद्देश्य नारी की जागृत कर मैथिल युवा के गौरव का महत्वांकन करना है। अत: नाटककार के इस नाटक लेखन का उद्देश्य में कुत्सित भावना को समाप्त कर लोगों के ह्रदय को उदात्त बनाना एवं की जागृत कर मैथिल युवा के गौरव का महत्वांकन करना है, जो मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट एवं कुशल नाट्य लेखन के उद्देश्य को सिद्ध करता है।

"जुएल कनकनी" का आरम्भ और समापन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के नियम का पालन न करते हुए पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप किया

गया है। यह नाटक नट-नटी, सूत्रधार के आरम्भिक प्रस्तावना-दृश्य एवं पं० श्री गोविन्द झा तथा श्री ईशनाथ झा के नाटक में जो मंगलश्लोक का निवेश हैं, इन सभी को वहिष्कार करते हुए यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप ही आरम्भ होती

(144)

है। इस नाटक का समापन भी संस्कृत नाट्य परंपरा के अनुसार भरतवाक्य से न होते है, नये रीति से किया गया है। अत: इस नाटक के आरम्भ और समापन संस्कृत नाटक के परंपरा अनुकूल पूर्णरूपेण न होते हुए आधुनिक नाट्य परंपरा को आधारित कर नये रीति से लिखा गया है, जो आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं साहित्य से दृष्टिकोण उपयुक्त है।

अंतत: सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि उपयोगिता के दृष्टिकोण, नाटकीयता, कथोपकथन के सरलता-स्वाभाविकता `एवं भाषा के अकृत्रिम प्रयोग के दृष्टिकोण से नाटककार महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक “जुएल कनकनी” आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु विशिष्ट उपयुक्त, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है। इस नाटक का कई बार सफल की प्रस्तुति हुई है। अत: नाटककार पं० श्री महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक “जुएल कनकनी” आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अभी भी श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है।

----

6. "एक छल राजा" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"एक छल राजा" नाटक नाटककार श्री उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' द्वारा लिखा गया है। इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबधित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1973 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1973 ई० है।

"एक छल राजा" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, मैथिली रंगमंच प्रकाशन, 162/ए/85 लेक गार्डेन, कलकत्ता- 700045, द्वारा 1973 ई० में प्रकाशित की गई है। नाटककार ने इस नाटक को चार अंकों में विभाजित किया है, जिसमें दृश्यों की संख्या पंद्रह(15) है। इस नाटक मे कुल पात्र बारह(12) है, जिसमें स्त्री पात्र तीन(3) और पुरुष पात्र नौ(9) है। यह नाटक बिलासपुर के भूतपूर्व राजा अभिमान कुमार देव के बिलासप्रियता, संगीत-प्रियता एवं मिथ्या अहंकार के कथानक को केंदित कर नाटककर नाट्यरूप दिया है। प्रतिद्वींद्वी पात्र धनिक लाल है, जिनके पूर्वज का जीवकापन राजा के आश्रय से होता था किन्तु परिवर्तित परिस्थिति में शहर के प्रसाद से अकस्मात धन-धान्य से वह संपण्य हो जाता है। अभिमान कुमार पन्नाबाई के मुजरा में अपना सम्पूर्ण धन बिनास कर देता है राज के दैयनीय स्थिति के प्रसंग को बिरंचि बार-बार राजा को सूचित करता है, किन्तु

उन पर उसका कोई प्रभाव नहि परता है। उनकी कन्या मोहिनी प्रोफेसर से प्रेम करती है एवं सुभंकर मोहिनी से इस हेतु प्रेम करता है, जो उसकी सहायता से धन प्राप्त होगा जिससे वो बिदेश जाकर पीएचडी कर सकें, किन्तु उसका कल्पना पर तुषारपात हो जाता है, कारण राजकोष पहले से खाली हो गया है। धनिक लाल

अपने बेटा के जन्मदिन पर मुजरा करवाता है, जिसका निमंत्रण पाकर अभिमान कुमार को मन के अंडर पीड़ा महसूस होती है की उनके रहते पन्ना बाई का मुजरा अन्यत्र कैसे हो सकता है। राजा विरंचि को आदेश देता है की पन्ना बाई का मुजरा के मुजरा का आयोजन किया जाई और उसमे धनिक लाल को आमंत्रित कर उसे अपमानित किया जाई। इस फलस्वरूप धनिक लाल के मन में प्रतिसोध को भावना जागृत हो जाता है एवं अभिमान कुमार को राजमहल को त्यागने को स्थिति आ जाता है, कारण धनिक लाल उसको गिरवी ले चुका है। राजा को जब वस्तु स्थिति की जानकारी होती है एवं तत्क्षण हृदय की गति रुक जाने के कारण उनकी मृत्यु हो जाता है। इस नाटक के कथानक में राज महल के पतन एवं समाज के निम्न वर्ग के उत्थान के घटना को नाटककार ने बड़े कुशलता से यथार्थवादी परंपरा के अनुकूल प्रस्तुत किया है। इस नाटक के कथानक अत्यन्त सुसंगठित एवं यथार्थवादी है। अत: इस नाटक के नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के अनुरूप नाटक होते हुए भी आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

“एक छल राजा” नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण का पालन नहीं किया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य परंपरा का पालन किया गया है। इस रूपक नाटक में पश्चिम के यथार्थवाद का निश्चित ही पूर्ण रुपेण प्रभाव है, जो स्पष्टत: प्रतीत होता है। इस नाटक में अंक-विधान को नाटककार ने संस्कृत नाट्य

लक्षण ग्रंथ के सिद्धयांत के अनुकूल चार भाग में विभाजित किया है। इस नाटक के नायक नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत के अनुकूल धीरोदत्त न होते हुए समाज के निम्न मध्यमवर्गीय पात्र है। आचार्य भरतमुनि के नाट्य लक्षण ग्रंथ में नाटक रचना के लक्ष्य रस निष्पति को स्वीकार किए है। इस नाटक में रस की निष्पति कथानक के अनुकूल हुई है, तथा रस व्यञ्जना से दर्शक को अनिर्वचनीय

आनन्द की अनुभूति होती है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत: दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"एक छल राजा" नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है, कियोंकि दृश्य को यथार्थवादी परंपरा के अनुरूप संयोजित किया गया है। इस नाटक में कथानक के अनुकूल ही नाटककार जमींदार के पतन एवं निम्न मध्यमवर्गीय परिवार के उदय की कथा के माध्यम से सामाजिक विडम्बना, विसंगति, व्यभिचार, मानसिक कुंठा आदि के बीच मानवीय संघर्ष के वास्तविकता को क्रमश: चारों भाग का दृश्यांकन के माध्यम से अत्यधिक सुदृढ़ एवं सुसंगठित रूप से संयोजित किया गया है। इस नाटक के दृश्य के बीच के अंतर-संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। नाटक का प्रमुख तत्व अभिनय है। अभिनेता रंगमंच पर आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक अभिनय द्वारा दर्शक के हृदय में जो आहलाद उत्पन्न कराने सक्षम होते हैं, वही दृश्य काव्य की प्राण है, जिसको नाटककार ने उत्कृष्ट ढंग से विश्लेषित कर संयोजित

किया गया है, जो गम्भीर नाट्य चिंतन का परिचायक है। इस नाटक के दृश्यांकन में विलासपुर के राजा अभिमान कुमार के जीवन के यथार्थपरक घटना के विकास में अकृत्रिम सहजता मंच निर्देशक के सटीकता या मंचनीयता को कुशलता से समावेश किया गया है एवं अन्य सभी दृष्टिकोण से दृश्य-संयोजन, अंतर-संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ माना जा सकता है। अत: इस नाटक में दृश्य

संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता अनुकूल एवं उत्कृष्ट है, जो अभिनय, अभिनेता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से नाटककार द्वारा कुशल दृश्य संयोजन का परिचायक है।

"एक छल राजा" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल, तीक्ष्ण जीवंत, स्वाभाविक एवं पात्रोचित के अनुकूल अति यथार्थवादी भाषा का प्रयोग कर कथोपकथन में बड़े कुशलता से समावेश किये हैं। नाटक में चरित्र-चित्रण का मुख्य अस्त्र संवाद-योजना या कथोपकथन को माना जाता है, जिसमें यह नाटक सबल, तीक्ष्ण एवं सजीव कथोपकथन उपस्थित करता है। इस नाटक के कथोपकथन पूर्णत: गद्यात्मक रूप में लिखा गया है। मैथिली नाटक के प्राय: सभी नाटक में गीत की उपस्थिति रहती थी, वहीं इस नाटक में गीत हैं ही नही। इस नाटक के शब्द संयोजन में भी नाटककार से पाश्चात्य नाट्य परंपरा के समयाअनुकुल राजा के पतन और निम्नवर्ग के उत्थान के बीच सामाजिक संघर्ष के वास्तविकता को कथोपकथन के माध्यम से कुशलता से संयोजित किया गया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित, स्वभाविक और सरल है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से होते हुये भी प्रभावकारी हैं।

"एक छल राजा" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण कथानुकूल पात्रोचित एवं स्वभावानुकूल चित्रित किया है। इस नाटक में नाटककर ने मुख्य पात्र के साथ ही अन्य पात्र के चरित्र को भी नाटककार ने बड़े कुशलता चित्रित किया हैं। इस नाटक में मुख्य पात्र जमींदार का चरित्र-चित्रण यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप

मनोवैज्ञानिक अध्ययन के साथ ही सामाजिक संघर्ष के उत्थान-पतन के मार्ग को दिग्दर्शित करता है। इस नाटक में चरित्र के चारित्रिक प्रवृति के अनुरूप चित्रण किया गया है एवं वेष-भूषा और विभिन्न लक्षण आदि भी पात्र के चरित्र के अनुकूल ही चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ राजा अभिमान कुमार के चरित्र का अस्थिर, घमंडी एवं स्वाभिमानी पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं धनिकलाल के चरित्र निम्नवर्गीय परिवार के उभरते हुए युवक के रूप में

चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ मोहनी के चरित्र का चित्रण संतोषी और स्वाभिमानी मैथिल कन्या के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं रानी के चरित्र को राजयुगीन मैथिल स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है एवं अन्य सभी पात्र के चरित्र का चित्रण भी प्रसंगानुकूल कुशलता से चित्रित किया गया है। अत: इस नाटक के चरित्र-चित्रण अभिनेयता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से कथानक के प्रसंगानुकूल एवं पत्रोचित है, जो नाटककार के उत्कृष्ट एवं उपयुक्त चरित्र-चित्रण के परिचायक है।

"एक छल राजा" नाटक में कुछ के रहते हुए भी मैथिली नाटक के विकास में विशेष महत्व है। यह नाटक चरित्र-चित्रण के विकास, कथोपकथन की स्वाभाविकता एवं राजा के पतन और निम्नवर्ग के उत्थान के संघर्ष को चित्रित करने में पूर्णत: सफल है, जो इस नाटक की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। अत: यह नाटक आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के लिए प्रासंगिक ही नहीं बल्कि अग्रणीय प्रसांगिक नाटक में एक है।

"एक छल राजा" नाटक के लेखन का उद्देश्य निस्संदेह यह है कि राजा के पतन और निम्नवर्ग के उत्थान के समाजिक संघर्ष को चित्रित कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं जागृत करना है, लेकिन इस नाटक का मुख्य उद्देश्य राजा के पतन और निम्नवर्ग के उत्थान के गौरव का महत्वांकन करना है। अत: नाटककार के इस नाटक लेखन का उद्देश्य में कुत्सित भावना को समाप्त कर

लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं की जागृत कर मैथिल युवा के गौरव का महत्वांकन करना है, जो मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट एवं कुशल नाट्य लेखन के उद्देश्य को सिद्ध करता है।

"एक छल राजा" का आरम्भ और समापन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के नियम का पालन न करते हुए पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप किया गया है। अत: इस नाटक के आरम्भ और समापन संस्कृत नाटक के परंपरा

अनुकूल पूर्णरूपेण न होते हुए आधुनिक नाट्य परंपरा को आधारित कर नये रीति से लिखा गया है, जो आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं साहित्य से दृष्टिकोण उपयुक्त है।

अंतत: सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि उपयोगिता के दृष्टिकोण, नाटकीयता, कथोपकथन के सरलता-स्वाभाविकता `एवं भाषा के अकृत्रिम प्रयोग के दृष्टिकोण से नाटककार श्री उदय नारायण सिंह 'नचिकेता" द्वारा लिखित नाटक "एक छल राजा" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त, उत्कृष्ट एवं मूल्यवान कृति है। इस नाटक की सफल की प्रस्तुति भी हुई है। अत: नाटककार श्री उदय नारायण सिंह 'नचिकेता" द्वारा लिखित नाटक "एक छल राजा" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है।

----

7. "भफाइत चाहक जिनगी" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"भफाइत चाहक जिनगी" नाटक नाटककार श्री सुधांशुशेखर चौधरी द्वारा लिखा गया है। इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबधित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1974 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1974 ई० है।

"भफाइत चाहक जिनगी" के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, चेतना समिति, विद्यापति मार्ग, पटना- 800001 द्वारा 1975 ई० में प्रकाशित की गई है। नाटककार ने इस नाटक को तीन अंकों में विभाजित किया है, जिसमें दृश्यों की संख्या चौबीस(24) है। इस नाटक मे कुल पात्र चौदह(14) है, जिसमें स्त्री पात्र दो(2) और पुरुष पात्र बारह(12) है। यह नाटक शिक्षित बेरोजगार नवयुवक महेश के संघर्षपूर्ण जीवन के कथा को केंदित कर लिखा गया है। महेश शहर मे चाय के व्यवसाय करता है, लेकिन इनका पिता इससे अनभिज्ञ हैं। महेश मे साहित्यिक प्रतिभा है और वह अपने आमदनी से बचाकर व्यक्तिगत पुस्तकालय बनाना चाहते है, लेकिन इनका अभिलाषा पूर्ण नहीं होती है। वस्तुत: इस नाटक का नाम प्रतीकात्मक है। इस नाटक के नायक के कल्पना भाफ की तरह उड़ जाती है,

लेकिन स्वाभिमान के साथ परिस्थिति से संघर्ष करते रहें हैं। नाटक एवं रंगमंच के क्षेत्र में नाटककार एकमात्र मातृभाषा मैथिली में ही नही, बल्कि राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी ख्याति अर्जित किए हुए हैं। नाटककार स्वयं एक अभिनेता भी हैं, इसलिए रंगमंच हेतु नाटक में कौन-कौन सी वस्तु की है, उससे वह पूर्णरूपेण परिचित हैं। अत: इस नाटक का नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के अनुरूप नाटक होते हुए भी आधुनिक मैथिली साहित्य

एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"भफाइत चाहक जिनगी" नाटक संस्कृत नाट्य रूपक ग्रंथ के लक्षण अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा अनुकूल है। इस नाटक में अंकविधान संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण के अनकुल नहीं है, एवं अन्य लक्षण भी संस्कृत रूपक लक्षण के अनुकूल न होते हुए यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुकूल है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत: दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

“भफाइत चाहक जिनगी” नाटक मे नाटककार द्वारा अत्यधिक दृश्यों को समावेश किया गया है, जिसके वजह से नाटक के विशालता के कारण एक दिन में इस नाटक की प्रस्तुति है, जो रंगमंचीय दृष्टिकोण से त्रुटिपूर्ण माना जा सकता है। एक दृश्य से दूसरे दृश्य के बीच का अंतर संबंध और सामंजस्ता को नाटककार द्वारा औचित्य रूप से समावेश किया गया है। इस नाटक में कोई भी दृश्य स्वभाविक रूप से दर्शक को मुग्ध करने में सक्षम है। अत: इस नाटक के दृश्य-संयोजन, अंतरसंबंध एवं सामंजस्ता मैथिली साहित्य के दृष्टिकोण से जितना

उपयुक्त और उत्कृष्ट है, उससे कहीं ज्यादा रंगमंचीय दृष्टिकोण से है।

“भफाइत चाहक जिनगी” नाटक में नाटककार ने सजीव और प्रवाहयुक्त कथोपकथन समावेश कर प्रमाणित किया है कि इस नाटक शब्द-संयोजन में मैथिली अभिव्यक्ति का सामर्थ कितना है। इस नाटक में नाटककार ने पात्रोचित सरल एवं स्वाभाविक भाषा का समावेश किया है। इस नाटक में छोटे-छोटे कथोकथन नाटक के शब्द संयोजन में नाटककार के कुशल नाट्य लेखन के परिचायक है। नाटककार ने नाटक में यथार्थवादी परंपरा के अनुरूप ही गद्यात्मक रूप को समावेश किया है। इस नाटक की सरल भाषा रंगमंचीय दृष्टिकोण से अनुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है। अत: इस नाटक के शब्द-संयोजन में गद्य का समावेश साहित्य एवं रंगमंच प्रस्तुति के अनुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है, बल्कि मैथिली के दृष्टिकोण से उपयुक्त माना जा सकता है।

“भफाइत चाहक जिनगी” नाटक में सभी पात्रों के चरित्र-चित्रण में नाटककार ने कुशलता से चित्रित करने का प्रयास किया है। नाटककार ने इस नाटक मे सभी पात्रों को निखारने हेतु समाजिकता के साथ ही स्वाभिकता एवं नवीनता को कुशलता से समावेश किया है, फिर भी इस नाटक में चरित्र-चित्रण प्रस्तुति के

दृष्टिकोण से अत्यधिक उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है। अत: इस नाटक का चरित्र चित्रण अभिनेता एवं अभिनय के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है।

"भफाइत चाहक जिनगी" नाटक में मुख्य कथ्य सामाजिक होते हुए भी प्राचीनता में नवीनता, नवीनता में आधुनिकता और आधुनिकता में सरसता से परिपूर्ण कर नाटक में विशिष्टता प्रदान करने का नाटककार ने हर संभव प्रयास किया है। अत: यह माना जा सकता है कि आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु प्रासंगिक है।

(154)

"भफाइत चाहक जिनगी" नाटक में नाटककार ने समाज के शिक्षित युवा के बेरोजगारी के फलस्वरूप आंतरिक द्वंद्व के प्रसंग में नवीनता और आधुनिकता को अपने नाट्य चिंतन से उत्कृष्टता देने का प्रयास किया है, जो नाटककार के नाट्य लेखन के उद्देश्य को दर्शता है। अत: इस नाटक लेखन के उद्देश्य ऐतिहासिक प्रसंग में आधुनिकता एवं नवीनता समावेश कर साहित्यिक उत्कृष्टता को दर्शाना माना जा सकता है।

"भफाइत चाहक जिनगी" नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल न होते हुए यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुकूल किया गया है। अत: नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ न होते हुए यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुकूल है, लेकिन रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त और उत्कृष्ट है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री सुधांशुशेखर चौधरी द्वारा लिखित नाटक "भफाइत चाहक जिनगी" आधुनिक सामाजिक नाटक में ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण एवं उत्कृष्ट है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य हेतु गौरव का विषय है। इस नाटक की प्रथम प्रस्तुति 'चेतना समिति' नाट्य मंच के द्वारा

29 नवम्बर 1974 ई० को 'विद्यापति पर्व' पर हुई है, जिसमें 35 हजार दर्शक बिना चूँ शब्द किये एक-एक दृश्य देखते रहे। इस नाटक के सफलता और इससे बेहतर प्रमाण किया हो सकता है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अमूल्य एवं स्मरणीय कृति है।

----

8. "लेटाइत आँचर" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"लेटाइत आँचर" नाटक नाटककार श्री सुधांशुशेखर चौधरी द्वारा लिखा गया है। इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबधित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है, उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1975 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1975 ई० है।

"लेटाइत आँचर" के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, चेतना समिति, विद्यापति मार्ग, पटना- 800001 द्वारा 1975 ई० में प्रकाशित की गई है। इस नाटक में कुल पात्र बारह(12) है, जिसमें स्त्री पात्र दो(2) और पुरुष पात्र दस(10) है। यह नाटक दहेज के कुपरिणाम को केंदित कर लिखा गया है। विवाह में मोटरसाइकिल नही मिलने पर पति अपने स्त्री को त्याग देता है, इसके परिणाम स्वरूप स्त्री बताह(पागल) हो जाती है। इस नाटक में परित्यक्ता नारी के मानसिक स्थिति के विश्लेषण और मातृत्व हेतु छटपटाहट के अभिव्यक्ति को कौशलता से दर्शाया गया

है। नाटककार ने इस नाटक में पारिवारिक विघटन के समस्या को अच्छे से प्रस्तुत किये हैं। इस नाटक में नाटककार ने पति-परित्यक्ता नारी की संतान हेतु तड़पती मातृत्व की ममता "लेटाइत आँचर" के नाम से प्रस्तुत किया है, जो कथानक के अनुकूल उपयुक्त है। अत: इस नाटक का नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है तथा पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के अनुरूप नाटक होते हुए भी आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"लेटाइत आँचर" नाटक नाटक संस्कृत नाट्य रूपक ग्रंथ के लक्षण अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा अनुकूल है। नाटक के विषय वस्तु को

इतिहास के पृष्टभूमि पर कण्ठहार के समान सुंदर एवं भावमय चित्र को समावेश करने में नाटककार सफल हुए है। इस नाटक में अंकविधान नाट्य रूपक लक्षण के अनकुल है, एवं अन्य लक्षण भी रूपक लक्षण के अनुकूल है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत: दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"लेटाइत आँचर" नाटक में नाटककार ने सजीव और प्रवाहयुक्त कथोपकथन समावेश कर प्रमाणित किया है कि इस नाटक शब्द-संयोजन में मैथिली अभिव्यक्ति का सामर्थ कितना है। नाटककार ने इस नाटक में पात्र के अनुकूल भाषा का समावेश किया है। इस नाटक के कथोकथन नाटक के शब्द संयोजन के

त्रुटि को दर्शाता है। नाटककार ने नाटक को गद्‌यात्मक ही रूप में समावेश किया है, एवं जिसमें नाटककार द्‌वारा गद्‌य की सरलता इस नाटक प्रमुख आकर्षण है। इस नाटक की भाषा भी रंगमंचीय दृष्टिकोण से अनुकूल नहीं माना जा सकता है। अत: इस नाटक के शब्द-संयोजन में गद्‌य का समावेश प्रस्तुति के अनुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है, बल्कि मैथिली साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त माना जा सकता है।

"लेटाइत आँचर" नाटक के दृश्य-संयोजन मे नाटककार द्‌वारा दृश्यों का समावेश बड़े कुशलता किया गया है, जो नाटककार के नाट्‌य-लेखन के कौशलता को दर्शाता है। इस नाटक के एक दृश्य से दूसरे दृश्य के बीच का अंतर संबंध और

सामंजस्ता को नाटककार द्‌वारा औचित्य रूप से समावेश कर प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक में कोई भी दृश्य स्वभाविक रूप से दर्शक को मुग्ध करने में सक्षम है। अत: इस नाटक के दृश्य-संयोजन, अंतरसंबंध एवं सामंजस्ता मैथिली साहित्य के दृष्टिकोण से जितना उपयुक्त और उत्कृष्ट है, उतना रंगमंचीय दृष्टिकोण से भी माना जा सकता है।

"लेटाइत आँचर" नाटक में सभी पात्रों के चरित्र-चित्रण में नाटककार ने कुशलता से चित्रित करने का प्रयास किया है। नाटककार ने इस नाटक मे सभी पात्रों को निखारने हेतु समाजिकता के साथ ही स्वाभिकता एवं नवीनता को कुशलता से समावेश किया है, फिर भी इस नाटक में चरित्र-चित्रण प्रस्तुति के दृष्टिकोण से अत्यधिक उपयुक्त माना जा सकता है। अत: इस नाटक का चरित्र चित्रण अभिनेता एवं अभिनय के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है।

"लेटाइत आँचर" नाटक में मुख्य कथ्य सामाजिक होते हुए भी प्राचीनता में नवीनता, नवीनता में आधुनिकता और आधुनिकता में सरसता से परिपूर्ण कर नाटक में विशिष्टता प्रदान करने का नाटककार ने हर संभव प्रयास किया है।

अत: यह माना जा सकता है कि आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु प्रासंगिक है।

"लेटाइत आँचर" नाटक में नाटककार ने सामाजिक प्रसंग में नवीनता और आधुनिकता को समावेश कर समाज के द्वारा नारी के स्थिति को अपने नाट्य चिंतन से उत्कृष्टता देने का प्रयास किया है, जो नाटककार के नाट्य लेखन के उद्देश्य को दर्शाता है। अत: इस नाटक लेखन के उद्देश्य ऐतिहासिक प्रसंग में आधुनिकता एवं नवीनता समावेश कर साहित्यिक उत्कृष्टता को दर्शाना माना जा सकता है।

"लेटाइत आँचर" इस नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के

अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल किया गया है। अत: नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल उपयुक्त एवं उकृष्ट माना जा सकता है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री सुधांशुशेखर चौधरी द्वारा लिखित नाटक "लेटाइत आँचर" आधुनिक सामाजिक नाटक में ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य हेतु गौरव का विषय है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति में एक है।

----

9. "ओकरा अंगना के बारहमासा" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"ओकरा अंगना के बारहमासा" नाटक नाटककार श्री महेन्द्र मलांगिया द्वारा लिखा गया है। इस नाटक के लेखन काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से संबन्धित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1979 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1979 ई० है।

"ओकरा अंगना के बारहमासा" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, चेतना समिति, विद्यापति मार्ग, पटना- 800001 द्वारा 1980 ई० में प्रकाशित की गई है। इस नाटक को नाटककार ने अंकों में विभाजित न करके केवल विभाजित किया है, जिसमें दृश्यों की संख्या बारह(12) है। इस नाटक मे कुल पात्र पंद्रह(9) है, जिसमें स्त्री पात्र एक(1) और पुरुष पात्र आठ(8) है। यह नाटक वर्ष के बारहोमास को एक-एक दृश्य के रूप में अंकित कर एक दीन-हीन निम्न जातीय पारिवारिक समस्या एवं जमींदार द्वारा उत्पीड़न और शोषण की कथानक को केंदित कर

लिखा गया है। देश स्वतंत्र हुआ, नये सरकार तो बना लेकिन इससे जो अपेक्षा समाज के उपेक्षित, दीन-हीन निम्न जातीय लोक को था वह पूर्ण नहीं हुआ। कोई विशेष तात्विक परिवर्तन नहीं हुई। इसी तरह की सामाजिक शोषण एवं उत्पीड़न की कथा को नाटककार ने चित्रित किया है। इस नाटक के कथानक में मुख्य पात्र निम्न जातीय 'मल्लर' के पारिवारिक समस्या एवं जमींदार द्वारा उत्पीड़न और शोषण को नाटककार ने बड़े कुशलता से समावेश किया है। यह नाटक एक आधुनिक सामाजिक नाटक है जो मनुष्य के अवचेतन मन में बैठकर उसके एक-एक उलझन को दिखाना चाहता है। इस नाटक के कथानक अत्यन्त सुसंगठित एवं

अतियथार्थवादी है। अत: इस नाटक के नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के अनुरूप नाटक होते हुए भी आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"ओकरा अंगना के बारहमासा" नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण का पालन नहीं किया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य परंपरा का पालन किया गया है। इस रूपक नाटक में पश्चिम के यथार्थवाद का निश्चित ही पूर्ण रुपेण प्रभाव है, कारण यथार्थवादी नाटककारों ने नाटक के क्षेत्र राजा, महाराजा तथा राजकुमार तक ही सीमित न मानते हुए बल्कि समस्त संसार नाटक की परिधि में रखा है। इस नाटक में अंक-विधान को नाटककार ने संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के सिद्धयांत के अनुकूल न विभाजित करते हुए केवल बारह(12) दृश्यों में विभाजित किया है। इस नाटक के नायक नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत के अनुकूल धीरोदत्त न होते हुए समाज के निम्न मध्यमवर्गीय पात्र है। वस्तुत: कथानक के आधार पर इस नाटक के मुख्य पात्र नायिका संज्ञा है एवं अन्य लक्षण भी संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल है। आचार्य भरतमुनि के नाट्य लक्षण ग्रंथ में नाटक रचना के लक्ष्य रस निष्पति को

स्वीकार किए है। इस नाटक में रस की निष्पति कथानक के अनुकूल हुई है, तथा रस व्यञ्जना से दर्शक को अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत: दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं

उत्कृष्ट है।

"ओकरा अंगना के बारहमासा" नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है, कियोंकि दृश्य को अतियथार्थवादी परंपरा के अनुरूप संयोजित किया गया है। इस नाटक में कथानक के अनुकूल ही नाटककार निम्न मध्यमवर्गीय पारिवारिक विडम्बना, विसंगति, जमींदार द्वारा शोषण एवं व्यभिचार, मानसिक कुंठा आदि के बीच मानवीय संघर्ष के वास्तविकता को क्रमश: सभी दृश्यों के दृश्यांकन के माध्यम से अत्यधिक सुदृढ़ एवं सुसंगठित रूप से संयोजित किया गया है। इस नाटक दृश्य के अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। नाटक का प्रमुख तत्व अभिनय है। अभिनेता रंगमंच पर आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक अभिनय द्वारा दर्शक के हृदय में जो आह्लाद उत्पन्न कराने सक्षम होते हैं, वही दृश्य काव्य की प्राण है, जिसको नाटककार ने खुद को चिकित्सक रूप में रखकर मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषित कर संयोजित किया गया है, जो गम्भीर नाट्य चिंतन का परिचायक है। इस नाटक के दृश्यांकन में यथार्थपरक ग्रामीण परिवेश, घटना के विकास में अकृत्रिम सहजता मंच निर्देशक के सटीकता या मंचनीयता कुशलता से समावेश किया गया है एवं

अन्य सभी दृष्टिकोण से दृश्य-संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ माना जा सकता है। अत: इस नाटक में दृश्य संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता अनुकूल एवं उत्कृष्ट है, जो अभिनय, अभिनेता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से नाटककार द्वारा कुशल दृश्य संयोजन का परिचायक है।

"ओकरा अंगना के बारहमासा" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल, तीक्ष्ण जीवंत, स्वाभाविक एवं पात्रोचित के अनुकूल अति यथार्थवादी भाषा का प्रयोग कर कथोपकथन में बड़े कुशलता से समावेश किये हैं। नाटक में चरित्र-चित्रण का मुख्य अस्त्र संवाद-योजना या कथोपकथन को माना जाता है, जिसमें यह नाटक सबल, तीक्ष्ण एवं सजीव कथोपकथन उपस्थित करता है। इस नाटक के कथोपकथन पूर्णत: गद्यात्मक रूप में लिखा गया है। मैथिली नाटक के प्राय: सभी

नाटक में गीत की उपस्थिति रहती थी, वहीं इस नाटक में गीत हैं ही नही। इस नाटक के शब्द संयोजन में भी नाटककार से पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकुल स्वगत भाषण बहिष्कार एवं सामाजिक संघर्ष के वास्तविकता को कथोपकथन के माध्यम से संयोजित किया गया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित, स्वभाविक और सरल है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से होते हुये भी प्रभावकारी हैं।

"ओकरा अंगना के बारहमासा" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण कथानुकूल पात्रोचित एवं स्वभावानुकूल चित्रित किया है। इस नाटक में नाटककर ने मुख्य पात्र के साथ ही अन्य पात्र के चरित्र को भी नाटककार ने बड़े कुशलता चित्रित किया हैं। इस नाटक में मुख्य पात्र मल्लर के चरित्र-चित्रण यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप मनोवैज्ञानिक अध्ययन के साथ ही सामाजिक संघर्ष के उत्थान-पतन के मार्ग को दिग्दर्शित करता है। इस नाटक में चरित्र के चारित्रिक प्रवृति के अनुरूप चित्रण किया गया है, एवं वेष-भूषा और विभिन्न लक्षण आदि भी पात्र के चरित्र के अनुकूल ही चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ मल्लर के

चरित्र को दीन-हीन निम्न जातीय वृद्ध पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है, एवं अन्य सभी पात्र के चरित्र का चित्रण भी प्रसंगानुकूल कुशलता से चित्रित किया गया है। अत: इस नाटक के चरित्र-चित्रण अभिनेयता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से कथानक के प्रसंगानुकूल एवं पत्रोचित है, जो नाटककार के उत्कृष्ट एवं उपयुक्त चरित्र-चित्रण के परिचायक है।

"ओकरा अंगना के बारहमासा" नाटक में कुछ के रहते हुए भी मैथिली नाटक के विकास में विशेष महत्व है। यह नाटक चरित्र-चित्रण के विकास, कथोपकथन की स्वाभाविकता और निम्न जातीय पारिवारिक समस्या एवं जमींदार द्वारा शोषण एवं उत्पीड़न के बीच जीवन के संघर्ष को चित्रित करने में पूर्णत: सफल है, जो इस नाटक की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। अत: यह नाटक आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के लिए प्रासंगिक ही नहीं बल्कि अग्रणीय प्रसांगिक नाटक में एक है।

(163)

"ओकरा अंगना के बारहमासा" नाटक के लेखन का उद्देश्य निस्संदेह यह है कि समाजिक के निम्न वर्गीय परिवारिक स्थिति और संघर्ष को चित्रित कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं जागृत करना है, लेकिन इस नाटक का मुख्य उद्देश्य वर्तमान समाज में निम्न वर्गीय स्थिति एवं संघर्ष के माध्यम से समाज को जागृत करना है। अत: नाटककार के इस नाटक लेखन का उद्देश्य में कुत्सित भावना को समाप्त कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं की जागृत करना है, जो मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि अन्य साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट एवं कुशल नाट्य लेखन के उद्देश्य को सिद्ध करता है।

"ओकरा अंगना के बारहमासा" का आरम्भ और समापन मैथिली लोक नाट्य परंपरा एवं यथार्थवादी नाट्य परंपरा के मिश्रित रूप के अनुरूप माना जा सकता है। यह नाटक नट-नटी, सूत्रधार के आरम्भिक प्रस्तावना-दृश्य एवं जो मंगलश्लोक का निवेश हैं, इन सभी को वहिष्कार करते हुए यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप ही

आरम्भ होती है। इस नाटक का समापन भी नये रीति से किया गया है। अत: इस नाटक के आरम्भ और समापन संस्कृत नाटक के परंपरा अनुकूल पूर्णरूपेण न होते हुए आधुनिक नाट्य परंपरा को आधारित कर नये रीति से लिखा गया है, जो आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं साहित्य से दृष्टिकोण उपयुक्त है।

अंतत: सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि उपयोगिता के दृष्टिकोण, नाटकीयता, कथोपकथन के सरलता-स्वाभाविकता एवं भाषा के अकृत्रिम प्रयोग के दृष्टिकोण से नाटककार महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक "ओकरा अंगना के बारहमासा" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु विशिष्ट उपयुक्त, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है। इस नाटक का कई बार सफल की प्रस्तुति हुई है। इस नाटक की प्रथम प्रस्तुति चेतना समिति पटना द्वारा 22 फरवरी 1979 ई० को हुई है।

10. "बुधिबधिया" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"बुधिबधिया" नाटक नाटककार श्री गंगेश गुंजन द्वारा लिखा गया है। इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबन्धित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है, उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1982 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1982 ई० है।

"बुधिबधिया" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, चेतना समिति, विद्यापति मार्ग, पटना- 800001 द्वारा 1982 ई० में प्रकाशित की गई है। इस नाटक को नाटककार ने तीन अंकों में विभाजित न करके केवल विभाजित किया है, जिसमें दृश्यों की संख्या एक्कीस(21) है। इस नाटक मे कुल पात्र पंद्रह(15) है, जिसमें स्त्री पात्र चार(4) और पुरुष पात्र एग्यारह(11) है। यह नाटक भारत की

दुर्दशा के कारण के कथानक को केंदित कर लिखा गया है। इस नाटक के कथानक में नाटकाकार ने भारत की दुर्दशा को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से बड़े कुशलता से समावेश किया है। इस नाटक का कथा वस्तु इस नाटक का कथानक के भारत दुर्दशा के कारण एवं उसके कुपरिणाम तथा सामाजिक रूढ़िवादिता के व्यंग्य पर आधारित है। इस नाटक के कथानक समस्या के प्रस्तुतीकरण एवं उसके समुचित समाधान के दृष्टिकोण पूर्ण सफल नहीं माना जा सकता है। यह नाटक संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के चरण-चिन्ह पर न चलते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुरूप लिखा गया है। अत: अत: इस नाटक के नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के अनुरूप नाटक होते हुए भी आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

(165)

“बुधिबधिया” नाटक नाटक संस्कृत नाट्य रूपक ग्रंथ के लक्षण अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा अनुकूल है। नाटक के विषय वस्तु को इतिहास के पृष्टभूमि पर कण्ठहार के समान सुंदर एवं भावमय चित्र को समावेश करने में नाटककार सफल हुए है। इस नाटक में अंकविधान नाट्य रूपक लक्षण के अनकुल है एवं अन्य लक्षण भी रूपक लक्षण के अनुकूल है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत: दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"बुधिबधिया" नाटक में नाटककार ने सजीव और प्रवाहयुक्त कथोपकथन समावेश कर प्रमाणित किया है कि इस नाटक शब्द-संयोजन में मैथिली अभिव्यक्ति का सामर्थ कितना है। नाटककार ने इस नाटक में पात्र के अनुकूल भाषा का समावेश किया है। इस नाटक के कथोकथन नाटक के शब्द संयोजन के त्रुटि को दर्शाता है। नाटककार ने नाटक को गद्यात्मक ही रूप में समावेश किया है, एवं जिसमें नाटककार द्वारा गद्य की सरलता इस नाटक प्रमुख आकर्षण है। इस नाटक की भाषा भी रंगमंचीय दृष्टिकोण से अनुकूल नहीं माना जा सकता है। अत: इस नाटक के शब्द-संयोजन में गद्य का समावेश प्रस्तुति के अनुकूल उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है, बल्कि मैथिली साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त माना जा सकता है।

"बुधिबधिया" नाटक के दृश्य-संयोजन मे नाटककार द्वारा दृश्यों का समावेश

बड़े कुशलता किया गया है, जो नाटककार के नाट्य-लेखन के कौशलता को दर्शाता है। इस नाटक के एक दृश्य से दूसरे दृश्य के बीच का अंतर संबंध और सामंजस्ता को नाटककार द्वारा औचित्य रूप से समावेश कर प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक में कोई भी दृश्य स्वभाविक रूप से दर्शक को मुग्ध करने में सक्षम है। अत: इस नाटक के दृश्य-संयोजन, अंतरसंबंध एवं सामंजस्ता मैथिली साहित्य के दृष्टिकोण से जितना उपयुक्त और उत्कृष्ट है उतना रंगमंचीय दृष्टिकोण से भी माना जा सकता है।

"बुधिबधिया" नाटक में सभी पात्रों के चरित्र-चित्रण में नाटककार ने कुशलता से चित्रित करने का प्रयास किया है। नाटककार ने इस नाटक मे सभी पात्रों को निखारने हेतु समाजिकता के साथ ही स्वाभिकता एवं नवीनता को कुशलता से समावेश किया है, फिर भी इस नाटक में चरित्र-चित्रण प्रस्तुति के दृष्टिकोण से अत्यधिक उपयुक्त माना जा सकता है। अत: इस नाटक का चरित्र चित्रण अभिनेता एवं अभिनय के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जा सकता है।

"बुधिबधिया" नाटक में मुख्य कथ्य सामाजिक होते हुए भी प्राचीनता में नवीनता, नवीनता में आधुनिकता और आधुनिकता में सरसता से परिपूर्ण कर नाटक में विशिष्टता प्रदान करने का नाटककार ने हर संभव प्रयास किया है। अत: यह माना जा सकता है कि आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु प्रासंगिक है।

"बुधिबधिया" नाटक में नाटककार ने सामाजिक प्रसंग में नवीनता और आधुनिकता को समावेश कर समाज के द्वारा नारी के स्थिति को अपने नाट्य चिंतन से उत्कृष्टता देने का प्रयास किया है, जो नाटककार के नाट्य लेखन के उद्देश्य को दर्शता है। अत: इस नाटक लेखन के उद्देश्य ऐतिहासिक प्रसंग में आधुनिकता एवं नवीनता समावेश कर साहित्यिक उत्कृष्टता को दर्शाना माना जा सकता है।

(167)

"बुधिबधिया" इस नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल किया गया है। अत: नाटक का आरंभ और समापन नाट्य लक्षण ग्रंथ अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल उपयुक्त एवं उकृष्ट माना जा सकता है।

अंतत: ऐतिहासिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि नाटककार श्री गंगेश गुंजन द्वारा लिखित नाटक "बुधिबधिया" आधुनिक सामाजिक नाटक में ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य हेतु गौरव का विषय है। अत: यह नाटक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु मूल्यवान एवं स्मरणीय कृति में एक है।

----

11. "काठकलोक" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"काठक लोक" नाटक नाटककार श्री महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखा गया है। नाटककार श्री महेंद्र इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबधित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है, उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1992 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1992 ई० है।

"काठक लोक" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, गंगा प्रकाशन, लोहना (जनकपुर धाम) द्वारा 1992 ई० में प्रकाशित की गई है। नाटककार ने इस नाटक को अंक एवं दृश्य में विभाजित न करके एक ही स्थल पर के क्रमश: अलग-अलग दिन-रात की घटना को प्रकाश के अप(बन्द) एवं आन(आरम्भ) के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस नाटक मे कुल तेरह(13) पात्र है, जिसमें स्त्री पात्र दो(2) और

पुरुष पात्र एग्यारह(11) है। नाटककार श्री महेन्द्र मलंगिया मैथिली नाट्य साहित्य एवं रंगमंच के मध्य अपने विषय को सूक्ष्म निष्पादन हेतु नाट्य लेखन के क्षेत्र में सर्वोपरि एवं अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किये है। यह अपने प्रत्येक नाटक में समाज के कोशकीय स्वरूप तक पहुंचते हैं, तथा उसको अपने सूक्ष्म दृष्टि से मनोवैज्ञानिक पद्धति से अवलोकित करते हैं। इनके नाटक का विषय समाज के निम्न वर्ग की स्थिति एवं मन:स्थिति है। इनके नाटक के माध्यम से समाजशास्त्र के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त पर आधारित आज के सामाजिक विकासक्रम तक भी पहुँचा जा सकता है। इनका नाटक लोकधर्मी और समाज के बहुसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। यह नाटक मैथिली समाज के ग्रामीण परिवेश के माध्यम से पूँजीपति एवं शासक वर्ग द्वारा शोषण, दुर्भावना, विभ्रांति एवं शारीरिक-

मानसिक उत्पीड़न के अंतर्द्वंद तथा उसके प्रतिफल को केंदित कर लिखा गया है। इस नाटक के कथानक में मुख्य पात्र दानीबाबू द्वारा समाज में चोरी, लूट, हत्या आदि घटना को नाटककार ने मार्मिकता चित्रित किया है। इस नाटक के अंत में साधू द्वारा सामाजिक के अंतरंग में निहित दानी बाबू के रहस्य-जाल को जिस कलात्मक रीति के उद्घाटित किया गया है एवं जिस नाटकीय कौशल से ग्रामीण के आत्मद्वंद्वात्मक ग्रंथि को खोलकर इसबार प्रतिशोध की भावना को प्रज्वलित किया गया है, वह बहुत ही प्रभावित करता है। यह नाटक एक आधुनिक सामाजिक नाटक है, जो मनुष्य के अवचेतन मन में बैठकर उसके एक-एक उलझन को दिखाना चाहता है। इस नाटक के कथानक में अत्यन्त सुसंगठित एवं अतियथार्थवादी है। अत: इस नाटक के नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं लोक नाट्य परंपरा एवं पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के मिश्रित रूप में होते हुए भी आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"काठक लोक" नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण का पालन नहीं किया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य परंपरा का पालन किया गया है। इस रूपक नाटक में पश्चिम के यथार्थवाद का निश्चित ही पूर्ण रुपेण प्रभाव है, कारण यथार्थवादी नाटककारों ने नाटक के क्षेत्र राजा, महाराजा तथा राजकुमार तक ही सीमित न मानते हुए बल्कि समस्त संसार नाटक की परिधि में रखा है। इस नाटक में अंक-विधान को नाटककार ने संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के सिद्धयांत के अनुकूल न विभाजित करते हुए एक ही स्थल पर के क्रमशः अलग-अलग दिन-रात की घटना को प्रकाश के अप(बन्द) एवं आन(आरम्भ) के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस नाटक के नायक नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत के अनुकूल धीरोदत्त न होते हुए समाज के निम्न मध्यमवर्गीय पात्र है। वस्तुतः कथानक के आधार पर इस नाटक के मुख्य पात्र साधू है एवं अन्य लक्षण भी संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ

के अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल है। आचार्य भरतमुनि के नाट्य लक्षण ग्रंथ में नाटक रचना के लक्ष्य रस निष्पति को स्वीकार किए है। यह नाटक मुख्यतः हास्य एवं व्यंग्य को केंदित कर लिखा गया है। इस नाटक में रस की निष्पति कथानक के अनुकूल हुई है तथा रस व्यञ्जना से दर्शक को अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अतः इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि मैथिली लोक नाट्य परंपरा एवं पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा का प्रभाव स्पष्टतः दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

“काठक लोक” नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है, कियोंकि दृश्य को अतियथार्थवादी परंपरा के अनुरूप संयोजित किया गया है। इस नाटक में कथानक के अनुकूल ही नाटककार आधुनिक समाज में पूँजीपति द्‌वारा शोषण, विडम्बना, विसंगति, व्यभिचार, मानसिक कुंठा आदि के बीच मानवीय संघर्ष के वास्तविकता को क्रमश: अत्यधिक सुदृढ़ एवं सुसंगठित रूप से संयोजित किया गया है। इस नाटक दृश्य के अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। नाटक का प्रमुख तत्व अभिनय है। अभिनेता रंगमंच पर आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक अभिनय द्‌वारा दर्शक के हृदय में जो आह्लाद उत्पन्न कराने सक्षम होते हैं, वही दृश्य काव्य की प्राण है, जिसको नाटककार ने खुद को चिकित्सक रूप में रखकर मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषित कर संयोजित किया गया है, जो गम्भीर नाट्‌य चिंतन का परिचायक है।

इस नाटक के दृश्यांकन में यथार्थपरक ग्रामीण परिवेश, घटना के विकास में अकृत्रिम सहजता मंच निर्देशक के सटीकता या मंचनीयता कुशलता से समावेश किया गया है एवं अन्य सभी दृष्टिकोण से दृश्य-संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ माना जा सकता है। अत: इस नाटक में दृश्य संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता अनुकूल एवं उत्कृष्ट है, जो अभिनय, अभिनेता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से नाटककार द्‌वारा कुशल दृश्य संयोजन का परिचायक है।

“काठक लोक” नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल, तीक्ष्ण जीवंत, स्वाभाविक एवं पात्रोचित के अनुकूल अति यथार्थवादी भाषा का प्रयोग कर कथोपकथन में बड़े कुशलता से समावेश किये हैं। नाटक में चरित्र-चित्रण का मुख्य अस्त्र संवाद-योजना या कथोपकथन को माना जाता है, जिसमें यह नाटक सबल, तीक्ष्ण एवं सजीव कथोपकथन उपस्थित करता है। इस नाटक के कथोपकथन पूर्णत: गद्‌यात्मक रूप में लिखा गया है। मैथिली नाटक के प्राय: सभी नाटक में गीत की उपस्थिति रहती थी, वहीं इस नाटक में गीत हैं ही नही। इस नाटक के

शब्द संयोजन में भी नाटककार से पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकुल स्वगत भाषण बहिष्कार एवं सामाजिक संघर्ष के वास्तविकता को कथोपकथन के माध्यम से संयोजित किया गया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित, स्वभाविक और सरल है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से होते हुये भी प्रभावकारी हैं।

"काठक लोक" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण कथानुकूल पात्रोचित एवं स्वभावानुकूल चित्रित किया है। इस नाटक में नाटककर ने मुख्य पात्र के साथ ही अन्य पात्र के चरित्र को भी नाटककार ने बड़े कुशलता चित्रित किया हैं। इस नाटक में मुख्य पात्र संज्ञा की चरित्र-चित्रण यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप मनोवैज्ञानिक अध्ययन के साथ ही सामाजिक संघर्ष के उत्थान-पतन के मार्ग को दिग्दर्शित करता है। इस नाटक में चरित्र के चारित्रिक प्रवृति के अनुरूप चित्रण

किया गया है एवं वेष-भूषा और विभिन्न लक्षण आदि भी पात्र के चरित्र के अनुकूल ही चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ स्त्री के चरित्र का अस्थिर एवं पति वियोगनी के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं साधू के चरित्र लम्पट(लफंगा)साधू के एवं अंतत: सच्चे साधू के रूप में चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ दानी बाबू जो समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति है को खलनायक के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं सरदार, जुबली, चन्द्रा एवं फुलबा के चरित्र का चित्रण दानीबाबू के चमचा एवं चोर के रूप में चित्रित किया गया है एवं अन्य सभी पात्र के चरित्र का चित्रण भी प्रसंगानुकूल कुशलता से चित्रित किया गया है। अत: इस नाटक के चरित्र-चित्रण अभिनेयता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से कथानक के प्रसंगानुकूल एवं पत्रोचित है, जो नाटककार के उत्कृष्ट एवं उपयुक्त चरित्र-चित्रण के परिचायक है।

"काठक लोक" नाटक में कुछ के रहते हुए भी मैथिली नाटक के विकास में विशेष महत्व है। यह नाटक चरित्र-चित्रण के विकास, कथोपकथन की स्वाभाविकता

और समाज के राजनीतिक संघर्ष एवं असत्य पर सत्य के विजय के चित्र को चित्रित करने में पूर्णत: सफल है, जो इस नाटक की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। अत: यह नाटक आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के लिए प्रासंगिक ही नहीं बल्कि अग्रणीय प्रसांगिक नाटक में एक है।

"काठक लोक" नाटक के लेखन का उद्देश्य निस्संदेह यह है कि नवयुगीन समाजिक संघर्ष एवं चित्र को चित्रित कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं जागृत करना है, लेकिन इस नाटक का मुख्य उद्देश्य असत्य पर सत्य के विजय को दर्शाना है। अत: नाटककार के इस नाटक लेखन का उद्देश्य में कुत्सित भावना को समाप्त कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं की जागृत कर मैथिल युवा के गौरव का महत्वांकन करना है, जो मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट एवं कुशल नाट्य लेखन के उद्देश्य को सिद्ध करता है।

(173)

"काठक लोक" का आरम्भ और समापन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के नियम का पालन न करते हुए लोक नाट्य परंपरा के अनुरूप किया गया है। यह नाटक जो मंगलश्लोक का निवेश करते हुए भी नट-नटी से लोक नाट्य परंपरा के अनुरूप आरम्भ होती है। इस नाटक का समापन भी संस्कृत नाट्य परंपरा के अनुसार भरतवाक्य से न होते है, लोक नाट्य परंपरा के अनुकूल नट-नटी से किया गया है। अत: इस नाटक के आरम्भ और समापन संस्कृत नाटक के परंपरा अनुकूल पूर्णरूपेण न होते हुए लोक नाट्य परंपरा को आधारित कर नये रीति से लिखा गया है, जो आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं साहित्य से दृष्टिकोण उत्कृष्ट एवं उपयुक्त है।

अंतत: सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि उपयोगिता के दृष्टिकोण, नाटकीयता, कथोपकथन के सरलता-स्वाभाविकता एवं भाषा के अकृत्रिम प्रयोग के दृष्टिकोण से नाटककार महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक "काठक लोक" आधुनिक मैथिली साहित्य

एवं रंगमंच हेतु विशिष्ट उपयुक्त, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है। इस नाटक का कई बार सफल की प्रस्तुति हुई है एवं यह नाटक ग्रामीण रंगमंच हेतु सबसे अत्यधिक सफल एवं प्रस्तुतिपरक नाटक है। अत: नाटककार पं० श्री महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक “जुएल कनकनी” आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अभी भी श्रेष्ठतम, अविस्मरणीय एवं अमूल्य कृति है।

----

12. “गाम नै सुतैए” प्रलेखन एवं विश्लेषण

“गाम नै सुतैए” नाटक नाटककार पं० श्री महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखा गया है। इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से संबन्धित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है, उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 1982 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 1982 ई० है।

“गाम नै सुतैए” नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन पहले धारावाहिक रूप में ‘माटिपानि’ जनवरी 1984 ई० से मई 1984 ई० तक की गई है एवं बाद में सम्पूर्ण नाटक 1993 ई० में प्रकाशित की हुई है। इस नाटक को नाटककार ने पाँच खंडों में विभाजित है। इस नाटक मे कुल पात्र चौदह(14) है, जिसमें स्त्री पात्र एक(1) और पुरुष पात्र तेरह(13) है। नाटककार श्री महेन्द्र मलंगिया मैथिली नाट्य

साहित्य एवं रंगमंच के मध्य अपने विषय को सूक्ष्म निष्पादन हेतु नाट्य लेखन के क्षेत्र में सर्वोपरि एवं अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किये है। यह अपने प्रत्येक नाटक में समाज के कोशकीय स्वरूप तक पहुंचते हैं तथा उसको अपने सूक्ष्म दृष्टि से मनोवैज्ञानिक पद्धति से अवलोकित करते हैं। इनके नाटक का विषय समाज के निम्न वर्ग की स्थिति एवं मन:स्थिति है। इनके नाटक के माध्यम से समाजशास्त्र के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त पर आधारित आज के सामाजिक विकासक्रम तक भी पहुँचा जा सकता है। इनका नाटक लोकधर्मी और समाज के बहुसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। यह नाटक समाज में बेरोजगारी की समस्या तथा उसके प्रतिफल को केंदित कर लिखा गया एक सशक्त सामाजिक नाटक है। इस नाटक के कथानक में मुख्य पात्र के विवशता के साथ ही सामाजिक अत्याचार एवं

उसके के अंतर्दाह एवं पीड़ा को नाटककार ने मार्मिकता चित्रित किया है। इस नाटक के अंत में अंतरंग में निहित रहस्य-जाल को जिस कलात्मक रीति के उद्घाटित किया गया है एवं जिस नाटकीय कौशल से आत्मद्वंद्वात्मक ग्रंथि को खोलकर इसबार प्रतिशोध की भावना को प्रज्वलित किया गया है, वह बहुत ही प्रभावित करता है। यह नाटक एक आधुनिक सामाजिक नाटक है, जो मनुष्य के अवचेतन मन में बैठकर उसके एक-एक उलझन को दिखाना चाहता है। इस नाटक के कथानक अत्यन्त सुसंगठित एवं अतियथार्थवादी है। अत: इस नाटक के नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के अनुरूप नाटक होते हुए भी आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"गाम नै सुतैए" नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण का पालन नहीं किया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य परंपरा का पालन किया गया है। इस रूपक नाटक में पश्चिम के यथार्थवाद का निश्चित ही पूर्ण रुपेण प्रभाव है, कारण यथार्थवादी नाटककारों ने नाटक के क्षेत्र राजा, महाराजा तथा राजकुमार तक ही सीमित न मानते हुए बल्कि समस्त संसार नाटक की परिधि में रखा है। इस नाटक में अंक-विधान को नाटककार ने संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के सिद्धयांत के अनुकूल न विभाजित करते हुए नाटककार ने पाँच खण्ड में विभाजित किया है। इस नाटक के नायक नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत के अनुकूल धीरोदत्त न होते हुए समाज के निम्न मध्यमवर्गीय पात्र है। वस्तुत: कथानक के आधार पर इस नाटक के मुख्य पात्र समाज के युवा वर्ग है एवं अन्य लक्षण भी संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल है। आचार्य भरतमुनि के नाट्य लक्षण ग्रंथ में नाटक रचना के लक्ष्य रस निष्पति को

स्वीकार किए है। इस नाटक में रस की निष्पति कथानक के अनुकूल हुई है, तथा रस व्यञ्जना से दर्शक को अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत:

दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"गाम नै सुतैए" नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है, कियोंकि दृश्य को अतियथार्थवादी परंपरा के अनुरूप संयोजित किया गया है। इस नाटक में कथानक के अनुकूल ही नाटककार समाज में बेरोजगारी समस्या के फलस्वरूप सामाजिक विडम्बना, विसंगति, मानसिक कुंठा आदि के बीच मानवीय संघर्ष के वास्तविकता को क्रमश: पाँचों खण्ड के माध्यम से अत्यधिक सुदृढ़ एवं सुसंगठित रूप से संयोजित किया गया है। इस नाटक दृश्य के अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। नाटक का प्रमुख तत्व अभिनय है। अभिनेता रंगमंच पर आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक अभिनय द्वारा दर्शक के ह्रदय में जो आह्लाद उत्पन्न कराने सक्षम होते हैं, वही दृश्य काव्य की प्राण है, जिसको नाटककार ने खुद को चिकित्सक रूप में रखकर मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषित कर संयोजित किया गया है, जो गम्भीर नाट्य चिंतन का परिचायक है। इस नाटक के दृश्यांकन में यथार्थपरक ग्रामीण परिवेश, घटना के विकास में अकृत्रिम सहजता मंच निर्देशक के सटीकता या मंचनीयता

कुशलता से समावेश किया गया है एवं अन्य सभी दृष्टिकोण से दृश्य-संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ माना जा सकता है। अत: इस नाटक में दृश्य संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता अनुकूल एवं उत्कृष्ट है, जो अभिनय, अभिनेता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से नाटककार द्वारा कुशल दृश्य संयोजन का परिचायक है।

"गाम नै सुतैए" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल, तीक्ष्ण जीवंत, स्वाभाविक एवं पात्रोचित के अनुकूल अति यथार्थवादी भाषा का प्रयोग कर कथोपकथन में बड़े कुशलता से समावेश किये हैं। नाटक में चरित्र-चित्रण का मुख्य अस्त्र संवाद-योजना या कथोपकथन को माना जाता है, जिसमें यह नाटक सबल,

तीक्ष्ण एवं सजीव कथोपकथन उपस्थित करता है। इस नाटक के कथोपकथन पूर्णत: गद्यात्मक रूप में लिखा गया है। मैथिली नाटक के प्राय: सभी नाटक में गीत की उपस्थिति रहती थी, वहीं इस नाटक में गीत हैं ही नही। इस नाटक के शब्द संयोजन में भी नाटककार से पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकुल स्वगत भाषण बहिष्कार एवं सामाजिक संघर्ष के वास्तविकता को कथोपकथन के माध्यम से संयोजित किया गया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित, स्वभाविक और सरल है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से होते हुये भी प्रभावकारी हैं।

"गाम नै सुतैए" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण कथानुकूल पात्रोचित एवं स्वभावानुकूल चित्रित किया है। इस नाटक में नाटककर ने मुख्य पात्र के साथ ही अन्य पात्र के चरित्र को भी नाटककार ने बड़े कुशलता चित्रित किया हैं। इस नाटक में मुख्य पात्र के चरित्र-चित्रण यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप मनोवैज्ञानिक अध्ययन के साथ ही सामाजिक संघर्ष के उत्थान-पतन के मार्ग को दिग्दर्शित करता है। इस नाटक में चरित्र के चारित्रिक प्रवृति के अनुरूप चित्रण किया गया है, एवं वेष-भूषा और विभिन्न लक्षण आदि भी पात्र के चरित्र के अनुकूल ही चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ संज्ञा के चरित्र का अस्थिर एवं चंचल युवा के

रूप में चित्रित किया गया है, वहीं बैजू के चरित्र लम्पट(लफंगा), विलासी, विवेकहीन एवं स्वार्थी पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ पुष्पा के चरित्र का चित्रण सहिष्णु, संतोषी और स्वाभिमानी मैथिल कन्या के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं लिली के चरित्र को नवयुगीन मैथिल कन्या के रूप में चित्रित किया गया है एवं अन्य सभी पात्र के चरित्र का चित्रण भी प्रसंगानुकूल कुशलता से चित्रित किया गया है। अत: इस नाटक के चरित्र-चित्रण अभिनेयता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से कथानक के प्रसंगानुकूल एवं पत्रोचित है, जो नाटककार के उत्कृष्ट एवं उपयुक्त चरित्र-चित्रण के परिचायक है।

"गाम नै सुतैए" नाटक में कुछ के रहते हुए भी मैथिली नाटक के विकास में विशेष महत्व है। यह नाटक चरित्र-चित्रण के विकास, कथोपकथन की स्वाभाविकता और निम्नवर्गीय समाज के पारिवारिक की स्त्री उत्पीड़न के संघर्ष के को चित्रित करने में पूर्णत: सफल है, जो इस नाटक की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। अत: यह नाटक आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के लिए प्रासंगिक ही नहीं बल्कि अग्रणीय प्रसांगिक नाटक में एक है।

"गाम नै सुतैए" नाटक के लेखन का उद्देश्य निस्संदेह यह है कि समाजिक बेरोजगारी की समस्या एवं संघर्ष को चित्रित कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं जागृत करना है, लेकिन इस नाटक का मुख्य उद्देश्य की समाज को बेरोजगारी की समस्या एवं संघर्ष के माध्यम से जागृत कर युवा वर्ग एवं समाज के स्थिति का महत्वांकन करना है। अत: नाटककार के इस नाटक लेखन का उद्देश्य में कुत्सित भावना को समाप्त कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं समाज को बेरोजगारी की समस्या एवं संघर्ष के माध्यम से जागृत कर युवा वर्ग एवं समाज के स्थिति का महत्वांकन करना है, जो मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट एवं कुशल नाट्य लेखन के उद्देश्य को सिद्ध करता है।

"गाम नै सुतैए" नाटक का आरम्भ और समापन में संस्कृत नाट्य लक्षणग्रंथ

के नियम का पालन न करते हुए पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप किया गया है। यह नाटक नट-नटी, सूत्रधार के आरम्भिक प्रस्तावना-दृश्य एवं पं० श्री गोविन्द झा तथा श्री ईशनाथ झा के नाटक में जो मंगलश्लोक का निवेश हैं, इन सभी को वहिष्कार करते हुए यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप ही आरम्भ होती है। इस नाटक का समापन भी संस्कृत नाट्य परंपरा के अनुसार भरतवाक्य से न होते है, नये रीति से किया गया है। अत: इस नाटक के आरम्भ और समापन संस्कृत नाटक के परंपरा अनुकूल पूर्णरूपेण न होते हुए आधुनिक नाट्य

परंपरा को आधारित कर नये रीति से लिखा गया है, जो आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं साहित्य से दृष्टिकोण उपयुक्त है।

अंतत: सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि उपयोगिता के दृष्टिकोण, नाटकीयता, कथोपकथन के सरलता-स्वाभाविकता एवं भाषा के अकृत्रिम प्रयोग के दृष्टिकोण से नाटककार महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक "गाम नै सुतैए" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु विशिष्ट उपयुक्त, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है। इस नाटक का कई बार सफल की प्रस्तुति हुई है। अत: नाटककार पं० श्री महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक "जुएल कनकनी" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अभी भी श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है।

----

13. "ओरिजनल काम" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"ओरिजनल काम" नाटक नाटककार श्री महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखा गया है। नाटककार श्री महेंद्र इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबधित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल

को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है, उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 2000 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 2000 ई० है।

"ओरिजनल काम" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन, गंगा प्रकाशन, लोहना (जनकपुर धाम) द्वारा 2000 ई० में प्रकाशित की गई है। नाटककार ने इस नाटक को दो(2) अंक एवं बीस(20) दृश्य में विभाजित किया है। इस नाटक मे कुल बारह(12) पात्र है, जिसमें स्त्री पात्र एक(1) और पुरुष पात्र एग्यारह(11) है। नाटककार श्री महेन्द्र मलंगिया मैथिली नाट्य साहित्य एवं रंगमंच के मध्य अपने विषय को सूक्ष्म निष्पादन हेतु नाट्य लेखन के क्षेत्र में सर्वोपरि एवं अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किये है। यह अपने प्रत्येक नाटक में समाज के कोशकीय स्वरूप तक पहुंचते हैं, तथा उसको अपने सूक्ष्म दृष्टि से मनोवैज्ञानिक पद्धति से अवलोकित करते हैं। इनके नाटक का विषय समाज के निम्न वर्ग की स्थिति एवं मन:स्थिति है। इनके नाटक के माध्यम से समाजशास्त्र के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त पर आधारित आज के सामाजिक विकासक्रम तक भी पहुँचा जा सकता है। इनका नाटक लोकधर्मी और समाज के बहुसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। यह नाटक मैथिली समाज के निम्न मध्यम वर्गीय परिवार के दुर्भावना, विभ्रांति एवं शारीरिक-मानसिक उत्पीड़न के अंतर्द्वंद तथा उसके प्रतिफल को केंदित कर लिखा गया है। इस नाटक के कथानक में मुख्य पात्र कम्पनी के

माध्यम से निम्न मध्यम वर्गीय पारिवारिक समस्या संघर्ष एवं विवशता के साथ ही अंतर्दाह, पीड़ा आदि को नाटककार ने मार्मिकता चित्रित किया है। इस नाटक के अंत में कंपनी के अंतरंग में निहित रहस्य-जाल को जिस कलात्मक रीति के उद्घाटित किया गया है एवं जिस नाटकीय कौशल से कंपनी के आत्मद्वंद्वात्मक ग्रंथि को खोलकर पारिवारिक स्नेह की भावना को प्रज्वलित किया गया है, वह

बहुत ही प्रभावित करता है। यह नाटक एक आधुनिक सामाजिक नाटक है जो मनुष्य के अवचेतन मन में बैठकर उसके एक-एक उलझन को दिखाना चाहता है। इस नाटक के कथानक अत्यन्त सुसंगठित एवं अतियथार्थवादी है। अत: इस नाटक के नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के अनुरूप नाटक होते हुए भी आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"ओरिजनल काम" नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण का पालन नहीं किया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य परंपरा का पालन किया गया है। इस रूपक नाटक में पश्चिम के यथार्थवाद का निश्चित ही पूर्ण रुपेण प्रभाव है, कारण यथार्थवादी नाटककारों ने नाटक के क्षेत्र राजा, महाराजा तथा राजकुमार तक ही सीमित न मानते हुए बल्कि समस्त संसार नाटक की परिधि में रखा है। इस नाटक में अंक-विधान को नाटककार ने संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के सिद्धयांत के अनुकूल न विभाजित करते हुए केवल दो भाग में विभाजित किया है। इस नाटक के नायक नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत के अनुकूल धीरोदत्त न होते हुए समाज के निम्न मध्यमवर्गीय पात्र है। वस्तुत: कथानक के आधार पर इस नाटक के मुख्य पात्र नायिका संज्ञा है एवं अन्य लक्षण भी संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल है। आचार्य भरतमुनि के नाट्य लक्षण ग्रंथ में नाटक रचना के लक्ष्य रस निष्पति को स्वीकार किए है। इस नाटक में रस की निष्पति कथानक के अनुकूल हुई है, तथा रस व्यञ्जना से दर्शक

को अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं

रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत: दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"ओरिजनल काम" नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है, कियोंकि दृश्य को अतियथार्थवादी परंपरा के अनुरूप संयोजित किया गया है। इस नाटक में कथानक के अनुकूल ही नाटककार निम्न मध्यमवर्गीय पारिवारिक विडम्बना, विसंगति, व्यभिचार, मानसिक कुंठा आदि के बीच मानवीय संघर्ष के वास्तविकता को क्रमश: दोनों भाग दृश्यांकन के माध्यम से अत्यधिक सुदृढ़ एवं सुसंगठित रूप से संयोजित किया गया है। इस नाटक दृश्य के अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। नाटक का प्रमुख तत्व अभिनय है। अभिनेता रंगमंच पर आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक अभिनय द्वारा दर्शक के हृदय में जो आह्लाद उत्पन्न कराने सक्षम होते हैं, वही दृश्य काव्य की प्राण है, जिसको नाटककार ने खुद को चिकित्सक रूप में रखकर मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषित कर संयोजित किया गया है, जो गम्भीर नाट्य चिंतन का परिचायक है। इस नाटक के दृश्यांकन में यथार्थपरक ग्रामीण परिवेश, घटना के विकास में अकृत्रिम सहजता मंच निर्देशक के सटीकता या मंचनीयता कुशलता से समावेश किया गया है एवं अन्य सभी दृष्टिकोण से दृश्य-संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ माना जा सकता है। अत: इस नाटक में दृश्य संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता अनुकूल एवं उत्कृष्ट

है, जो अभिनय, अभिनेता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से नाटककार द्वारा कुशल दृश्य संयोजन का परिचायक है।

"ओरिजनल काम" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल, तीक्ष्ण जीवंत, स्वाभाविक एवं पात्रोचित के अनुकूल अति यथार्थवादी भाषा का प्रयोग कर

कथोपकथन में बड़े कुशलता से समावेश किये हैं। नाटक में चरित्र-चित्रण का मुख्य अस्त्र संवाद- योजना या कथोपकथन को माना जाता है, जिसमें यह नाटक सबल, तीक्ष्ण एवं सजीव कथोपकथन उपस्थित करता है। इस नाटक के कथोपकथन पूर्णत: गद्यात्मक रूप में लिखा गया है। मैथिली नाटक के प्राय: सभी नाटक में गीत की उपस्थिति रहती थी, वहीं इस नाटक में गीत हैं ही नही। इस नाटक के शब्द संयोजन में भी नाटककार से पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकुल स्वगत भाषण बहिष्कार एवं सामाजिक संघर्ष के वास्तविकता को कथोपकथन के माध्यम से संयोजित किया गया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित, स्वभाविक और सरल है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से होते हुये भी प्रभावकारी हैं।

"ओरिजनल काम" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण कथानुकूल पात्रोचित एवं स्वभावानुकूल चित्रित किया है। इस नाटक में नाटककर ने मुख्य पात्र के साथ ही अन्य पात्र के चरित्र को भी नाटककार ने बड़े कुशलता चित्रित किया हैं। इस नाटक में मुख्य पात्र संज्ञा की चरित्र-चित्रण यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप मनोवैज्ञानिक अध्ययन के साथ ही सामाजिक संघर्ष के उत्थान-पतन के मार्ग को दिग्दर्शित करता है। इस नाटक में चरित्र के चारित्रिक प्रवृति के अनुरूप चित्रण किया गया है एवं वेष-भूषा और विभिन्न लक्षण आदि भी पात्र के चरित्र के अनुकूल ही चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ स्त्री के चरित्र का अस्थिर एवं निम्न वर्गीय मैथिल नारी के रूप में चित्रित किया गया है, मुख्य पात्र कम्पनी के चरित्र निम्न वर्गीय विवेकहीन एवं स्वार्थी पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है एवं उचितलाल, शिवलाल एवं जीवलाल के चरित्र का चित्रण निम्न मध्यम वर्गीय

अधूरा ज्ञान वाला युवा एवं नवयुवा के रूप में चित्रित किया गया है। इस नाटक में अन्य सभी पात्र सफीक, दारोगा, खूबलाल, भगता, गुरु, चन्द्रकान्त के चरित्र का चित्रण भी प्रसंगानुकूल कुशलता से चित्रित किया गया है। अत: इस नाटक के चरित्र-चित्रण अभिनेयता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से कथानक के

प्रसंगानुकूल एवं पत्रोचित है, जो नाटककार के उत्कृष्ट एवं उपयुक्त चरित्र-चित्रण के परिचायक है।

"ओरिजनल काम" नाटक में कुछ के रहते हुए भी मैथिली नाटक के विकास में विशेष महत्व है। यह नाटक चरित्र-चित्रण के विकास, कथोपकथन की स्वाभाविकता और आधुनिक पूंजीवाद युग में निम्न मध्यम वर्गीय पारिवारिक के संघर्ष को चित्रित करने में पूर्णत: सफल है, जो इस नाटक की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। अत: यह नाटक आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के लिए प्रासंगिक ही नहीं बल्कि अग्रणीय प्रसांगिक नाटक में एक है।

"ओरिजनल काम" नाटक के लेखन का उद्देश्य निस्संदेह यह है कि आधुनिक पूंजीवाद युग में निम्न मध्यम वर्ग के पारिवारिक के बीच अज्ञानता के कारण आपसी कलह एवं उसके फलस्वरूप संघर्ष को चित्रित कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं जागृत करना है, लेकिन इस नाटक का मुख्य उद्देश्य आधुनिक पूंजीवाद युग में निम्न मध्यम वर्ग के पारिवारिक समस्या के माध्यम आधुनिक समाज को जागृत कर करना है। अत: नाटककार के इस नाटक लेखन का उद्देश्य में कुत्सित भावना को समाप्त कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं आधुनिक समाज को जागृत करना है, जो मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट एवं कुशल नाट्य लेखन के उद्देश्य को सिद्ध करता है।

"ओरिजनल काम" का आरम्भ और समापन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के नियम का पालन न करते हुए पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप किया गया है। यह नाटक नट-नटी, सूत्रधार के आरम्भिक प्रस्तावना-दृश्य एवं पं० श्री

गोविन्द झा तथा श्री ईशनाथ झा के नाटक में जो मंगलश्लोक का निवेश हैं, इन सभी को वहिष्कार करते हुए यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप ही आरम्भ होती है । इस नाटक का समापन भी संस्कृत नाट्य परंपरा के अनुसार भरतवाक्य से न होते है, यथार्थवादी परंपरा से किया गया है। अत: इस नाटक के आरम्भ और

समापन संस्कृत नाटक के परंपरा अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा को आधारित कर लिखा गया है, जो आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं साहित्य से दृष्टिकोण उत्कृष्ट एवं उपयुक्त है।

अंतत: सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि उपयोगिता के दृष्टिकोण, नाटकीयता, कथोपकथन के सरलता-स्वाभाविकता एवं भाषा के अकृत्रिम प्रयोग के दृष्टिकोण से नाटककार महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक "ओरिजनल काम" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु विशिष्ट उपयुक्त, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है । इस नाटक का कई बार सफल की प्रस्तुति हुई है। अत: नाटककार पं॰ श्री महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक "ओरिजनल काम" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु श्रेष्ठतम, अविस्मरणीय एवं मूल्यवान कृति है।

----

14. "छुतहा घैल" प्रलेखन एवं विश्लेषण

"छुतहा घैल" नाटक नाटककार पं० श्री महेन्द्र मलांगिया द्वारा लिखा गया है। इस नाटक काल को लेकर स्पष्टत: जानकारी उपलब्ध है। आधुनिक मैथिली नाटक से समबधित विभिन्न नाट्य साहित्य में लेखन काल को लेकर जो जानकारी उपलब्ध है, उसके अनुसार इस नाटक का लेखन काल 2008 ई० है। अत: इस नाटक का लेखन काल 2008 ई० है।

"छुतहा घैल" नाटक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन गंगा प्रकाशन, लोहना (जनकपुर धाम) द्वारा 2010 ई० में प्रकाशित की गई है। नाटककार ने इस नाटक को अंकों में न विभाजित करके केवल दृश्यों की संख्या सत्तरह(17) है। इस नाटक मे कुल पात्र पंद्रह(15) है, जिसमें स्त्री पात्र चार(4) और पुरुष पात्र एग्यारह(11) है। नाटककार श्री महेन्द्र मलंगिया मैथिली नाट्य साहित्य एवं रंगमंच के मध्य अपने विषय को सूक्ष्म निष्पादन हेतु नाट्य लेखन के क्षेत्र में सर्वोपरि एवं अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किये है। यह अपने प्रत्येक नाटक में समाज के कोशकीय स्वरूप तक पहुंचते हैं तथा उसको अपने सूक्ष्म दृष्टि से मनोवैज्ञानिक पद्धति से अवलोकित करते हैं। इनके नाटक का विषय समाज के निम्न वर्ग की स्थिति एवं मन:स्थिति है। इनके नाटक के माध्यम से समाजशास्त्र के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त पर आधारित आज के सामाजिक विकासक्रम तक भी पहुँचा जा सकता है। इनका नाटक लोकधर्मी और समाज के बहुसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। यह नाटक मैथिली समाज में नारी के ग्रामीण परिवेश एवं स्थिति को ऐतिहासिक पात्र गोनू झा के माध्यम से नारी के प्रति दुर्भावना, विभ्रांति एवं मानसिक उत्पीड़न के अंतर्द्वंद तथा उसके प्रतिफल को केंदित कर लिखा गया है।

इस नाटक के कथानक में मुख्य पात्र गोनू झा द्वारा सामाजिक एवं राजनीतिक परिदृश्य तथा स्थिति को नाटककार ने मार्मिकता चित्रित किया है। इस नाटक के

अंत में गोनू झा द्वारा अंतरंग में निहित रहस्य-जाल को जिस कलात्मक रीति के उद्घाटित किया गया है, एवं जिस नाटकीय कौशल से सामाजिक आत्मद्वंद्वात्मक ग्रंथि को खोलकर भावना को प्रज्वलित किया गया है, वह बहुत ही प्रभावित करता है। यह नाटक एक आधुनिक सामाजिक नाटक है, जो मनुष्य के अवचेतन मन में बैठकर उसके एक-एक उलझन को दिखाना चाहता है। इस नाटक के कथानक में समाज में स्त्री की स्थिति 'छुतहा घैल'(अनुपयोगी मटका) के रूप में अत्यन्त सुसंगठित एवं अतियथार्थवादी तरीके से किया गया है। अत: इस नाटक के नामांकरण, कथानक के अनुसार अनुकूल एवं उपयुक्त है एवं पाश्चात्य नाट्य-परंपरा के अनुरूप नाटक न होते हुए मैथिली लोक नाट्य शैली को समावेश करते हुए लिखा गया है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"छुतहा घैल" नाटक में नाटककार ने संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण का पालन नहीं किया है, बल्कि मैथिली लोक नाट्य शैली एवं पाश्चात्य नाट्य परंपरा दोनों के मिश्रित रूप को समावेश कर लिखा गया है। इस रूपक नाटक में पश्चिम के यथार्थवाद का निश्चित ही प्रभाव है, कारण यथार्थवादी नाटककारों ने नाटक के क्षेत्र राजा, महाराजा तथा राजकुमार तक ही सीमित न मानते हुए बल्कि समस्त संसार नाटक की परिधि में रखा है। इस नाटक में अंक-विधान को नाटककार ने संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के सिद्धयांत के अनुकूल न विभाजित करते हुए केवल दो भाग में विभाजित किया है। इस नाटक के नायक नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ सिद्धयांत के अनुकूल धीरोदत्त न होते हुए समाज के निम्न मध्यमवर्गीय पात्र है। वस्तुत: कथानक के आधार पर इस नाटक के मुख्य पात्र नायिका संज्ञा है एवं

अन्य लक्षण भी संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के अनुकूल न होते हुए पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकूल है। आचार्य भरतमुनि के नाट्य लक्षण ग्रंथ में नाटक रचना के

लक्ष्य रस निष्पति को स्वीकार किए है। इस नाटक में रस की निष्पति कथानक के अनुकूल हुई है, तथा रस व्यञ्जना से दर्शक को अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है। इस नाटक में रस के प्रसंगानुकूल वर्णन से नाटकीय चमत्कार के साथ-साथ ही सहृदय दर्शक के चित्त में जो साधारणीकरण की अनुभूति होती है, उसको सहजता से समझा जा सकता है। इस नाटक में भाव, व्यंजकता एवं रोचकता का कुशलता से समावेश किया गया है, जो प्रस्तुति दृष्टिकोण से उत्कृष्ट माना जा सकता है। प्राचीन रूढ़िवादी परंपरा के नहीं रहते हुए भी नाटक का मुख्य गुण है अभिनेयता जिससे यह नाटक संयुक्त है। अत: इस नाटक में संस्कृत नाट्य रूपक लक्षण ग्रंथ को पालन नहीं किया गया है, बल्कि लोक नाट्य परंपरा एवं पाश्चात्य नाट्य लक्षण ग्रंथ का प्रभाव स्पष्टत: दिग्दर्शित होता है, जो आधुनिक रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से उपयुक्त एवं उत्कृष्ट है।

"छुतहा घैल" नाटक के दृश्य-संयोजन को सर्वथा अभिनव माना जा सकता है, कियोंकि दृश्य को अतियथार्थवादी परंपरा के अनुरूप संयोजित किया गया है। इस नाटक में कथानक के अनुकूल ही नाटककार मैथिली समाज में नारी की स्थिति एवं संघर्ष के वास्तविकता को क्रमश: सभी दृश्यों के माध्यम से अत्यधिक सुदृढ़ एवं सुसंगठित रूप से संयोजित किया गया है। इस नाटक दृश्य के अंतर संबंध एवं सामंजस्ता को नाटककार ने कुशलता से निर्वाह किया है। नाटक का प्रमुख तत्व अभिनय है। अभिनेता रंगमंच पर आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक अभिनय द्वारा दर्शक के ह्रदय में जो आह्लाद उत्पन्न कराने सक्षम होते हैं, वही दृश्य काव्य की प्राण है, जिसको नाटककार ने खुद को चिकित्सक रूप में रखकर मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषित कर संयोजित किया गया है, जो गम्भीर नाट्य चिंतन का परिचायक है। इस नाटक के दृश्यांकन में यथार्थपरक ग्रामीण परिवेश, घटना के विकास में अकृत्रिम सहजता मंच निर्देशक के सटीकता या मंचनीयता

कुशलता से समावेश किया गया है एवं अन्य सभी दृष्टिकोण से दृश्य-संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता उपयुक्त एवं उत्कृष्ठ माना जा सकता है। अत: इस

नाटक में दृश्य संयोजन, अंतर संबंध एवं सामंजस्ता अनुकूल एवं उत्कृष्ट है, जो अभिनय, अभिनेता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से नाटककार द्वारा कुशल दृश्य संयोजन का परिचायक है।

"छुतहा घैल" नाटक के शब्द-संयोजन में नाटककार ने सरल, तीक्ष्ण जीवंत, स्वाभाविक एवं पात्रोचित के अनुकूल अति यथार्थवादी भाषा का प्रयोग कर कथोपकथन में बड़े कुशलता से समावेश किये हैं। नाटक में चरित्र-चित्रण का मुख्य अस्त्र संवाद-योजना या कथोपकथन को माना जाता है, जिसमें यह नाटक सबल, तीक्ष्ण एवं सजीव कथोपकथन उपस्थित करता है। इस नाटक के कथोपकथन पूर्णत: गद्यात्मक रूप में लिखा गया है। मैथिली नाटक के प्राय: सभी नाटक में गीत की उपस्थिति रहती थी, वहीं इस नाटक में गीत हैं ही नही। इस नाटक के शब्द संयोजन में भी नाटककार से पाश्चात्य नाट्य परंपरा के अनुकुल स्वगत भाषण बहिष्कार एवं सामाजिक संघर्ष के वास्तविकता को कथोपकथन के माध्यम से संयोजित किया गया है। अत: इस नाटक का शब्द-संयोजन पात्रोचित, स्वभाविक और सरल है, जो आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से होते हुये भी प्रभावकारी हैं।

"छुतहा घैल" नाटक में नाटककार ने चरित्र-चित्रण कथानुकूल पात्रोचित एवं स्वभावानुकूल चित्रित किया है। इस नाटक में नाटककर ने मुख्य पात्र के साथ ही अन्य पात्र के चरित्र को भी नाटककार ने बड़े कुशलता चित्रित किया हैं। इस नाटक में मुख्य पात्र गोनू झा के चरित्र-चित्रण यथार्थवादी नाट्य परंपरा के अनुरूप मनोवैज्ञानिक अध्ययन के साथ ही सामाजिक संघर्ष के उत्थान-पतन के मार्ग को दिग्दर्शित करता है। इस नाटक में चरित्र के चारित्रिक प्रवृति के अनुरूप चित्रण किया गया है एवं वेष-भूषा और विभिन्न लक्षण आदि भी पात्र के चरित्र के अनुकूल ही चित्रित किया गया है। इस नाटक में जहाँ बेपारी के चरित्र का अस्थिर

एवं चंचल पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। स्त्री के चरित्र का चित्रण लाचार मैथिल स्त्री के रूप में एवं अन्य सभी पात्र के चरित्र का चित्रण भी प्रसंगानुकूल कुशलता से चित्रित किया गया है। अत: इस नाटक के चरित्र-चित्रण अभिनेयता, रंगमंच एवं साहित्य के दृष्टिकोण से कथानक के प्रसंगानुकूल एवं पत्रोचित है, जो नाटककार के उत्कृष्ट एवं उपयुक्त चरित्र-चित्रण के परिचायक है।

"छुतहा घैल" नाटक में कुछ के रहते हुए भी मैथिली नाटक के विकास में विशेष महत्व है। यह नाटक चरित्र-चित्रण के विकास, कथोपकथन की स्वाभाविकता और निम्नवर्गीय समाज के पारिवारिक की स्त्री उत्पीड़न के संघर्ष के को चित्रित करने में पूर्णत: सफल है, जो इस नाटक की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। अत: यह नाटक आधुनिक साहित्य एवं रंगमंच के लिए प्रासंगिक ही नहीं बल्कि अग्रणीय प्रसांगिक नाटक में एक है।

"छुतहा घैल" नाटक के लेखन का उद्देश्य निस्संदेह यह है कि नवयुगीन समाजिक में भी नारी की स्थिति एवं संघर्ष को चित्रित कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं जागृत करना है, लेकिन इस नाटक का मुख्य उद्देश्य नारी की जागृत कर मैथिल नारी के गौरव का महत्वांकन करना है। अत: नाटककार के इस नाटक लेखन का उद्देश्य में कुत्सित भावना को समाप्त कर लोगों के हृदय को उदात्त बनाना एवं की जागृत कर मैथिल नारी के गौरव का महत्वांकन करना है, जो मैथिली साहित्य एवं रंगमंच के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट एवं कुशल नाट्य लेखन के उद्देश्य को सिद्ध करता है।

"छुतहा घैल" नाटक का आरम्भ और समापन में संस्कृत नाट्य लक्षण ग्रंथ के नियम का पालन न करते हुए लोक नाट्य शैली एवं पाश्चात्य यथार्थवादी नाट्य परंपरा के मिश्रित रुप को समावेश कर किया गया है। यह नाटक नट-नटी से मैथिली लोक नाट्य शैली के अनुरूप आरम्भ होती है, एवं समापन भी इसी रीति से किया गया है। अत: इस नाटक के आरम्भ और समापन संस्कृत नाटक के

परंपरा अनुकूल पूर्णरूपेण न होते हुए लोक नाट्य शैली एवं आधुनिक नाट्य परंपरा को आधारित कर नये रीति से लिखा गया है, जो आधुनिक मैथिली रंगमंच एवं साहित्य से दृष्टिकोण उपयुक्त है।

अंतत: सामाजिक कथ्य के आधुनिक मैथिली नाटक शोध-अध्ययन से स्पष्टत: ज्ञात होता है, कि उपयोगिता के दृष्टिकोण, नाटकीयता, कथोपकथन के सरलता-स्वाभाविकता एवं भाषा के अकृत्रिम प्रयोग के दृष्टिकोण से नाटककार महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक "छुतहा घैल" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु विशिष्ट उपयुक्त, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है। इस नाटक का कई बार सफल की प्रस्तुति हुई है। अत: नाटककार पं० श्री महेन्द्र मलंगिया द्वारा लिखित नाटक "छुतहा घैल" आधुनिक मैथिली साहित्य एवं रंगमंच हेतु अभी भी श्रेष्ठ एवं मूल्यवान कृति है।

संदर्भ ग्रंथ

मैथिली नाटक का उदभव और विकास - डॉ० लेखनाथ मिश्र

मैथिली नाटकक परिचय - डॉ० प्रेम शंकर मिश्र

मैथिली नाटक का विकास सम्पादक - देवकान्त झा, दिनेश कुमार झा

मैथिली साहित्य का इतिहास - जयकान्त मिश्र

मैथिली नाटक में चरित्र सृष्टि - इन्दिरा झा

मैथिली नाटकक विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण - महेन्द्र मलंगिया

मैथिली साहित्यक इतिहास - श्री बाल गोविन्द झा

क्रिटिकल हिस्ट्री आफ मैथिली लिट्रेचर - डॉ० डी० एन० झा

आधुनिक मैथिली रंगमंच अतीत, वर्तमान ओ भविष्य सम्पादक - श्री चन्द्र नाथ मिश्र "अमर"

मैथिली साहित्य का इतिहास - डॉ० डी० एन० झा

आधुनिक मैथिली नाटकक पहिल शताब्दी - चेतना समिति से प्रकाशित

लोकायन - डॉ० ओमप्रकाश भारती

महेन्द्र मलंगियाक सात नाटक - डॉ० डॉ० प्रकाश झा